नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 03, अंक 309, नई दिल्ली, बुधवार 08 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता के लिए पाँच आवश्यक उद्यमशीलता कौशल : एकाग्रता, भेदभाव, संगठन, नवाचार और संचार।

03 शनि की दृष्टि...

06 शिक्षक: हमारे समाज को आकार देने वाले अज्ञात मूर्तिकार

08 डॉ. राज कुमार की डॉ. सत्य नारायण जटिया से भेंट राजनीतिक व सामाजिक मुद्दों पर हुई चर्चा

जनता की PIL — ई-रिक्शा सुधार के लिए कानूनी हथियार

लेखक: संजय कुमार बाठला

सर्वोच्च न्यायालय का 1 लाख TSR कैप (W.P.(C) 13029/2009) ई-रिक्शा पर भी लागू है, जबकि दिल्ली EV नीति 2026 में EV प्रोत्साहन का वादा।

यह विरोधाभास संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता) का उल्लंघन है।

जनता मिलकर PIL दाखिल कर सुधार ला सकती है।

PIL मसौदा मुख्य बिंदु:

मुद्दा - PIL मांग - कानूनी आधार

1. मुद्दा एक DL पर कई ई-रिक्शा - PIL मांग सिंगल-व्हीकल लिंकिंग - कानूनी आधार MV Rules 127(1A)
2. मुद्दा सब्सिडी देरी - PIL मांग 90 दिनों में भुगतान - कानूनी आधार Art 14, EV Policy 2020
3. मुद्दा 1 लाख कैप - PIL मांग EV को छूट - कानूनी आधार S.O. 2812(E), 2016
4. मुद्दा 236 सड़क प्रतिबंध - PIL मांग ज़ोन-आधारित अनुमति - कानूनी आधार HC आदेश 31.07.2014

सत्यानारायण जटिया के साथ डॉ राजकुमार

डॉ. राज कुमार की डॉ. सत्य नारायण जटिया से भेंट राजनीतिक व सामाजिक मुद्दों पर हुई चर्चा

भाजपा के वरिष्ठ नेता से मार्गदर्शन संग मिला आशीर्वाद

राउरकेला: ओडिशा के युवा नेता और समाजसेवी डॉ. राज कुमार यादव ने भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता, पूर्व केंद्रीय कैबिनेट मंत्री एवं भाजपा संसदीय बोर्ड तथा केंद्रीय चुनाव समिति के सदस्य डॉ. सत्यनारायण जटिया से नई दिल्ली स्थित उनके आवास पर शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर दोनों नेताओं ने देश की वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों, सामाजिक सरोकारों और युवाओं की भूमिका पर सार्थक चर्चा की। डॉ. यादव ने ओडिशा में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी और कहा कि युवाओं की सक्रिय भागीदारी से समाज और राष्ट्र के विकास को नई दिशा दी जा सकती है। सत्यनारायण जटिया ने डॉ. यादव के सामाजिक कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि आज देश को निष्ठावान और कर्मठ युवाओं की अत्यंत आवश्यकता है। उन्होंने जनसेवा और विकास योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने पर जोर दिया। मुलाकात सौहार्दपूर्ण माहौल में संपन्न हुई। अंत में डॉ. यादव ने जटिया जी का मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त कर आभार व्यक्त किया और कहा कि वरिष्ठ

ग्रामीण सेवा वाहनों की पुकार: न्यायपूर्ण नीति और अनुशासित यातायात की माँग

लेखक: संजय कुमार बाठला
मुख्य संपादक, परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक

दिल्ली की अंतिम मील कनेक्टिविटी संभाल रहे 6000 ग्रामीण सेवा वाहनों पर जुर्मानों, अव्यवस्थित ई-रिक्शा संचालन और अधूरी ईवी अवसंरचना का तिगुना दबाव

ग्रामीण सेवा: दिल्ली की अनदेखी रीढ़ दिल्ली की यातायात व्यवस्था पर चर्चा होते ही सबसे पहले मेट्रो, डीटीसी बसें और क्लस्टर बसें नजर में आती हैं, लेकिन राजधानी की असली तस्वीर इससे कहीं व्यापक है। बाहरी इलाकों, पुनर्वास कॉलोनियों, अनधिकृत बस्तियों और गाँवों में रहने वाले लाखों नागरिकों के लिए ग्रामीण सेवा वाहन ही वह कड़ी हैं, जो उन्हें मेट्रो स्टेशन, मुख्य बस मार्ग और बाजारों से जोड़ती हैं।

रोज़ाना लगभग 6000 ग्रामीण सेवा वाहन, विभिन्न रूटों पर चलकर, प्रति वाहन औसतन 15–15 यात्रियों को सेवा देते हैं, जो समग्र रूप से एक विशाल यात्री संख्या को वहन करते हैं।

इन वाहनों ने पिछले डेढ़ दशक में दिल्ली के "लास्ट माइल कनेक्टिविटी मॉडल" को व्यावहारिक रूप दिया है, जबकि न तो इनका कोई खास प्रचार हुआ, न ही इन्हें वह संस्थागत मान्यता मिली जिसकी वे हकदार हैं।

जिस समय शहर की बड़ी परियोजनाएँ प्रेजेंटेशन और पब्लिसिटी में व्यस्त रहीं, उस समय ग्रामीण सेवा वाहन बेहद साधारण ढंग से, कम किराए और उच्च विश्वसनीयता के साथ लोगों को उनके घरों तक पहुँचा रहे थे।

कानून, महामारी और प्रशासनिक बोझ की तिहरी मार 2019 में लागू मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम, 2019 ने देशभर में सड़क सुरक्षा और यातायात अनुशासन को मजबूत करने के उद्देश्य से जुर्माने और दंड को कई गुना बढ़ाया।

यह दृष्टि सिद्धांततः उचित थी, लेकिन जमीनी हालात—विशेषकर असंगठित, निम्न-आय परिवहन क्षेत्रों—के लिए पर्याप्त संक्रमण काल और सहूलियत का अभाव रहा।

इसके तुरंत बाद 2020–22 का कोरोना काल आया, जिसने परिवहन क्षेत्र की कमर तोड़ दी।

महीनों तक वाहन खड़े रहे, किस्तें चलती रहीं, बैंक और फाइनेंस कंपनियों के नोटिस आते रहे और नवीनीकरण, फिटनेस, परमिट, टैक्स आदि समय पर जमा न हो सके।

परिणामस्वरूप अनेक ग्रामीण सेवा वाहन जब्त हो गए या "सरकारी गड्ढे" पहुँच गए और जो कभी वाहन स्वामी थे, वे अब दूसरों के वाहनों पर चालक बनकर काम करने को मजबूर हैं।

यदि किसी नीतिगत परिवर्तन के कारण, अचानक कड़े दंड लागू हों, और उसी समय एक असाधारण आपदा (महामारी) भी आ जाए, तो सबसे अधिक चोट पहले से कमजोर वर्ग पर ही पड़ती है। ग्रामीण सेवा चालकों और मालिकों के साथ वही हुआ।

ई-ग्रामीण सेवा प्रतिस्थापन: अवसर, लेकिन अधूरा अब दिल्ली सरकार ने पुराने ग्रामीण सेवा वाहनों को इलेक्ट्रिक वाहनों से बदलने की नीति शुरू की है, जिसे पर्यावरणीय दृष्टि से और ऊर्जा संक्रमण के संदर्भ में सकारात्मक कदम माना जा सकता है।

इलेक्ट्रिक ग्रामीण सेवा वाहन, शोर और धुएँ को कम करते हैं, ईंधन लागत घटाते हैं और दिल्ली के लिए स्वच्छ हवा के लक्ष्य को मजबूत करते हैं।

लेकिन इस नीति की असली कसौटी यह है कि क्या इसके साथ वह आर्थिक न्याय भी जोड़ा जा रहा है, जिसका हक इन चालकों और मालिकों को है।

यदि एक ओर सरकार कहती है कि आप पुराने वाहन छोड़िए, नए इलेक्ट्रिक वाहन लाइए, और दूसरी ओर पुराने वाहनों पर लगे वर्षों पुराने भारी-भरकम चालान, पेनल्टी, बकाया टैक्स और ब्याज का पहाड़ जस का तस खड़ा रहे, तो कैसे कोई ईमानदार मालिक नया सफर शुरू कर सकेगा?

ग्रामीण सेवा समुदाय की प्रमुख माँग यही है कि प्रतिस्थापन नीति के साथ एकमुश्त जुर्माना और दंड माफी योजना लाई जाए, ताकि जो लोग आज भी कर्ज और कागजी बोझ में दबे हैं, वे मुख्यधारा में लौट सकें।

यह केवल आर्थिक राहत नहीं, बल्कि नीति-सम्मत पुनर्वास होगा, जो यह संदेश देगा कि सरकार सज़ा से अधिक सुधार पर विश्वास करती है।

चार्जिंग अवसंरचना: ईवी नीति की रीढ़ इलेक्ट्रिक वाहनों की सफलता केवल वाहन बदल देने से नहीं, बल्कि चार्जिंग ढांचे पर निर्भर करती है।

आज कई ई-वाहन चालक अर्धकानूनी या असुरक्षित कनेक्शन से चार्जिंग करने के लिए मजबूर हैं, जिससे आग, बिजली चोरी और दुर्घटनाओं का जोखिम बना रहता है।

यदि दिल्ली सरकार, एमसीडी, डीडीए और डीएमआरसी मिलकर सभी प्रमुख सार्वजनिक पार्किंग स्थलों—मेट्रो स्टेशन पार्किंग, बस टर्मिनल, प्रमुख बाजारों, अस्पतालों और दफ्तर क्षेत्रों—में कम से कम पाँच–पाँच चार्जिंग पॉइंट स्थापित कर दें, तो स्थिति पूरी तरह बदल सकती है।

ग्रामीण सेवा चालक अपने ठहराव के दौरान सुरक्षित, मीटरयुक्त और अधिकृत ढंग से चार्ज कर सकेंगे। इससे न केवल उनकी आमदनी स्थिर होगी, बल्कि ईवी को लेकर आम जनता का भरोसा भी बढ़ेगा।

सरकार के लिए यह निवेश केवल एक "खर्च" नहीं, बल्कि दीर्घकालीन "अवसंरचनात्मक पूँजी" है, जो दिल्ली की ई-मोबिलिटी के पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को जीवन देगी।

236 सड़कों पर ई-रिक्शा प्रतिबंध: आदेश से अमल तक का लंबा फ़ासला दिल्ली के उपराज्यपाल द्वारा जिन 236 सड़कों पर ई-रिक्शा के संचालन पर प्रतिबंध लगाया गया, वे सड़कें उच्च यातायात दबाव, सुरक्षा संवेदनशीलता, वीआईपी मूवमेंट, या अधिक गति वाली धमनियों में आती हैं।

इन सड़कों पर धीमी गति से चलने वाले, अचानक रुकने-चलने वाले वाहनों का होना दुर्घटना और जाम, दोनों की संभावना को बढ़ा देता है। यही कारण है कि इन मार्गों को ई-रिक्शा मुक्त रखने का आदेश जारी हुआ।

लेकिन व्यावहारिक स्थिति यह है कि इन आदेशों पर न तो व्यवस्थित निगरानी है, न ही उल्लंघन पर समयबद्ध कार्रवाई दिखती है।

ई-रिक्शा का संचालन बिना भौगोलिक सीमा, बिना रूट प्लानिंग और अक्सर नाबालिग या अप्रशिक्षित चालकों के हाथों में हो रहा है, जो न केवल कानून उल्लंघन है, बल्कि सार्वजनिक सुरक्षा के लिए सीधा खतरा भी है।

जाम वाली सड़क, बेतरतीब ढंग से खड़े ई-रिक्शा, अचानक यू-टर्न, फुटपाथ पर चढ़ी सवारी—ये तस्वीरें राजधानी की साख को भी चोट पहुँचाती हैं।

समाधान स्पष्ट है: प्रतिबंधित 236 सड़कों पर ई-रिक्शा के संचालन पर सख्त निगरानी और निरंतर प्रवर्तन।

* ई-रिक्शा के लिए अधिकृत रूट, निश्चित स्टॉप और सीमित संख्या तय कर स्पष्ट मानचित्र जारी करना।
* नाबालिगों और शराब/नशे की हालत में ड्राइविंग पर शून्य-सहनशीलता नीति।

जब तक नियमों का पालन समान और निष्पक्ष रूप से नहीं होगा, तब तक सड़क पर अनुशासन की अपेक्षा भी खोखली लगेगी।

प्रशासनिक पारदर्शिता: एकल-विंडो और सेवा केंद्र की आवश्यकता ग्रामीण सेवा वाहन मालिकों और चालकों के सामने सबसे बड़ी व्यावहारिक समस्या अक्सर "कागजी" होती है, सड़क की नहीं।

परमिट नवीनीकरण, फिटनेस, टैक्स जमा, प्रतिस्थापन, स्क्रैपिंग, नए ईवी पंजीकरण, बैंक एनओसी—इन सबके लिए अलग-अलग काउंटर, अलग-अलग अधिकारी और अलग-अलग तिथियाँ हैं।

यदि परिवहन विभाग में एक आधुनिक ग्राहक सेवा केंद्र स्थापित हो, जहाँ इलेक्ट्रॉनिक स्क्रीन पर यह घोषित रहे कि कौन अधिकारी किस समय उपलब्ध हैं, किन कार्यों के लिए कौन–सा काउंटर निर्धारित है और औसत निपटान समय क्या है, तो छोटे ऑपरेटरों के लिए विभाग "दहशत" नहीं, बल्कि "सेवा केंद्र" बन सकता है।

इसके साथ, लाइसेंसिंग से लेकर परमिट और वाहन प्रतिस्थापन तक के सभी प्रक्रियात्मक कार्यों के लिए एकल-विंडो प्रणाली लागू की जानी चाहिए।

इससे फाइलें अलग-अलग दफ्तरों के बीच भटकने की बजाय एक ही चैनल से गुजरेंगी, जवाबदेही तय होगी और भ्रष्टाचार की संभावना कम होगी।

संवाद की संरचना: हर छह महीने पर अनिवार्य बैठकें लोकतंत्र में सबसे बड़ी ताकत संवाद है, और जब विषय सार्वजनिक परिवहन जैसा जटिल और बहुस्तरीय हो, तो संवाद की आवश्यकता और बढ़ जाती है।

यदि परिवहन मंत्री और विभाग के वरिष्ठ अधिकारी साल में कम से कम दो बार विभिन्न वाणिज्यिक वाहन संघों—ग्रामीण सेवा, टैक्सी, ऑटो, ई-रिक्शा, स्कूल कैब, बस ऑपरेटर आदि—के प्रतिनिधियों से औपचारिक बैठक करें, तो नीतियाँ दस्तावेज़ों के बजाय ज़मीनी अनुभवों से संचालित होंगी।

ऐसी बैठकें केवल "सुनवाई" नहीं, बल्कि साझा जिम्मेदारी का मंच होनी चाहिए, जहाँ सरकार अपनी प्राथमिकताएँ और सीमाएँ स्पष्ट करे, और संघ अपने अनुभव, समस्याएँ और व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करें।

इससे नीति बनाते समय अचानक निर्णय और अप्रत्याशित झटके कम होंगे, और सभी पक्षों के बीच भरोसा मजबूत होगा।

न सब्सिडी, न रियायत—सिर्फ न्यायपूर्ण नियम ग्रामीण सेवा वाहन मालिक और चालक किसी विशेष सब्सिडी या असाधारण रियायत की माँग नहीं कर रहे। उनकी मांगें तीन बिंदुओं में समेटी जा सकती हैं:

* पुराने वाहनों पर लगे असाधारण जुर्मानों और पेनल्टी की मानवीय राहत के साथ ईवी प्रतिस्थापन का अवसर।
* ई-वाहनों के लिए पर्याप्त और सुरक्षित चार्जिंग अवसंरचना।
* ई-रिक्शा संचालन में सख्त अनुशासन और 236 प्रतिबंधित सड़कों पर आदेशों का वास्तविक पालन।
* एकल-विंडो प्रणाली, कस्टमर सर्विस सेंटर और छह–मासिक संवाद बैठकें

वह संस्थागत ढांचा खड़ा कर सकती हैं, जिसमें छोटे ऑपरेटर भी सम्मान के साथ काम कर सकें।

ग्रामीण सेवा वाहनों ने बिना किसी शोर-शराबे के, बिना बड़े विज्ञापन अभियानों के, वर्षों से दिल्ली के मेहनतकश नागरिकों को समय पर उनकी मंजिल तक पहुंचाया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि नीति-निर्माता भी उतनी ही ईमानदारी से उनके पक्ष को सुनें, जितनी ईमानदारी से वे राजधानी की सेवा कर रहे हैं।

यदि सरकार न्यायपूर्ण नियम, पारदर्शी व्यवस्था और निष्पक्ष प्रवर्तन सुनिश्चित कर दे, तो ग्रामीण सेवा न केवल दिल्ली की लास्ट माइल कड़ी बनी रहेगी, बल्कि स्वच्छ, सुरक्षित और अनुशासित परिवहन के भविष्य की मजबूत नींव भी रखेगी।

"In Brief:- Rural Services - Last Mile Connectivity"

ग्रामीण सेवा वाहन: जुर्माने माफ करो, ई-रिक्शा रोकें, ईवी गति दें

6000 वाहनों से दिल्ली की लास्ट माइल कनेक्टिविटी संकट में — कोरोना, काले चालान और अवैध ई - रिक्शा ने तोड़ा,

संकट की सच्चाई दिल्ली की सड़कों पर मेट्रो-बसें चमक रही हैं, लेकिन बाहरी इलाकों में ग्रामीण सेवा वाहन ही लाखों यात्रियों की असली लाइफलाइन हैं। 15 साल से 6000 वाहन रोज़ाना 15 लाख से अधिक लोगों को अंतिम मील सेवा दे रहे हैं। फिर भी, 2019 के मोटर वाहन कानून और कोरोना ने इन्हें कर्ज़ के जाल में फँसा दिया। पुराने चालान-पेनल्टी का पहाड़ खड़ा हो गया। वाहन जब्त हुए, मालिक चालक बन गए। अब ईवी प्रतिस्थापन नीति आई है, लेकिन बिना जुर्माना माफी के यह सिर्फ़ कागज़ी खेल है।

ईवी नीति: राहत या जाल? दिल्ली सरकार ई-ग्रामीण सेवा ला रही है—स्वागतयोग्य। लेकिन पुराने वाहनों के लाखों के चालान बाकी रहें, तो नया वाहन कैसे लाएँ? एकमुश्त माफी ही रास्ता है। चार्जिंग का संकट तो और गहरा। मेट्रो पार्किंग, एमसीडी-डीडीए स्थलों पर 5-5 पॉइंट न हों, तो ईवी कैसे चलें? असुरक्षित चार्जिंग से आगजनी का खतरा बढ़ेगा।

ई-रिक्शा: जाम का जहर उपराज्यपाल का आदेश साफ़—236 सड़कों पर ई-रिक्शा प्रतिबंधित। फिर भी पुलिस-परिवहन चुप। नाबालिग, नशेड़ी चालक जाम फैला रहे। मुख्य सड़कें यातनागृह बन गईं। सख्ती लाओ: चालान, जब्ती, रूट-नक्शा। ग्रामीण सेवा को साफ़ सड़कें दो।

प्रशासन सुधारें परिवहन विभाग में कस्टमर सेंटर खोलो—अधिकारी की टाइमिंग स्क्रीन पर। एकल विंडो लाओ—परमिट से स्क्रैपिंग तक एक काउंटर। परिवहन मंत्री हर 6 महीने संघों से मिलें।

फैक्ट बॉक्स: ग्रामीण सेवा का सच

तथ्य	आँकड़ा
सक्रिय वाहन	6000
दैनिक यात्री सेवा	15 लाख
सेवा अवधि	15 वर्ष
प्रभावित सड़कें (ई-रिक्शा प्रतिबंध)	236
माँग: चार्जिंग पॉइंट/स्थल प्रति	5,

मुख्य मांगें

* **जुर्माना माफी:** पुराने चालान-पेनल्टी एकमुश्त माफ।
* **चार्जिंग अनिवार्य:** हर मेट्रो/एमसीडी पार्किंग में 5 पॉइंट।
* **ई-रिक्शा सख्ती:** 236 सड़कों पर पूर्ण प्रवर्तन।
* **एकल विंडो:** सभी कागजी काम एक काउंटर।
* **सेवा केंद्र:** अधिकारी उपलब्धता की दैनिक जानकारी।
* **मंत्री बैठक:** हर 6 माह वाहन संघों से संवाद।

ग्रामीण सेवा दिल्ली का साथ निभाएँगे, बशर्ते सरकार नियमों का न्याय दे। सब्सिडी नहीं, अनुशासन दो।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : डिजिटल अरेस्ट घोटाला: क्यों वरिष्ठ नागरिकों पर बढ़ता खतरा थम नहीं रहा है

पिंकी कुंडू

ताज़ा चिंताजनक रुझान

* 2025 में साइबर फ्रॉड से ₹45.77 करोड़ की चपत: चौंकाने वाली बात यह है कि नागपुर में 60% पीड़ित वरिष्ठ नागरिक थे, जिससे साफ़ है कि ठग बुज़ुर्गों को आसान निशाना बना रहे हैं।
* नागपुर में सतर्क बैंक मैनेजर ने बचाई दादी की जमा पूंजी: एक चौकस बैंक मैनेजर ने हाल ही में एक वरिष्ठ नागरिक को जीवनभर की बचत गंवाने से बचा लिया, जब ठगों ने उन्हें नकली "डिजिटल अरेस्ट" केस में फँसाने की कोशिश की।
* लखनऊ (जनवरी 2026): वित्त विभाग के एक सेवानिवृत्त अधिकारी को मुंबई साइबर क्राइम सेल के नकली अधिकारियों के रूप में पेश आए ठगों ने ₹90 लाख का चूना लगाया।

हाल के मामले

स्थान - पीड़ित प्रोफ़ाइल - खोई हुई राशि - घोटाले का विवरण

* दिल्ली 85 वर्षीय महिला, ₹1.34 करोड़ महीने भर का डिजिटल अरेस्ट, पुलिस और वकीलों का प्रतिरूपण
* हैदराबाद मध्यम आयु का पुरुष, ₹7 करोड़, नकली ड्रग केस में फँसाया गया, कूरियर कॉल के ज़रिए हेरफेर
* तमिलनाडु महिला, ₹1.95 करोड़, 22 म्यूल अकाउंट्स के ज़रिए दुबई में हवाला से पैसे भेजे गए

क्यों वरिष्ठ नागरिक बनते हैं शिकार

* कम डिजिटल साक्षरता: अधिकांश को ठगी की तकनीकों या ऐप सेटिंग्स की जानकारी नहीं होती।
* प्राधिकरण पर अधिक भरोसा: जब कोई "सरकारी अधिकारी" होने का दावा करता है तो तुरंत विश्वास कर लेते हैं।
* सामाजिक अलगाव: अकेले रहने या तकनीकी जानकार परिवार के अभाव में असुरक्षा बढ़ जाती है।
* सीमित जागरूकता पहुँच: साइबर जागरूकता अभियान अक्सर वरिष्ठ नागरिकों तक नहीं पहुँच पाते।

मोडस ऑपरेंडी (ठगों की कार्यप्रणाली)

* प्रारंभिक संपर्क: पीड़ितों को व्हाट्सऐप कॉल आती है, जिसमें ठग खुद को कूरियर एजेंट, पुलिस अधिकारी या वकील बताते हैं।
* डर पैदा करना: उन्हें झूठे मामलों (जैसे ड्रग तस्करी, मनी लॉन्ड्रिंग) में फँसाने की धमकी दी जाती है।
* अलगाव की रणनीति: पीड़ितों को डिजिटल रूप से "गिरफ़्तार" किया जाता है—घर में रहने, संपर्क न करने और नकली कानूनी प्रक्रिया का पालन करने को मजबूर किया जाता है।
* डेटा निकालना: आधार, पैन और बैंक विवरण माँगे जाते हैं।
* मनी लॉन्ड्रिंग: धन म्यूल अकाउंट्स के ज़रिए बाहर भेजा जाता है, हवाला या क्रिप्टो चैनलों से।

रणनीतिक सुरक्षा उपाय

1. बीट-स्तर पुलिस संवेदनशीलता
o बीट अधिकारी अपने क्षेत्र के वरिष्ठ नागरिकों से नियमित रूप से मिलें।
o अपना मोबाइल नंबर व्यक्तिगत रूप से साझा करें और सलाह दें कि किसी समस्या पर सबसे पहले उन्हें कॉल करें।
2. बैंक स्टाफ की सतर्कता
o वरिष्ठ नागरिकों के खातों से बड़े या संदिग्ध ट्रांसफ़र को फ़्लैग करें और जागरूकता बढ़ाएँ।
o स्टाफ को प्रशिक्षित करें कि वे परिवार या पुलिस को गुप्त रूप से सूचित करें।
o एटीएम और शाखाओं में ठगी चेतावनी पोस्टर लगाएँ।
3. स्थानीयकृत जागरूकता अभियान
o आरडब्ल्यूए, मंदिरों और वरिष्ठ नागरिक क्लबों में जागरूकता सत्र आयोजित करें।
o रेडियो, स्थानीय अख़बार और व्हाट्सऐप समूहों का उपयोग करें।
o द्विभाषी पोस्टर वितरित करें जिनमें हेल्पलाइन नंबर और चेतावनी संकेत हों।
4. डिजिटल साक्षरता अभियान
o स्मार्टफोन की बुनियादी सुरक्षा सिखाएँ: कॉल ब्लॉकिंग, ऐप परमिशन, ठगी पहचान।
o सत्यापित सरकारी ऐप्स और हेल्पलाइन के उपयोग को प्रोत्साहित करें।

ध्यान दें, ध्यान दें। सभी सम्मानित मतदाताओं से निवेदन है कि अपने नाम को पिछली स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन, अर्थात Last SIR मतदाता सूची से अवश्य मैप कराएं

पिंकी कुंडू

मतदाता सूची में अपना नाम सुरक्षित रखने, नाम हटने या किसी भी प्रकार की त्रुटि से बचने, और सही एवं अपडेटेड वोटर लिस्ट सुनिश्चित करने के लिए *मैपिंग कराना अत्यंत आवश्यक है।

मतदाता अपने नाम की जांच और मैपिंग ECINet App,

मुख्य निर्वाचन अधिकारी दिल्ली की वेबसाइट – ceodelhi.gov.in,

या Voter Service Portal – voters.eci.gov.in

के माध्यम से आसानी से कर सकते हैं।

अतः सभी मतदाताओं से अनुरोध है कि आज ही अपना नाम मैप कराएं क्योंकि आपका वोट आपकी पहचान है।

आवश्यक सूचना

सभी बीएलओ ध्यान दे . 11.01.2026 रविवार सभी पोलिंग लॉकेशन पर स्पेशल कैंप लगेगा जहां सभी बीएलओ अपना 2002 और 2025 का इलेक्टोरल लेकर बैठेंगे। सभी बीएलओ और बीएलओ सुपरवाइजर अपने क्षेत्र में यह सूचना ज्यादा से ज्यादा पहुंचाए और यह स्पेशल कैंप सफल बनाए । आपके मतदाता इस दिन पोलिंग लॉकेशन पे आकर अपना 2002 और 2025 का इलेक्टोरल रोल चेक करेंगे जिससे आपको SIR के कार्य में मदद मिलेगी।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (PCOS)

PCOS क्या है? पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (PCOS) एक जटिल हार्मोनल एवं चयापचय (Metabolic) विकार है, जो मुख्यतः प्रजनन आयु में अंडाशय (ओवरी) वाले व्यक्तियों को प्रभावित करता है। यह इस समूह में पाए जाने वाले सबसे सामान्य एंडोक्राइन विकारों में से एक है और विश्व-भर में लगभग 15% प्रजनन आयु की महिलाओं को प्रभावित करता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार— PCOS किसी एक कारण से होने वाली बीमारी नहीं है, बल्कि एक सिंड्रोम है; अर्थात लक्षणों और जैविक परिवर्तनों का ऐसा समूह, जो प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग रूप और तीव्रता के साथ प्रकट हो सकता है।

अंतर्निहित जैविकी:

* पैथोफिज़ियोलॉजी PCOS प्रजनन एवं चयापचय प्रणालियों के हार्मोनल नियंत्रण में गड़बड़ी के कारण उत्पन्न होता है:

1. हार्मोनल असंतुलन मस्तिष्क के हाइपोथैलेमस और पिट्यूटरी ग्रंथि से निकलने वाले संकेत (GnRH, LH, FSH) अंडाशय के कार्य को नियंत्रित करते हैं।

* PCOS में LH की तरंगों की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ जाती है, जिससे अंडाशयों द्वारा एंड्रोजन (पुरुष-सदृश हार्मोन) का उत्पादन अधिक होने लगता है।

2. एंड्रोजन की अधिकता (हाइपरएंड्रोजेनिज़्म) टेस्टोस्टेरोन जैसे एंड्रोजेनों का बढ़ा हुआ स्तर PCOS की प्रमुख पहचान है।

* इसके परिणामस्वरूप हिर्सूटिज़्म (चेहरे/शरीर पर अधिक बाल), मुंहासे तथा सिर के बालों का पतला होना (एलोपेसिया) दिखाई देता है।

3. इंसुलिन प्रतिरोध PCOS वाले अनेक लोगों में इंसुलिन रेज़िस्टेंस विकसित हो जाता है, जिसमें रक्त शर्करा नियंत्रित करने के लिए शरीर को अधिक इंसुलिन चाहिए।

* बढ़ा हुआ इंसुलिन स्तर अंडाशयों को और अधिक एंड्रोजन बनाने के लिए प्रेरित करता है, जिससे हार्मोनल असंतुलन और गहराता है।

4. अंडाशयी फॉलिकल का विकास अल्ट्रासाउंड में दिखने वाली "सिस्ट" वास्तव में अपरिपक्व फॉलिकल्स होती हैं, जो ओव्यूलेशन बाधित होने के कारण जमा हो जाती हैं — ये हानिकारक सिस्ट नहीं होतीं।

5. प्रणालीगत प्रभाव PCOS में हल्की लेकिन दीर्घकालिक सूजन और चयापचय परिवर्तन शामिल होते हैं। यही कारण है कि इसे अब केवल प्रजनन विकार नहीं, बल्कि एक सिस्टमिक सिंड्रोम माना जाता है।

(PubMed के अनुसार)

लक्षण एवं नैदानिक विशेषताएँ लक्षण व्यक्ति-दर-व्यक्ति भिन्न हो सकते हैं, पर सामान्यतः इनमें शामिल हैं:

* अनियमित मासिक धर्म या माहवारी का न होना
* हिर्सूटिज़्म (चेहरे/शरीर पर अधिक बाल)
* मुंहासे और तैलीय त्वचा
* सिर के बालों का पतला होना
* वजन बढ़ना या वजन घटाने में कठिनाई
* बांझपन या गर्भधारण में समस्या
* इंसुलिन रेज़िस्टेंस / प्रीडायबिटीज़ / टाइप-2 डायबिटीज़ का जोखिम

हृदय-वाहिका जोखिम कारक (कोलेस्ट्रॉल व चयापचय संबंधी गड़बड़ियाँ)

(WHO के अनुसार)

निदानः प्रमाण-आधारित दिशानिर्देश PCOS का निदान प्रायः रॉटरडैम मानदंड के आधार पर किया जाता है, जिनमें से तीन में से कम से कम दो उपस्थित हों:

* अनियमित या अनुपस्थित ओव्यूलेशन (ओलिगो/अमेनोरिया) हाइपरएंड्रोजेनिज़्म के नैदानिक या जैव-रासायनिक संकेत
* अल्ट्रासाउंड में पॉलीसिस्टिक-दिखने वाली अंडाशय
* इसके अतिरिक्त, वयस्कों में एंटी-म्यूलरियन हार्मोन (AMH) का स्तर एक सहायक निदान सूचक के रूप में तेजी से स्वीकार किया जा रहा है।
* डॉक्टर इंसुलिन रेज़िस्टेंस, लिपिड असामान्यताओं और हृदय-वाहिका जोखिम की भी जांच करते हैं।

नवीनतम शोध एवं प्रगति (2025) नई निदान तकनीकें एवं AI क्लिनिकल दिशानिर्देशों, इमेजिंग और जोखिम-डेटा को जोड़ने वाले AI-आधारित निदान तंत्र विकसित हो रहे हैं, जो निदान की सटीकता बढ़ाने और असमानताओं को कम करने में सहायक हैं।

एक उभरता हुआ ढांचा नॉलेज-ग्राउंडेड मल्टी-एजेंट सिस्टम का उपयोग कर क्लिनिकल डायग्नोस्टिक वर्कफ़्लो का

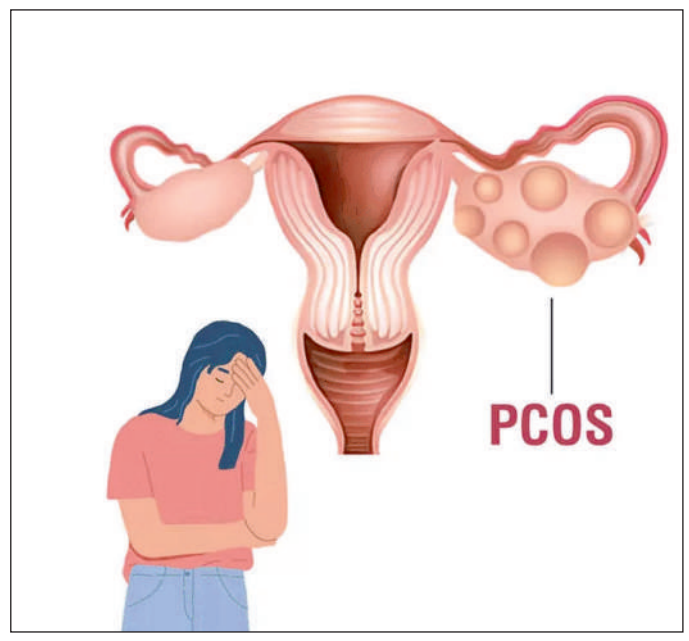

अनुकरण करता है, जिससे विविध रोगी प्रोफ़ाइल में PCOS की पहचान बेहतर होती है।

आनुवंशिक एवं एपिजेनेटिक अंतर्दृष्टि एक क्रांतिकारी अवधारणा एपिजेनेटिक इनहेरिटेंस का सुझाव देती है— जहाँ जीन गतिविधि के पैटर्न पीढ़ियों तक स्थानांतरित होकर PCOS के जोखिम को प्रभावित कर सकते हैं। यह पारिवारिक एकत्रता को समझाने और IVF जैसे संदर्भों में रोकथाम-आधारित रणनीतियों के द्वार खोल सकती है।

(Live Science के अनुसार)

1. वज़न घटाने की दवाएँ (GLP-1 रिसेप्टर एगोनिस्ट्स)

2. सेमाग्लूटाइड और टिर्ज़ेपाटाइड जैसी दवाएँ—जो मूलतः वजन प्रबंधन के लिए विकसित हुई थीं — अब ऑफ-लेबल रूप से PCOS में निम्न लाभों हेतु प्रयुक्त हो रही हैं:

* वजन बढ़ना
* इंसुलिन रेज़िस्टेंस
* हार्मोनल असंतुलन

मासिक धर्म की नियमितता और प्रजनन क्षमता में सुधार (Reuters के अनुसार):- हालाँकि, PCOS के लिए ये दवाएँ अभी आधिकारिक रूप से स्वीकृत नहीं हैं और विशिष्ट क्लिनिकल ट्रायल्स की आवश्यकता बनी हुई है।

आंत स्वास्थ्य एवं चयापचय उभरते अध्ययनों से संकेत मिलता है कि गट माइक्रोबायोम में बदलाव PCOS के चयापचय और सूजन संबंधी पहलुओं में भूमिका निभा सकते हैं, जिससे नए उपचार लक्ष्य सामने आ सकते हैं।

(PubMed के अनुसार)

संरचनात्मक एवं मस्कुलोस्केलेटल शोध हालिया छोटे अध्ययनों में PCOS और पोश्चर परिवर्तन (जैसे एंटीरियर पेल्विक टिल्ट) के बीच संभावित संबंध का संकेत मिला है—संभवतः हार्मोनल और चयापचय प्रभावों के कारण—हालाँकि और शोध आवश्यक है।

(Marie Claire UK के अनुसार)

प्रबंधन एवं उपचार विकल्प हालाँकि PCOS का कोई स्थायी इलाज नहीं है, फिर भी प्रभावी रणनीतियाँ उपलब्ध हैं:

1. जीवनशैली में सुधार
* संतुलित आहार और पोषण
* नियमित शारीरिक गतिविधि एवं वजन प्रबंधन
* तनाव नियंत्रण और पर्याप्त नींद
* ये उपाय लक्षणों और चयापचय परिणामों में सुधार की आधारशिला हैं।

2. दवाएँ
* मेटफॉर्मिन – इंसुलिन रेज़िस्टेंस के लिए
* ओरल कॉन्ट्रासेप्टिव्स – चक्र नियमित करने और एंड्रोजन प्रभाव घटाने हेतु
* एंटी-एंड्रोजेन्स (जैसे स्पाइरोनोलैक्टोन) – गंभीर हिर्सूटिज़्म/एक्ने में
* लेट्रोज़ोल – बांझपन में ओव्यूलेशन प्रेरण हेतु तेजी से अपनाया जा रहा है

(JAMA Network के अनुसार)

3. प्रजनन उपचार
* ओव्यूलेशन इंडक्शन दवाएँ सहायक प्रजनन तकनीकें (जैसे IVF)

PCOS-विशिष्ट उन्नत IVF प्रोटोकॉल परिणामों को बेहतर और जोखिमों को कम करने हेतु विकसित किए जा रहे हैं।

(New York Post के अनुसार)

4. सप्लीमेंट्स एवं सहायक उपाय इनॉसिटोल्स (विशेषकर मायो-इनॉसिटोल) इंसुलिन संवेदनशीलता और ओव्यूलेशन में सुधार के लिए चर्चा में हैं, हालाँकि गर्भावस्था परिणामों पर प्रभाव अभी अध्ययनाधीन है।

(New York Post)

जीवन-गुणवत्ता पर व्यापक प्रभाव PCOS केवल शारीरिक स्वास्थ्य को ही नहीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। प्रभावित व्यक्तियों में चिंता, अवसाद, शरीर-छवि से जुड़ा तनाव और मानसिक दबाव की दरें अधिक पाई जाती हैं।

(The Week के अनुसार)

सारांश: 2025 में PCOS

संक्षेप में— PCOS एक बहु-कारक हार्मोनल एवं चयापचय सिंड्रोम है, जिसके लक्षण विविध होते हैं।

* निदान में अब नए बायोमार्कर और AI-आधारित उपकरण शामिल हो रहे हैं।
* GLP-1 जैसी नई दवाएँ आशाजनक हैं, पर विशिष्ट परीक्षणों की आवश्यकता है।

एमआरआई मशीन बनाना रॉकेट साइंस से कम नहीं है। यह दुनिया की सबसे जटिल मेडिकल तकनीकों में से एक है

पिंकी कुंडू

दुनिया के 195 देशों में से केवल 7-8 देश ही ऐसे हैं, जिनके पास पूरी तरह से (एंड टू एंड) कमर्शियल एमआरआई मशीन बनाने की क्षमता है। अब तक इस बाजार पर गिने-चुने देशों का राज था।

यहाँ उन देशों और उनकी प्रमुख कंपनियों की सूची है:

1. अमेरिका (USA) - बाज़ार का राजा, कंपनीः GE Healthcare (General Electric) अमेरिका इस तकनीक में सबसे आगे है। GE की मशीनें दुनिया भर में सबसे ज्यादा इस्तेमाल होती हैं।

2. जर्मनी (Germany) - इंजीनियरिंग का पावरहाउस, कंपनीः Siemens Healthineers, सीमेंस की मशीनें अपनी सटीक इंजीनियरिंग और टिकाऊपन (Durability) के लिए जानी जाती हैं। इनका चुंबक (Magnet)

बनाने का एक बड़ा केंद्र यूके (UK) में भी है, लेकिन तकनीक जर्मन है।

3. नीदरलैंड्स (Netherlands) यूरोप का दिग्गज कंपनीः Philips, फिलिप्स हेल्थकेयर दुनिया की शीर्ष 3 कंपनियों (Big 3) में आती है। GE, Siemens और Philips — इन्हें एमआरआई की दुनिया का त्रिमूर्ति कहा जाता है, जिनका 70-80% बाजार पर कब्जा था।

4. जापान (Japan) - एशिया का पहला लीडर, कंपनियांः Canon Medical Systems (पहले Toshiba) और Fujifilm Healthcare (पहले Hitachi), जापान ने बहुत पहले ही अपनी खुद की तकनीक विकसित कर ली थी। तोशिबा और हिताची के मेडिकल विंग अब कैनन और फ्यूजीफिल्म के पास हैं।

5. चीन (China) - तेजी से उभरता हुआ, कंपनीः United Imaging, चीन ने पिछले एक दशक में बहुत आक्रामक तरीके से निवेश किया और 'यूनाइटेड इमेजिंग' के जरिए पश्चिमी देशों की निर्भरता खत्म की। अब वे अपनी मशीनें अमेरिका में भी बेच रहे हैं।

6. इटली (Italy) - विशेष (Niche) मशीनें, कंपनीः Esaote, इटली मुख्य रूप से छोटी एमआरआई मशीनें बनाता है जो केवल हाथ-पैरों (Extremities) के स्कैन के लिए होती हैं, हालांकि अब वे फुल बॉडी स्कैन में भी उतर रहे हैं।

7. भारत (India) - नया खिलाड़ी (The New Entrant), कंपनीः VoxelGrids (और कुछ अन्य जैसे Panacea जो रिसर्च में हैं), अब इस लिस्ट में भारत का नाम भी जुड़ गया है। जैसा कि हमने चर्चा की, VoxelGrids ने 1.5 टेस्ला की मशीन बनाकर भारत को अमेरिका, जर्मनी और चीन की कतार में खड़ा कर दिया है।

अजवाइन + गुड़ खाने के फायदे (कमर दर्द में आराम)

अगर महिलाओं को बार-बार कमर दर्द, थकान या कमजोरी महसूस होती है,

तो अजवाइन और गुड़ का छोटा सा नुस्खा बहुत लाभकारी हो सकता है।

यह नुस्खा आयुर्वेद में काफ़ी पुराना और असरदार माना जाता है।

1. कमर दर्द में राहत देता है
अजवाइन में मौजूद प्राकृतिक दर्द-निवारक तत्व
* → नसों को आराम देते हैं
* → जकड़न और सूजन कम करते हैं
गुड़ शरीर को गर्मी और ताकत देता है, जिससे दर्द धीरे-धीरे कम होता है।

2. कमजोरी और थकान दूर करता है

* गुड़ में आयरन और मिनरल्स होते हैं
* → शरीर में ऊर्जा बढ़ाते हैं
* → कमजोरी और थकान को दूर करते हैं
* अजवाइन पाचन सुधारकर शरीर को हल्का महसूस कराती है।

3. हार्मोन संतुलन में मदद
महिलाओं में होने वाले हार्मोन असंतुलन से
* → कमर दर्द
* → भारीपन
* → थकावट

जैसी समस्याएँ होती हैं, जिन्हें अजवाइन - गुड़ नियमित लेने से राहत मिल सकती है।

4. पाचन और गैस की समस्या ठीक करता है
* अजवाइन
* → गैस
* → अपच
* → पेट दर्द

को कम करती है, जिससे पेट से जुड़ा दबाव कमर पर नहीं पड़ता।

कैसे खाएँ? (Method)
* रात को सोने से पहले
* ½ चम्मच अजवाइन
* गुड़ का छोटा टुकड़ा

अच्छी तरह चबा कर खाएँ और उसके बाद गुनगुना दूध पी लें।

जिम नहीं जा रहे, फिर भी ताकत चाहिए?

पिंकी कुंडू

तो याद रखो - ताकत सिर्फ मशीनों से नहीं, सही पोषण से बनती है!

वैज्ञानिक कारण:

* खजूर में नेचुरल शुगर, पोटैशियम और आयरन होते हैं, जो तुरंत एनर्जी और मसल रिकवरी में मदद करते हैं!

* बादाम में हेल्दी फैट, प्रोटीन और विटामिन-E होता है, जो नर्व फंक्शन और फोकस को सपोर्ट करता है!

* मखाना में लो-कैलोरी, हाई-मैग्नीशियम फूड है, जो मसल रिलैक्सेशन और मेटाबॉलिज्म को संतुलित रखता है!

आयुर्वेदिक कारण : आयुर्वेद में खजूर बल्य (ताकत बढ़ाने वाला), बादाम मेध्य (दिमाग और नसों के लिए) और मखाना हल्का व पचने में आसान माना जाता है!

फायदे:

1. स्थिर एनर्जी
2. बेहतर फोकस
3. हल्की-फुल्की रिकवरी

नुकसानः अधिक मात्रा या रोज खाने से वजन बढ़ सकता है! सीमित मात्रा ही सही है!

ठंड के मौसम में बच्चों की इम्यूनिटी बढ़ाएं

पिंकी कुंडू

अगर ठंड के मौसम में 7 से 12 साल के बच्चों की आयुर्वेदिक तरीके से देखभाल की जाए, तो उनकी इम्यूनिटी बढ़ती है, सर्दी - खांसी कम होती है और उनका विकास अच्छा रहता है। नीचे कुछ आसान और सुरक्षित टिप्स दिए गए हैं

आयुर्वेद के अनुसार ठंड के मौसम में बच्चों की देखभाल

1. डाइट ठंड के मौसम में वात-कफ बढ़ जाता है, इसलिए गर्म और आसानी से पचने वाला खाना देना चाहिए।

* क्या खाना देना है
* गर्म दूध (हल्दी/घी की एक बूंद काफी होगी)
* सब्जी का सूप, दालें
* बाजरा, ज्वार, गेहूं की रोटी
* खजूर, अंजीर (भिगोए हुए)
* थोड़ी मात्रा में घी
* जिन चीज़ों से बचना है
* ठंडा पानी
* आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक्स
* बहुत ऑयली और जंक फूड

2. इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए

* गर्म पानी पीने की आदत डालें
* आंवला, शहद (थोड़ी मात्रा में)
* 1–2 तुलसी के पत्ते (चाय नहीं, सादा)

डॉक्टर की सलाह के बिना कोई दवा न दें

3. अभ्यंग (तेल मालिश)

* हफ्ते में 2–3 बार
* तिल का तेल/नारियल का तेल
* सुबह होने से पहले हल्की मालिश करें नहाना
* इस वजह से
* ठंड से बचाव
* हड्डियां मजबूत
* अच्छी नींद

4. नहाना

* सिर्फ़ गर्म पानी से नहाएं
* नहाने के तुरंत बाद कपड़े सुखाएं
* गीले बाल न रखें

5. कपड़े

* ठंड के लिए कॉटन + ऊनी कपड़े सही
* कान, छाती और पैर ढके होने चाहिए
* रात में मोटा कपड़ा पहनें

6. नींद और रूटीन

* जल्दी सोना, जल्दी उठना
* सोने से पहले मोबाइल/TV से बचें
* दिन में थोड़ी धूप लें

7. हल्की एक्सरसाइज़

* सुबह सूर्यनमस्कार (बच्चों की क्षमता के अनुसार)
* खेलकूद, दौड़ना – लेकिन सिर्फ़ ठंड में ज़्यादा पसीना आने से बचने के लिए मौसम

8. सर्दी-खांसी से बचने के लिए

* गर्म पानी की भाप (बड़ों की देखरेख में)
* रात में छाती पर थोड़ा घी/तेल मलें

निष्कर्ष आयुर्वेद कहता है –

"सही खान-पान, दिनचर्या और तेल मालिश = स्वस्थ बच्चा।

वेदों और धर्मशास्त्रों के अनुसार: पुत्र केवल एक नहीं, 12 प्रकार के होते हैं!

पिंकी कुंडू

हिन्दू धर्म में 'पुत्र' शब्द का अर्थ बहुत गहरा है। यह केवल एक संबंध नहीं, बल्कि एक बड़ी जिम्मेदारी है।

₹पुत्र' का वास्तविक अर्थ क्या है? प्रारंभ में 'पुत्र' का अर्थ 'छोटा' या 'कनिष्ठ' होता था। लेकिन धार्मिक दृष्टि से इसकी व्युत्पत्ति है — ₹पुन्नाम्नो नरकाद् यस्मात्त्रायते पितरं सुतः ₹अर्थात जो पिता को 'पुत' नामक नरक से त्राण दिलाए (बचाए), वही पुत्र है। पुत्रों द्वारा दिए गए पिंड और श्राद्ध से ही पितरों का उद्धार होता है।

मनुस्मृति और वेदों में वर्णित 12 प्रकार के पुत्र धर्मशास्त्रों में मुख्य रूप से बारह प्रकार के पुत्रों का उल्लेख मिलता है। इन्हें दो श्रेणियों में बाँटा गया है:

श्रेणी 1: वे पुत्र जो पिंडदान, गोत्र और प्रतिष्ठा के अधिकारी हैं:

औरसः धर्मपत्नी से उत्पन्न अपनी स्वयं की संतान। (यही मुख्य पुत्र माना जाता है)

क्षेत्रजः विशेष परिस्थितियों में (पति की अक्षमता पर) पति की आज्ञा से पत्नी द्वारा उत्पन्न संतान।

दत्तकः विधिपूर्वक गोद लिया हुआ पुत्र।

कृत्रिमः जिसे पुत्र बनाया गया हो (स्वेच्छा से बना पुत्र)।

गूढजः वह पुत्र जिसके वास्तविक पिता का ज्ञान न हो, पर वह घर में ही जन्मा हो।

अपविद्धः माता-पिता द्वारा त्यागा हुआ, जिसे किसी और ने अपना लिया हो।

श्रेणी 2: वे पुत्र जो केवल नामधारी हैं (इनसे ऋण व पिंड कार्य नहीं होता):

7. कानीनः विवाह से पूर्व कुँवारी कन्या से उत्पन्न पुत्र।

8. सहोढ़ः गर्भिणी अवस्था में विवाह होने पर उत्पन्न पुत्र।

9. क्रीतकः मूल्य देकर खरीदा गया पुत्र।

10. पौनर्भवः पुनर्विवाहित स्त्री (विधवा या परित्यक्ता) से उत्पन्न पुत्र।

11. स्वयंदत्तः जो स्वयं को किसी को सौंप दे (अनाथ आदि)।

12. शौद्र/पार्शवः ब्राह्मण पिता और शूद्र माता से उत्पन्न पुत्र।

शास्त्रों में वर्णित 4 कर्म-आधारित पुत्र इन 12 के अलावा, शास्त्रों में पूर्वजन्म के कर्मों के आधार पर भी 4 प्रकार के पुत्र बताए गए हैं, जो आज के समय में बहुत प्रासंगिक लगते हैं:

1. ऋणानुबंध पुत्रः पूर्व जन्म का कोई लेनदार, जो अपना ऋण वसूलने के लिए पुत्र बनकर आता है और धन बर्बाद करता है।

2. शत्रु पुत्रः पूर्व जन्म का शत्रु, जो बदला लेने के लिए परिवार में जन्म लेता है और दुःख देता है।

3. उदासीन पुत्रः जिसे माता-पिता से कोई लगाव नहीं होता, विवाह के बाद वह उन्हें त्याग देता है।

4. सेवक पुत्र (श्रेष्ठ): पूर्व जन्म में की गई निःस्वार्थ सेवा का फल। यह पुत्र माता-पिता की सेवा करता है।

पिंकी कुंडू

शनि की दृष्टि

* शनि की दृष्टि यदि सूर्य पर हो तोः- यहाँ शनि आपके अहंकार को मारेंगे, आप जब जब ओवर कॉन्फिडेंट होंगे तब तब वो आपको किसी ऐसे व्यक्ति के हाथो पराजित करवा देंगे जो की कंही से भी आपके बराबर नहीं होगा.

* शनि की दृष्टि यदि चंद्र पर पड़ जाये तोः- यहाँ जहाँ आप बहुत खुश हो गये, जहाँ आपने अपनी ख़ुशीयों का उपयोग लोगों को जलाने के लिए की, जहाँ दिखावा किया बस वंही से एक नया दुख तैयार.

* मंगल पर शनि की दृष्टि मतलबः- शेर का शिकार श्वान द्वारा.

* बुध पर शनि की दृष्टिः- आपके मित्र ही आपको चोट पहुंचाएंगे और सबसे ज्यादा आर्थिक और बौद्धिक, वह आपके सोर्स खराब करेंगे.

* गुरु पर शनि की दृष्टिः- श्रापित हो जाओगे आप, आपको हाय और बद्दुआ का सामना करना पड़ जायेगा, इसलिए यहाँ बहुत विनम्र रहना चाहिए व्यक्ति को.

* शुक्र पर शनि की दृष्टिः- पत्नी, प्रेमिका और संतान इनसे जितना ज्यादा उम्मीद रखोगे ये उतना ही ज्यादा आपको निराश करेंगे.

* राहु पर यदि शनि की दृष्टि पड़ जाये तोः- यहाँ जो आपका बुरा करने आएगा वह खुद ही अपना नाश करवाकर जायेगा, कई पापियों को दंड मिलेगा आपके निमित्त से.

* केतु पर शनि की दृष्टि अर्थातः- एकांत में खलल, मौन में खलल, ध्यान में खलल, जितना एकांत चाहोगे उतना ही भीड़ से जूझना पड़ेगा.

श्री मयूरेश स्तोत्रम्

पिंकी कुंडू

श्री मयूरेश स्तोत्रम्ः - श्री गणपति भगवान सभी विघ्नों का नाश करने वाले देवता है, यह सभी कार्यो को सिद्ध करने वाले हैं। किसी भी पूजा या अनुष्ठान में गणपति जी को स्थापित करके पूजन या अनुष्ठान किया जाये तो निश्चित ही सफलता प्राप्त होती है।

यूँ तो गणपति महाराज के अनेको स्तोत्रम् हैं परंतु मयूर स्तोत्रम् का महत्व सर्वोपरि है।

यह स्तोत्र अपने आप में चैतन्य और मन्त्र सिद्ध है, अतः इसका पाठ ही पूर्ण सफलता प्रदान करने वाला है।

मयूर स्तोत्रम् का पाठ

* घर में आने वाली बाधाओ,
* सुख शांति, उन्नति, प्रगति,
* मानसिक अथवा शारीरिक रूप से परेशानी
* किसी भी प्रकार की बीमारी,
* किसी को जेल हो गई है अथवा
* जेल जाने की संभावना बन रही है
* तब इस स्तोत्र का पाठ कर के अपने सभी संकटों, परेशानियों से बच सकता है।
* प्रत्येक क्षेत्र में इसका नियमित पाठ सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

इस स्तोत्र का पाठ स्त्री एवं पुरुष सामान रूप से कर सकते हैं।

सर्व प्रथम स्नान कर आसान को स्पर्श करके मस्तक से लगाएं। पूर्व की तरफ मुँह करके बैठे अपने सामने गणपति यंत्र या मूर्ती स्थापित करें।

पूजा शुक्ल पक्ष के बुधवार को प्रारम्भ करें।

"वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु में देव सर्व कार्येशु सर्वदा।।

सर्वप्रथम गुरु जी का पंचोपचार से पूजन करे। उसके बाद गणपति महाराज को प्रणाम करें।

"सर्व स्थूलतनुम् गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम
प्रस्यन्द्न्मधुगंधलुब्धमधुपव्यालोलगंडस्थलम।
दंताघातविदारितारीरुधिरैः सिन्दुरशोभाकर,
वन्दे शैलसुत गणपति सिद्धिप्रदं कामदम।।
सिन्दुराभ त्रिनेत्र प्रथुतरजठर हमेर्दधानस्त्पदमेर्दधानम्
दंत पाशाकुशेष्ट-अन्दु रुकर्विलसद्विजपुरा विरामम,
बालेन्दुद्यौतमौली करिपतिवदनं दानपुरार्ग्न्ड-
भौगिन्द्रा बद्धभूप भजत गणपति रक्तवस्त्रान्गरांगम .
सुमुखश्चेक्रदंतश्च कपिलो गजकर्णकः
लम्बोदरश्च विक्तो विघ्ननाशो विनायकः
धूम्रकेतु गणध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननाः
द्वादशेतानी नामानि य पठच्छ्रणुयदपि।
विद्धारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्यतस्य ना जायते।।"

तत्पश्चात गणपति महाराज के 12 नामो का स्मरण करे।

सुमुखश्च-एकदंतश्च कपिलो गज कर्णकः
लम्बोदरश्व विकटो विघ्ननाशो विनायकः
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छ्र्णुयादपि
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा
संग्रामें संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जयते।

इसके बाद श्री गणपति जी का पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करके मयुरेश स्त्रोत का पाठ करे करें।

श्रीमयूरेश स्तोत्रम्
ब्रह्मोवाच
पुराणपुरुषं देवं नानाक्रीडाकरं मुदा।
मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम्।।1।।

ब्रह्मा जी बोले – जो पुराण पुरुष हैं और प्रसन्नतापूर्वक नाना प्रकार की कीडाएँ करते हैं. जो माया के स्वामी हैं तथा जिनका स्वरूप दुर्विभाज्य अर्थात अचिन्त्य है, उन मयूरेश गणेश को मैं प्रणाम करता हूँ।।1।।

परातत्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम्।
गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम्।।2।।

जो परात्पर, चिदानन्दमय, निर्विकार, सबके हृदय में अन्तर्यामी रूप से स्थित, गुणातीत एवं गुणमय हैं, उन मयूरेश को मैं नमस्कार करता हूँ।।2।।

सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया।
सर्वविघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम्।।3।।

जो स्वेच्छा से ही संसार की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं, उन सर्वविघ्नहारी देवता मयूरेश को मैं प्रणाम करता हूँ।।3।।

नानादैत्यनिहन्तारं नानारूपाणि बिभ्रतम्।
नानायुधधरं भक्त्या मयूरेशं नमाम्यहम्।।4।।

जो अनेकानेक दैत्यों के प्राणनाशक हैं और नाना प्रकार के रूप धारण करते हैं, उन नाना अस्त्र-शस्त्र धारी मयूरेश को मैं भक्ति भाव से नमस्कार करता हूँ।।4।।

इन्द्रादिदेवतावृन्दैरभिष्टुतमहर्निशम्।
सदसद्व्यक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम्।।5।।

इन्द्र आदि देवताओं का समुदाय दिन-रात जिनका स्तवन करता है तथा जो सत्, असत्, व्यक्त और अव्यक्त रूप हैं, उन मयूरेश को मैं प्रणाम करता हूँ।।5।।

सर्वशक्तिमयं देवं सर्वरूपधरं विभुम्।
सर्वविद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम्।।6।।

जो सर्वशक्तिमय, सर्वरूपधारी, सर्वव्यापक और सम्पूर्ण विद्याओं के प्रवक्ता हैं, उन भगवान मयूरेश को मैं प्रणाम करता हूँ।।6।।

मयूरेश उवाच
पार्वतीनदनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम्।
भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम्।।7।।

जो पार्वती जी को पुत्र रूप से आनन्द प्रदान करते और भगवान शंकर का भी आनन्द बढ़ाते हैं, उन भक्तानन्दवर्धन मयूरेश को मैं नित्य नमस्कार करता हूँ।।7।।

मुनिध्येयं मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम्।
समष्टिव्यष्टिरूपं त्वां मयूरेशं नमाम्यहम्।।8।।

मुनि जिनका ध्यान करते हैं, मुनि जिनके गुण गाते हैं तथा जो मुनियों की कामना पूर्ण करते हैं, उन आप समिष्ट-व्यष्टि रूप मयूरेश को मैं प्रणाम करता हूँ।।8।।

सर्वाज्ञाननिहान्तारं सर्वज्ञानकरं शुचिम्।
सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम्।।9।।

जो समस्त वस्तुविषयक अज्ञान के निवारक, सम्पूर्ण ज्ञान के उद्भावक, पवित्र, सत्य-ज्ञान स्वरूप तथा सत्यनामधारी हैं, उन मयूरेश को मैं नमस्कार करता हूँ।।9।।

अनेककोटिब्रह्माण्डनायकं जगदीश्वरम्।
अनन्तविभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम्।।10।।

जो अनेक कोटि ब्रह्माण्ड के नायक, जगदीश्वर, अनन्त वैभवसम्पन्न तथा सर्वव्यापी विष्णु रूप हैं, उन मयूरेश को मैं प्रणाम करता हूँ।।10।।

मयूरेश उवाच
इदं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वपापप्रणाशनम्।
सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम्।।11।।

मयूरेश बोले – यह स्तोत्र ब्रह्मभाव की प्राप्ति कराने वाला और समस्त पापों का नाशक है, मनुष्यों को सम्पूर्ण मनोवांछित वस्तु देने वाला तथा सारे उपद्रवों का शमन करने वाला है।।11।।

कारागृहगतानां च मोचनं दिनसप्तकात्।
आधिव्याधिहरं चैव भुक्तिमुक्तिप्रदं शुभम्।।12।।

सात दिन तक इसका पाठ किया जाए तो कारागार में पड़े हुए मनुष्यों को भी यह छुड़ा लाता है. यह शुभ स्तोत्र आधि अर्थात मानसिक चिन्ता तथा व्याधि अर्थात शारीरिक रोग को भी हर लेता है और भोग एवं मोक्ष प्रदान करता है.

इति श्रीमयूरेशस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

चार धाम यात्रा

पिंकी कुंडू

हरिद्वार से प्रारंभ होने वाली चार धाम यात्रा को पूर्ण भौगोलिक सटीकता के साथ दर्शाया गया है।

इसमें यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ — चारों धामों की वास्तविक स्थिति, ऊँचाई, पर्वतीय भू-आकृति और आपसी दूरी स्पष्ट रूप से दिखाई गई है।

यात्रा मार्ग को वास्तविक सड़कों और ट्रेक पथों के अनुसार दिखाया गया है, जिसमें जानकी चट्टी–यमुनोत्री और गौरीकुंड – केदारनाथ के पैदल मार्ग अलग और साफ़ रूप में उभारे गए हैं।

इसमें सभी नदियाँ सही उद्गम और प्रवाह दिशा के साथ दिखाई गई हैं। — यमुनोत्री ग्लेशियर से यमुना नदी, गंगोत्री ग्लेशियर से भागीरथी नदी, बद्रीनाथ क्षेत्र से बहती अलकनंदा नदी, और केदारनाथ से निकलती मंदाकिनी नदी।

साथ ही देवप्रयाग में भागीरथी और अलकनंदा के संगम से गंगा नदी के निर्माण को भी भौगोलिक रूप से सही स्थान पर दर्शाया गया है।

जीवन तुमसे बड़ा है, और तुम उसका एक छोटा - सा हिस्सा हो,तो फिर क्यों चिंता?

पिंकी कुंडू

हमारी सभी चिंताएँ व्यर्थ हैं, क्योंकि भविष्य अज्ञात होता है वह कभी आपके अपेक्षाओं या भय के अनुसार नहीं आता, उसका अपना आने का ढंग है, और वह आपसे पूछता नहीं है, तो फिर अनावश्यक रूप से चिंतित क्यों होना? ,प्रतीक्षा करिए, और जब वह आए, देखिए जो भी आप कर सकते हैं, करिए हर व्यक्ति सक्षम है वह करने में जो आवश्यक क्षण में करना होता है जीवन आपको किसी भी संभव परिस्थिति के लिए पूरी तरह तैयार करके भेजता है!

आप भ्रमित हो सकते हैं, और जब आप बहते हैं तो केवल ऊँचाइयों की माँग मत करिए — यह बिलकुल मूर्खता है यदि आप सिर्फ ऊँचाइयाँ ही माँगें, तो कैसे बहेंगे? बहना अर्थ गहराइयों में जाना, लेकिन इस प्रकार जाना कि कोई प्रतिरोध न हो बहना अर्थ ऊँचाइयों में उठना, किन्तु इतनी सम्पूर्णता से उठना कि कोई चिपकाव न हो बहने का अर्थ है सदैव चलने के लिए स्वतंत्र रहना — जीवन जहाँ भी ले जाए, जिसके भी अज्ञात लक्ष्य की ओर ले जाए, वहाँ चलते जाना एक बार आपने जीवन के विरुद्ध अपना लक्ष्य तय करना आरंभ किया, तो आप बह नहीं रहे!

यदि जीवन चाहता है कि आप उदास रहिए, उदास रहिए — जीवन अधिक जानता है यदि जीवन चाहता है कि आप रोइये और विलाप करिए, तो रो लीजिए और विलाप करिए — जीवन अधिक जानता है जीवन से अधिक चतुर बनने का प्रयास मत करिए यही मनुष्य की मूर्खता है बस उसके साथ चलिए छोटे बच्चे की भांति बनिए जो अपने पिता के पीछे-पीछे चलता है हो सकता है पिता को भी पता न हो कि वह कहाँ जा रहा है, परन्तु बच्चा प्रसन्न है और गा रहा है, क्योंकि उसे पता है कि पिता उसके साथ है और जानता है कि वे कहाँ जा रहे हैं!

यही धार्मिक मन की सुंदरता है, हम उसी मन को धार्मिक कहते हैं जो जीवन पर विश्वास करता है और कहता है, 'जहाँ भी यह जा रहा है, यह हमसे अच्छा जानता है हम तो अभी आये हैं — बहुत देर से — और जीवन तो सदैव से यहाँ रहा है' मात्र उस पर भरोसा करिए यदि आपके पास चुनाव है, यदि आप कहें कि आप उदासी में नहीं जायेंगे, आपको मात्र प्रसन्नता चाहिए, तो आप बह नहीं सकते बहना तभी संभव है जब आप सब कुछ जैसा है वैसा ही, बिना किसी शर्त के स्वीकार कर लीजिए आप और गहरे जा सकते थे!

यदि थोड़ी-सी यह गहराई में जाने की प्रतिरोधकता न होती गहराई में जाओ, और आप ऊपर आ जायेंगे —जितनी गहराई में जायेंगे, उतनी ही ऊँचाई में उठेंगे यह सदैव एक ही अनुपात में होता है यदि कोई वृक्ष गहराई में नहीं जाना चाहता, अज्ञात धरती — अँधेरी, रहस्यमयी, मृत्यु जैसी— से डरता है, तो वह सूर्य की ओर उठ नहीं सकता यही सभी प्राणियों के बढ़ने का तरीका है वास्तव में परिपक्व व्यक्ति हमेशा तैयार रहता है जहाँ भी जीवन ले जाए, वहाँ जाने के लिए हम इसे परिपक्वता कहता हैं — यह समझ कि जीवन तुमसे बड़ा है, और तुम उसका एक छोटा - सा हिस्सा हो, तो फिर क्यों चिंता? इसका कोई कारण नहीं जीवन के साथ चलिये"!

श्री शिवताण्डव स्तोत्रम्

पिंकी कुंडू*

तांडव भगवान शिव द्वारा किया गया दिव्य नृत्य है। इसे सृजन, संरक्षण और विघटन के ब्रह्मांडीय चक्र का स्रोत माना जाता है।।

तांडव के विभिन्न प्रकार ? तांडव शब्द भगवान शिव के सेवक तंडु से आया है, जिन्होंने शिवजी के आदेश पर नाट्य शास्त्र के रचयिता भरत मुनि को अंगहार और करण का उपयोग करने का निर्देश दिया था, जो मिलकर इस ब्रह्मांडीय नृत्य का निर्माण करते हैं।

।।पुम्नृत्यं तांडवम्, प्राहुः स्त्री नृत्यं लस्यामुच्यते।।

तांडव नृत्य का पुरुषोचित रूप भगवान शिव का है, जो शक्तिशाली और जोश से भरपूर है और अक्सर क्रोध और भय प्रकट करता है, जबकि लास्य अंग देवी पार्वती का स्त्रैण रूप है, जहां की गतिविधियां कोमल और सुंदर होती हैं, जो अक्सर प्रेम और स्नेह को दर्शाती हैं।

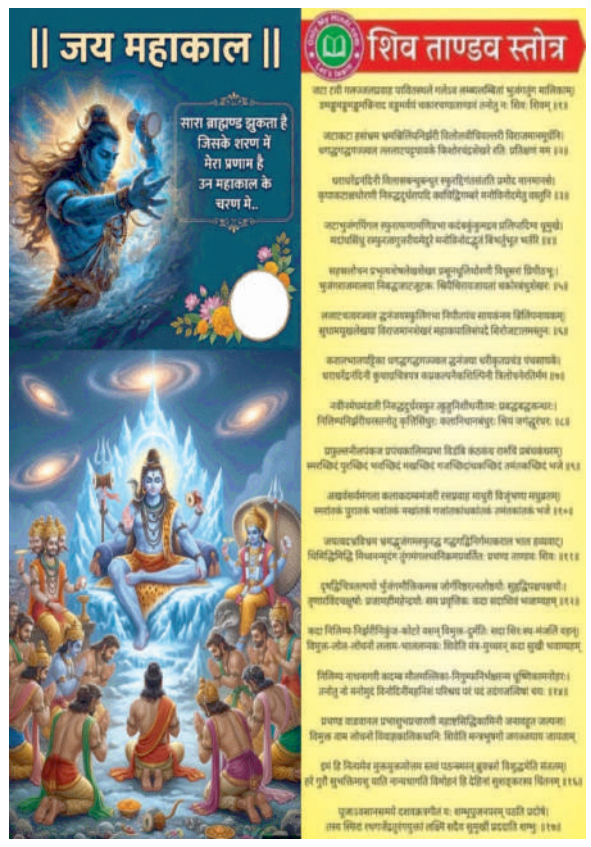

इस नृत्य शैली का गहरा महत्व भगवान शिव को नटराज या नृत्य मूर्ति के रूप में प्रस्तुत करना है।

उनका यह नृत्य शाश्वत ऊर्जा की पांच अभिव्यक्तियों - सृष्टि (सृजन), स्थिति (संरक्षण), संहार (विनाश), तिरोभाव (भ्रम) और अनुग्रह (मुक्ति) का प्रतिनिधित्व करने वाला माना जाता है।

विभिन्न तांडवों का वर्णन भावप्रकाश और नंदिकेश्वर के अभिनय दर्पणम में किया गया है।

भावप्रकाश में तांडव के पांच रूपों का वर्णन किया गया है

1. उच्चंदा, इसमें शक्तिशाली और त्वरित अंगहार, आकाशचारी और भ्रामरी शामिल हैं। रौद्र, भिभत्स और भयानकक इससे जुड़े रस हैं।

२. चंदा, यह भूमिचारी करणों और अंगहारों द्वारा दर्शाया गया है और वीर और रौद्र रस को उद्घाटित करता है।

३. प्रचंड, इस तांडव में शक्तिशाली कर्ण और भ्रामरी कूदना शामिल है। इससे सम्बंधित रस हैं रौद्र और बिभत्स।

4. प्रेरणा और प्रपन्न, ये दोनों शांत स्वभाव के माने जाते हैं और कम बलशाली और पुरुषोचित होते हैं।

नंदिकेश्वर ने अपने अभिनय दर्पणम में सात प्रकार के तांडवों का वर्णन किया है जिनके बारे में माना जाता है कि वे भगवान शिव द्वारा किए गए थे।

1. संध्या तांडव, भगवान शिव द्वारा उस समय किया गया तांडव का एक रूप जब दुनिया लंबे दिन और रात के आने वाले अंधेरे के बीच खड़ी थी। यह सृजन और शास्त्र का नृत्य था। ऐसा माना जाता है कि संध्या तांडव सभी की रक्षा करता है।

२. आनंद तांडव / सदा तांडव, तांडव का यह रूप भगवान शिव ने अपने शिष्यों की रक्षा के लिए किया था। चिदम्बरम मंदिर में देवता को इसी मुद्रा में दर्शाया गया है। छवि में चार हाथों से डमरू, अग्नि, दाहिना हाथ अभय हस्त और बायां हाथ दंड हस्त वरदान देते हुए दर्शाया गया है। बायां पैर कुंचिता पद में है और दाहिना पैर तलवे को रौंदता है। इस आसन को सदा तांडव के नाम से भी जाना जाता है।

३. काली या शक्ति तांडव, यह तांडव शिव और काली द्वारा किया गया प्रकार है। ऐसा माना जाता है कि काली या शक्ति वह ऊर्जा है जिसे शिव से अलग नहीं किया जा सकता है। शिव में सृजन की शक्ति तभी होती है जब वह शक्ति के साथ एकजुट होते हैं।

4. त्रिपुर तांडव, यह तीन राक्षसों, तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युनमाली को मारने के बाद शिव जी द्वारा किया गया तांडव है। उन्होंने पृथ्वी को अपने रथ के रूप में, मेरु को धनुष के रूप में, सूर्य और चंद्रमा को पहियों के रूप में, आदिशेष को रस्सी के रूप में, भगवान विष्णु को तीर के रूप में, चार वेदों को घोड़ों के रूप में और भगवान ब्रह्मा को सारथी के रूप में चलाकर राक्षसों से युद्ध किया। इन राक्षसों का नाश करके उन्होंने तीनों लोकों को बुराई से मुक्त कराया।

5. सती और शिव तांडव, माना जाता है कि यह तांडव शिव और सती द्वारा किया गया था।

* यह पुरुष और महिला के शाश्वत नृत्य का प्रतिनिधित्व करता है, जो पुरुष और प्रकृति की एकता को दर्शाता है।

* यह भाव, नृत्य के दोनों रूपों, तांडव और लास्य को भी दर्शाता है।

* अर्धनारीश्वर तांडव, इस प्रकार का तांडव प्रकृति और ईश्वर के बीच एकता दिखाने के लिए किया जाता था। शिव ने पार्वती को अपने अंश के रूप में लिया और अर्धनारीश्वर का रूप धारण किया - आधा पुरुष और आधा स्त्री।

* संहारा तांडव, यह विनाश और मुक्ति का नृत्य है। ऐसा माना जाता है कि जब सती ने स्वयं को जलाकर भस्म कर दिया था तब शिव ने ऐसा किया था। क्रोध में शिव ने इतनी तीव्रता से नृत्य किया कि देवताओं को तीनों लोकों के विनाश का डर हो गया। जब भगवान ब्रम्हा, भगवान विष्णु और देवताओं ने उनसे अपील की तब जाकर वे सामान्य स्थिति में लौटे।

शिव और पार्वती का प्रतिनिधित्व करने वाली तांडव और लास्य की अवधारणाएं शास्त्रीय नृत्य रूपों और पीढ़ियों से अधिकांश नर्तकियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रही हैं क्योंकि यह ब्रह्मांडीय विकास के पूरे चक्र को शामिल करती है और निरपेक्ष के दोहरे व्यक्तित्व के लिए खड़ी है।

।। श्री शिवताण्डव स्तोत्रम् ।।

(हिंदी अर्थ सहित)

जटा-टवी-गलत्-जल-प्रवाह-पावित-स्थले
गलेऽवलम्ब्य-लम्बितां भुजङ्ग-तुङ्ग-मालिकाम्।
डमड्-डमड्-डमड्-डमन्-निनाद-वड्-डमर्वयम्
चकार चण्ड-ताण्डवम् तनोतु नः शिवः शिवम्।।1।।

जटा-कटा-हसंभ्रम-भ्रमन्-निलिम्प-निर्झरी
विलोल-वीचि-वल्लरी विराजमान-मूर्धनि।
धगद्-धगद्-धगज्-ज्वलत् ललाट-पट्ट-पावके
किशोर-चन्द्र-शेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम।।२।।

धरा-धर-इन्द्र-नन्दिनी विलास-बन्धु-बन्धुर-
स्फुरत्-दृगन्त-सन्तति प्रमोद-मान-मानसे।
कृपा-कटा-क्ष-धारिणी निरुद्ध-दुर्धरा-पदि
क्वचिद्-दिगम्बरे मनो विनोदम् एतु वस्तुनि।।*।।

जटा-भुजङ्ग-पिङ्गल स्फुरत्-फणा-मणि-प्रभा-
कदम्ब-कुङ्कुम-द्रव- प्रलिप्त-दिग्वधू-मुखे।
मदान्ध-सिन्धुर-स्फुरत् त्वगुत्तरीय-मेदुरे
मनो विनोद-अद्भुतम् बिभर्तु भूत-भर्तरि।।4।।

सहस्र-लोचन-प्रभृत्य शेष-लेख-शेखर-
प्रसून-धूलि-धोरणी विधूसर-अङ्घ्रि-पीठ-भूः।
भुजङ्ग-राज-मालया निबद्ध-जाट-जूटकः
श्रिये चिराय जायताम् चकोर-बन्धु-शेखरः।।5।।

ललाट-चत्वर-ज्वलत् धनञ्जय-स्फुलिङ्ग-भा-
निपीत-पञ्च-सायकम् नमन्-निलिम्प-नायकम्।
सुधा-मयूख-लेखया विराजमान-शेखरम्
महा-कपालि-सम्पदे शिरो-जटालम् अस्तु नः।।6।।

कराल-भाल-पट्टिका धगद्-धगद्-धगज्-ज्वलत्
धनञ्जय-धरी-कृत- प्रचण्ड-पञ्च-सायके।
धरा-धर-इन्द्र-नन्दिनी कुचाग्र-चित्र-पत्रक-
प्रकल्पनैक-शिल्पिनि त्रि-लोचने मतिः मम।।7।।

नवीन-मेघ-मण्डली निरुद्ध-दुर्धर-स्फुरत्-
कुहू-निशीथिनी-तमः प्रबन्ध-बन्धु-कन्धरः।
निलिम्प-निर्झरी-धरः तनोतु कृत्ति-सिन्धुरः
कला-निधान-बन्धुरः श्रियम् जगत्-धुरन्धरः।।8।।

प्रफुल्ल-नील-पङ्कज- प्रपञ्च-कालिम-च्छटा-
विडम्बि-कण्ठ-कन्धरम्रुचि-प्रबन्ध-कन्धरम्।
स्मर-च्छिदम् पुर-च्छिदम् भव-च्छिदम् मख-च्छिदम्
गज-च्छिदम् अन्धक-च्छिदम् तम् अन्तक-च्छिदम् भजे।।9।।

अगर्व-सर्व-मङ्गला कलाकदम्ब-मञ्जरी-
रस-प्रवाह-माधुरी विजृम्भणा मधु-व्रतम्।
स्मरान्तकम् पुरान्तकम् भवान्तकम् मखान्तकम्
गजान्तकम् अन्धकान्तकम् तम् अन्तकान्तकम् भजे।।10।।

जयत्-त्वदभ्र-विभ्रम भ्रमद्-भुजङ्ग-मस्फुरत्-
धगद्-धगद्-द्वि-निर्गमत् कराल-भाल-हव्य-वाट्।
धिमिद्धि-मिद्धि-मिद्ध्वनि- मृदङ्ग-तुङ्ग-मङ्गल-
ध्वनि-क्रम-प्रवर्तित प्रचण्ड-ताण्डवः शिवः।।11।।

दृशद्-विचित्र-तल्पयोः भुजङ्ग-मौक्तिक-स्रजोः
गरिष्ठ-रत्न-लोष्ठयोः सुहृद्-विपक्ष-पक्षयोः।
तृणार-विन्द-चक्षुषोः प्रजामही-महेन्द्रयोः
समं प्रवर्तयन् मनः कदा सदाशिवं भजे।।१२।।

कदा निलिम्प-निर्झरी निकुञ्ज-कोटरे वसन्
विमुक्त-दुर्मतिः सदा शिरः-स्थ-मञ्जलिं वहन्।
विमुक्त-लोल-लोचनः ललाम-भाल-लग्नकः
शिवेति मन्त्रम् उच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्।।1*।।

निलिम्प-नाथ-नागरी कदम्ब-मौल-मल्लिका-
निगुम्फ-निर्भर-क्षरन् मधूष्णिका-मनोहरः।
तनोतु नो मनो-मुदम् विनोदिनीं महानिशम्
परिश्रियः परमं पदम् तद्-अङ्ग-त्विषां चयः।।14।।

प्रचण्ड-वाडव-आनल प्रभा-शुभ-प्रचारिणी
महा-अष्ट-सिद्धि-कामिनी जनावहूत-जल्पना।
विमुक्त-वाम-लोचनः विवाह-कालिका-ध्वनिः
शिवेति मन्त्र-भूषकः जगत्-जयाय जायताम्।।15।।

इमं हि नित्यमेव मुक्त-मुक्तोत्तमं स्तवम्
पठन् स्मरन् ब्रुवन् नरः विशुद्धिम् एति सन्ततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिम् आशु याति नान्यथा गतिम्
विमोहनं हि देहिनां तु शङ्करस्य चिन्तनम्।।16।।

पूजा-अवसान-समये दश-वक्त्र-गीतं
यः शम्भु-पूजनम् इदं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथ-गज-इन्द्र- तुरङ्ग-युक्ताम्
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः।।17।।

।।इति श्री-रावण-कृतं शिव-ताण्डव-स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

हिंदी भावार्थ-

जिन भगवान शिव की जटाओं से बहने वाला जल पवित्र करता है, जिनके गले में लटकी हुई विशाल सर्पमाला शोभित है, जिनके डमरू की गूंज से भयंकर ताण्डव उत्पन्न होता है- वे शिव हमारे लिए मंगल करें।

जिनकी जटाओं में देवताओं की पवित्र नदियाँ चंचल होकर बहती हैं, जिनके मस्तक पर प्रज्वलित अग्नि शोभा देती है, और जिनके शीश पर बाल चंद्रमा विराजमान है- ऐसे शिव में मेरा मन हर क्षण अनुरक्त रहे।

जो पर्वतराज की पुत्री पार्वती के साथ क्रीड़ा करते हैं, जिनकी करुणा दृष्टि से कठिन संकट भी शांत हो जाते हैं, जो दिगंबर हैं- ऐसे शिव में मेरा मन आनंद पाए।

जिनकी जटाओं में सर्प लिपटे हैं, जिनके शरीर पर सिंदूर-सदृश तेज फैला है, जिनका पराक्रम उन्मत्त हाथी के समान है- ऐसे भूतों के स्वामी शिव मेरे मन को अद्भुत आनंद दें।

जिनके चरणों की धूल से इन्द्र सहित देवता सुशोभित होते हैं, जिनके सिर पर सर्पराज माला की भांति विराजते हैं, और जो चंद्रमा को धारण करते हैं- वे शिव दीर्घकाल तक कल्याण करें।

जिनके ललाट की अग्नि कामदेव को भस्म करने वाली है, जिनके मस्तक पर अमृत की किरणें शोभा देती हैं, और जो महाकपाली हैं- वे शिव हमें समृद्धि प्रदान करें।

जिनके भाल की अग्नि अत्यंत भयंकर है, जिन्होंने पार्वती के वक्ष पर चित्रकारी जैसी शोभा रची है, और जिनके तीन नेत्र हैं- ऐसे शिव में मेरी बुद्धि सदा लगी रहे।

जो घनघोर बादलों के समान गंभीर हैं, जिनके कंठ में विष शोभायमान है, जो देव नदियों को धारण करते हैं, और जो जगत का भार वहन करते हैं- वे शिव हमें ऐश्वर्य प्रदान करें।

जो नील कमल के समान कंठ वाले हैं, जिन्होंने काम, त्रिपुर, भव, यज्ञ, गजासुर, अंधक और यम का भी नाश किया- मैं उन संहारक शिव का भजन करता हूँ।

जो समस्त मंगलों के मूल हैं, जिनकी कला मधुर रस से भरी है, जो काम, भव, यज्ञ, गज और अंधक के संहारक हैं- मैं उन महांतक शिव को भजता हूँ।

जिनका उग्र ताण्डव डमरू की भयानक ध्वनि से आकाश को कंपा देता है, जिनकी जटाओं में सर्प लहराते हैं- ऐसे प्रचण्ड नृत्य करने वाले शिव की जय हो।

जो मित्र और शत्रु, तिनके और कमल, राजा और प्रजा- सबको समान दृष्टि से देखते हैं, ऐसे सदाशिव को मैं कब भज पाऊँगा?

कब मैं देव नदियों की गुफाओं में निवास करूँगा, विकारों से मुक्त होकर, सिर पर अंजलि रखकर, और "शिव" मंत्र का जप करते हुए सुखी हो पाऊँगा?

जो देवांगनाओं से सुशोभित हैं, जिनकी जटाओं से मधुर सुगंध फैलती है, वे शिव हमारे मन को दिन-रात आनंद प्रदान करें और हमें परम पद दें।

जिनकी शक्ति प्रचण्ड अग्नि के समान है, जो अष्ट सिद्धियों को देने वाले हैं, जिनके विवाह का नाद मंगलकारी है- वे शिव जगत की विजय के लिए प्रकट हों।

जो मनुष्य इस उत्तम स्तोत्र का नित्य पाठ, स्मरण और उच्चारण करता है, वह शुद्ध हो जाता है और शीघ्र ही गुरु और हरि में सच्ची भक्ति प्राप्त करता है।

जो व्यक्ति प्रदोष काल में इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसे भगवान शिव स्थिर ऐश्वर्य, वाहन, संपत्ति और सुंदर लक्ष्मी प्रदान करते हैं।

*मंगलम भगवान शंभू, मंगलम रिषीबध्वजा मंगलम पार्वती नाथो, मंगलाय तनो हर

ॐ नमः पार्वती पतये, हर हर महादेव

27 जनवरी, 2026 को सभी बैंकों में अखिल भारतीय हड़ताल का आह्वान

संजय कुमार बाठला

हम आपकी जानकारी और सभी राज्य/जिला स्तरों पर कार्यान्वयन के लिए दिनांक 01.01.2026 के यूएफबीयू परिपत्र यूएफबीयू/2026/01 का पाठ पुनः प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रिय साथियों,

हमारी मांग हैः 5 दिन की बैंकिंग व्यवस्था लागू की जाए। हमारा X/Twitter अभियान सराहनीय रूप से सफल रहा।

यूएफबीयू का आह्वानः 27 जनवरी, 2026 को हड़ताल पर रहें

हम देशभर में अपने सभी संघों और सदस्यों को हमारे आंदोलन कार्यक्रम के प्रति उनकी उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया के लिए बधाई देते हैं, जिसमें 5 दिन की बैंकिंग शुरू करने और शेष दो शनिवारों को छुट्टी घोषित करने की मांग की गई है, जैसा कि आईबीए और यूएफबीयू के बीच सहमति हुई थी और मार्च 2024 में हमारे वेतन संशोधन समझौते में प्रतिबद्धता जताई गई थी।

सभी केंद्रों में कर्मचारियों और अधिकारियों ने प्रदर्शनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सभी सदस्यों ने बैज पहनने का कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न किया। X/Twitter अभियान भी बेहद सफल रहा। रिपोर्ट के अनुसार, हमारे हैशटैग #5DayBankingNow को 18,80,027 इंप्रेशन मिले और दोपहर 3:30 बजे तक 3,00,000 से अधिक ट्वीट/पोस्ट हुए। हम अपनी सभी इकाइयों और सदस्यों को इस सराहनीय सफलता पर बधाई देते हैं।

लेकिन, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि सरकार हमारे कार्यक्रमों और हमारी वास्तविक मांग पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रही है। मानव समय का कोई नुकसान नहीं होगा क्योंकि हमने सोमवार से शुक्रवार तक प्रतिदिन 10 मिनट अतिरिक्त काम करने पर सहमति जताई है। आरबीआई, एलआईसी, जीआईसी आदि पहले से ही सप्ताह में 5 दिन काम कर रहे हैं। विदेशी मुद्रा बाजार, मुद्रा बाजार, स्टॉक एक्सचेंज आदि शनिवार को बंद रहते हैं। केंद्र और राज्य सरकार के कार्यालय भी शनिवार को बंद रहते हैं। इसलिए बैंकों द्वारा 5 दिन की बैंकिंग शुरू न करने का कोई कारण नहीं है। फिर भी, सरकार मार्च 2024 में द्विपक्षीय समझौते में स्वीकृत 5 दिन की बैंकिंग शुरू करने के लिए आईबीए की सिफारिशों पर कोई कार्रवाई नहीं कर रही है।

अतः 27 जनवरी, 2026 को सभी बैंकों में अखिल भारतीय हड़ताल का आह्वान करने का निर्णय लिया गया है। आगे बढ़ें और हड़ताल को सफल बनाएं।

ALL INDIA BANK OFFICERS' CONFEDERATION
(Registered under the Trade Unions Act 1926, Registration No.3427/Delhi)
C/o State Bank of India Officers' Association (North-Eastern Circle)
State Bank of India, LHO, Dispur, Guwahati, Assam – 781006
9957563825 @aiboc_in
aiboc.sectt@gmail.com ; rupamr.aiboc@gmail.com

Circular No. 2026/02 Date: 04.01.2026

To All Affiliates (Please Circulate)

We reproduce the text of UFBU Circular UFBU/2026/01 dated 04.01.2026 for your information and implementation at all state/ district levels.

Dear Comrades,

We Demand : Introduction of 5 Days Banking Our X/Twitter campaign a commendable success

UFBU Call : Observe Strike on 27th January, 2026

We congratulate all our unions and members all over the country for their enthusiastic response to our agitational programme demanding introduction of 5 Days Banking and declaring the remaining two Saturdays as holidays as agreed between IBA and UFBU and as committed in our wage revision Settlement in March, 2024.

Demonstrations have been largely participated by the employees and officers in all the centres. Badge Wearing was successfully implemented by all our members. The X/Twitter campaign was also a superhit programme. As per reports, our Hashtag **#5DayBankingNow** had **18,80,027** impressions and there were more than **3,00,000** tweets/posts (till 03-30 PM). We congratulate all our units and members on this commendable success.

But, it is unfortunate that the Government is not responding to our programmes and our genuine demand. There would be no loss of manhours because we have agreed for extra 40 minutes working per day from Monday to Friday. Already RBI, LIC, GIC, etc., are working for 5 days a week. Foreign exchange market, money market, stock exchanges, etc. are not working on Saturdays. Central and State Government offices are not working on Saturdays. Hence there is no reason why banks cannot introduce 5 days banking. But yet, Government is sitting tight on the recommendations of IBA for introduction of 5 days banking which was agreed in the bipartite settlement in March, 2024.

Hence it has been decided to give the call for All India Strike in all the Banks on 27th January, 2026. March on and make the strike a success.

With revolutionary greetings,
Comradely Yours,

Rupam Roy
General Secretary

Page 1 of 1

भारतीय रिज़र्व बैंक और दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार (जीएनसीटीडी) के साथ भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 21ए की उपधारा (1) के अंतर्गत किया समझौता

संजय कुमार बाठला

दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सरकार के साथ समझौता, भारतीय रिज़र्व बैंक ने दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार (जीएनसीटीडी) के साथ भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 21ए की उपधारा (1) के अंतर्गत एक समझौता किया है।

यह समझौता 9 जनवरी, 2026 से प्रभावी होगा। इसके तहत भारतीय रिज़र्व बैंक जीएनसीटीडी के सामान्य बैंकिंग व्यवसाय का संचालन करेगा और उसके रुपये में सार्वजनिक ऋण का प्रबंधन करेगा।

प्रेस प्रकाशनी PRESS RELEASE

भारतीय रिज़र्व बैंक
RESERVE BANK OF INDIA

Department of Communication, Central Office, Shahid Bhagat Singh Marg, Fort, Mumbai - 400 001

January 05, 2026

Agreement with Government of National Capital Territory of Delhi

Reserve Bank of India has entered into an Agreement under sub-section (1) of Section 21A of the Reserve Bank of India Act, 1934 with the Government of National Capital Territory of Delhi (GNCTD). Under the agreement, which shall be effective from January 09, 2026, the Reserve Bank of India shall carry on the general banking business of GNCTD and manage its rupee public debt.

Press Release: 2025-2026/1857

(Brij Raj)
Chief General Manager

गाजियाबाद में नर्सरी से कक्षा-8 तक के समस्त विद्यालय दिनांक 07 जनवरी 2026 से 10 जनवरी 2026 तक विद्यार्थियों हेतु पूर्णतया बन्द रहेंगे।

संजय कुमार बाठला

जनपद में अत्यधिक शीतलहर ठंड के दृष्टिगत जिलाधिकारी महोदय, गाजियाबाद द्वारा दिये गये निर्देश के अनुपालन में जनपद गाजियाबाद में नर्सरी से कक्षा-8 तक के समस्त प्राइवेट सी०बी०एस०ई०, आई०सी०एस०ई०, यू०पी०बोर्ड व अन्य बोर्ड से सम्बद्धता प्राप्त समस्त विद्यालय दिनांक 07 जनवरी 2026 से 10 जनवरी 2026 तक विद्यार्थियों हेतु पूर्णतया बन्द रहेंगे।

अतः समस्त प्राइवेट सी०बी०एस०ई०, आई०सी०एस०ई०, यू०पी०बोर्ड व अन्य बोर्ड से सम्बद्धता प्राप्त समस्त विद्यालय के प्रधानाचार्यों / प्रधानाध्यापकों को आदेशित किया जाता है कि उक्त आदेशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करें।

कार्यालय- जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, गाजियाबाद।

पत्रांक- 9133- 42 / बेसिक शिक्षा/2025-26/ दिनांक-06-01-2026

कार्यालय आदेश

जनपद में अत्यधिक शीतलहर/ठंड के दृष्टिगत जिलाधिकारी महोदय, गाजियाबाद द्वारा दिये गये निर्देश के अनुपालन में जनपद गाजियाबाद में नर्सरी से कक्षा-8 तक के समस्त प्राइवेट सी०बी०एस०ई०, आई०सी०एस०ई०, यू०पी०बोर्ड व अन्य बोर्ड से सम्बद्धता प्राप्त समस्त विद्यालय दिनांक 07 जनवरी 2026 से 10 जनवरी 2026 तक विद्यार्थियों हेतु पूर्णतया बन्द रहेंगे।

अतः समस्त प्राइवेट सी०बी०एस०ई०, आई०सी०एस०ई०, यू०पी०बोर्ड व अन्य बोर्ड से सम्बद्धता प्राप्त समस्त विद्यालय के प्रधानाचार्यों / प्रधानाध्यापकों को आदेशित किया जाता है कि उक्त आदेशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करें।

(ओ०पी० यादव)
जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी,
गाजियाबाद।

पृ०सं०- 9133- 42 / बेसिक शिक्षा/2025-26/तद्दिनांक।
प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित-
1-जिलाधिकारी, गाजियाबाद।
2-मुख्य विकास अधिकारी गाजियाबाद।
3-अपर जिलाधिकारी (नगर/प्रशासन/वित्त) गाजियाबाद।
4-नगर मजिस्ट्रेट, गाजियाबाद।
5-उप जिलाधिकारी, सदर/मोदीनगर / लोनी।
6-जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी गाजियाबाद।
7-जिला समाज कल्याण अधिकारी गाजियाबाद।
8-जिला विद्यालय निरीक्षक गाजियाबाद।
9- समस्त प्राइवेट, सी०बी०एस०ई०, आई०सी०एस०ई०, यू०पी०बोर्ड व अन्य बोर्ड से सम्बद्धता प्राप्त विद्यालय के प्रधानाचार्यों / प्रधानाध्यापकों को अनुपालनार्थ।
10-निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, गाजियाबाद।

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी,
गाजियाबाद।

नये वर्ष पर भाव सुमन

आशा की नव किरण बिखेरे
आया भू पर नूतन वर्ष।
संदेशा देता है 'शंकर'
लाओ मन में अपने हर्ष।

सुख समृद्धि की वर्षा हो नित
चारों तरफ रहे सद्भाव।
बंधे एकता के बंधन में
कहीं न हो भू पर बिखराव।

कटुता का साम्राज्य खत्म हो
मानवता का दीप जले।
नये वर्ष में द्वेष भुलाकर
एक दूजे से गले मिलें।

हो असत्य की सदा पराजय
सच्चाई की हो नित जीत
और प्रेम की भाव भूमि पर
गायें मानवता का गीत।

करें मुहब्बत की वर्षा हम
नये वर्ष का है पैगाम।
हम इतिहास पुरुष बन जायें
करें मुल्क में ऐसा काम।

शंकर जी सिंह, कवि/साहित्यकार
सम्पति_संभागीय परिवहन अधिकारी–सहारनपुर मंडल।

श्रीहित उत्सव चेरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) वृन्दावन के द्वारा ऋषि वाल्मीकि प्राथमिक स्कूल में वृक्षारोपण

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। छीपी गली स्थित प्रियावल्लभ कुंज में चल रहे ठाकुरश्री विजय राधावल्लभ लाल व ठाकुरश्री प्रियावल्लभ लाल महाराज का द्वादश दिवसीय पाटोत्सव अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ चल रहा है।जिसके अन्तर्गत श्रीहित उत्सव चेरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) वृन्दावन के द्वारा पुराना बजाजा स्थित ऋषि वाल्मीकि प्राथमिक स्कूल में वृक्षारोपण किया गया।

श्रीहित उत्सव चेरिटेबल ट्रस्ट के संरक्षक श्रीहित विष्णु मोहन नागार्चव अध्यक्ष श्रीहित ललित वल्लभ नागार्चने कहा कि वृक्ष शुद्ध वातावरण व ऑक्सीजन देकर हमें जीवन प्रदान करते हैं।पर्यावरण शुद्ध होने से हमारे स्वास्थ्य पर वायु प्रदूषण का प्रभाव नहीं पड़ता है।इसीलिए प्रत्येक मनुष्य को वृक्षारोपण करना चाहिए।

महोत्सव के समन्वयक रयूपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी व सचिव आचार्य रसिक वल्लभ नागार्च ने कहा कि हमारा ट्रस्ट गौ सेवा, सन्त सेवा, जीव सेवा व धाम सेवा आदि के लिए कृत संकल्पित है। इसी के अंतर्गत आज हमारे ट्रस्ट के द्वारा वृक्षारोपण किया गया है। इस अवसर पर प्रधानाध्यापक रोहित कुमार शिवहरे (प्राथमिक विद्यालय ऋषि वाल्मीकि, वृन्दावन), आरती शर्मा, शिवानी, अतुल चौबे, ज्योति चौबे (भोपाल), राजेंद्र शौति, रीता श्रौति, चंदा श्रौति (इंदौर), सुनील जोशी (मंडला, मध्य प्रदेश), कल्पना जोशी,, सुभाष चंद्र शर्मा (डी.पी.ओ., हरियाणा), शशि शर्मा (नागपुर), पातीराम झारिया, सुनील भाईजी, माखनलाल झारिया, विकास शर्मा, शिवानी, निकुंज शर्मा, हितांशु जोशी, हितवल्लभ नागार्च, तरुण मिश्रा, भरत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा माह के अंतर्गत आयोजित किया गया कैंप

संवाददाता परिवहन विशेष

1 जनवरी 2026 से 31 जनवरी 2026 तक सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा माह के अंतर्गत बृज यातायात एवं पर्यावरण एवं जन जागरूकता समिति रजि उत्तर प्रदेश के द्वारा परिवहन विभाग मथुरा के साथ मिलकर बीएसए तिराहे पर आयोजित किया जा रहा है यातायात जन जागरूकता कैम्प।

कैंप का शुभारंभ भाजपा नेता एवं पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष पंकज प्रकाश ने किया। इस मौके पर यातायात नियमों का पालन नहीं करने वाले वाहन चालकों को रोककर गुलाब का फूल देते हुए यातायात नियमों का पालन करने का अनुरोध किया जा रहा है।

पवन चौहान इंचार्ज पुलिस चौकी बीएसए ने जिन गाड़ियों में रिफ्लेक्टर नहीं लगे थे उन गाड़ियों में निशुल्क रिफ्रैक्टर लगवाया।

समिति के संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने कहा हमारी संस्था द्वारा आज परिवहन विभाग पहल पर जनजागरूकता कैम्प आयोजित किया गया है जिससे लोगों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक कर सकें।

महिला टीम ने अपनी सहभागिता के साथ सक्रिय भूमिका निभाते हुए लोगों को जागरूक किया । महिला प्रदेश अध्यक्ष श्वेता शर्मा ने कहा आज हमारे द्वारा मोटर वाहन नियम ना मानने वाले वाहन चालकों को रोककर एक गुलाब का फूल भेंट करके यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने के साथ हेलमेट का महत्व बताया जा रहा है, और जो वाहन चालक यातायात नियमों का पालन कर रहे हैं उनको महिलाओं के द्वारा चॉकलेट देकर प्रोत्साहित किया जा रहा है। जिससे लोग यातायात नियमों के प्रति सजग और जागरूक रह सके ।

जागरूकता कैंप में उप निरीक्षक रोहित कुमार, विधायक प्रतिनिधि अनिल रावत, न्याय बाल बोर्ड की सदस्य वंदना शर्मा, ममता शर्मा, रेखा शर्मा ,प्रतिमा सिंह, गीता सिंह, वंदना सक्सेना, अर्जुन सोलंकी गौरव सक्सेना आदि मुख्य रूप से शामिल रहे।

सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा अभियान के अंतर्गत वाहन चालकों को जागरुक करते हुए भाजपा नेता पंकज प्रकाश, संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित, महिला प्रदेश अध्यक्ष श्वेता शर्मा चौकी इंचार्ज पवन चौहान व अन्य द्वारा वाहन चालकों के साथ मिलकर फोटो परिचय किया।

आप इज्जत कीजिए,आपको इज्जत मिलेगी.आप प्यार दीजिए,आपको प्यार मिलेगा.आप दूसरे की तरक्की में खुश रहो,आपको हमेशा तरक्की मिलेगी,जो आप दोगे,वही आपको वापस मिलेगा.

के के छाबड़ा, संवाददाता परिवहन विशेष

(जीवन में आप अपने कर्म अच्छे करो,बाकी उसका क्या और कब रिजल्ट आएगा,यह आपके हाथ में नहीं है.इसका एक फायदा मिलेगा.आपको शांति मिलेगी और रात को नींद अच्छी आएगी.आपकी आत्मा पर किसी किस्म का बोझ नहीं होगा.कल एक बहुत ही बड़ा तजुर्बा हासिल हुआ.क्योंकि कहते हैं जीवन में इंसान हर पल कुछ न कुछ सीखता ही रहता है,जिन पर आपको अपने से अधिक विश्वास होता है,वही लोग आप को तोड़ने में कभी कोई अवसर नहीं छोड़ते.आप अगर कभी भी जीवन में कोई चोट खाएंगे,तो वह चोट मारने वाला आपका अपना ही होगा.कहते हैं(आप गैरों की बात करते हैं,हमने तो अपने भी आजमाएं हैं,लोग कांटो से बच कर निकलते हैं,हमने फूलों से जख्म खाए हैं) क्योंकि अपनों को आपके सारे रहस्य पता होते हैं और वह बिना किसी डर के आपको चोट मारेगा.यही सच्चाई है.थोड़ी कड़वी है.लेकिन है सच.)

(कहने को तो जीवन में बहुत कुछ होता है,लेकिन इंसान कहे तो कहे किससे,क्योंकि आजकल कोई भी किसी की बात सुनने को तैयार नहीं होता.कहने से अच्छा है,इंसान खामोश ही रहे,क्योंकि जो इंसान खामोश होता है,लोग उसके बोलने का इंतजार करते हैंऔर जब वह इंसान बोलता है,तो लोग बड़े ध्यान से,उस इंसान की बात को सुनते हैं.)

मौन हूँ मैं काव्य संग्रह डॉ अमित कुमार बिजनौरी

संवाददाता परिवहन विशेष

बिजनौर - युवा कवि एवं साहित्यकार एवं नव साहित्य परिवार भारत के संस्थापक/नव साहित्य ई पत्रिका के संपादक डॉ. अमित कुमार बिजनौरी के प्रथम काव्य संग्रह 'मौन हूँ मैं' ?...के प्रकाशित होते ही साहित्यिक जगत में हर्ष और उत्साह का वातावरण बन गया है।

'मौन हूँ मैं?... काव्य संग्रह के प्रकाशन पर उन्हें देश-विदेश के साहित्यप्रेमियों, बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों और कवियों-लेखकों ने इस उपलब्धि को ग्रामीण प्रतिभा की सशक्त अभिव्यक्ति पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बधाइयाँ और शुभकामनाएँ दी हैं। जिनमें प्रमुख हैं - यमराज मित्र सुधीर श्रीवास्तव(गोण्डा), डा. शिवनाथ सिंह शिव (रायबरेली), आचार्य धर्मेन्द्र (राष्ट्रीय अध्यक्ष -आचार्यकुल), संगीता चौबे पंखुड़ी (कुवैत), अमृत विसारिया (दुबई), डा. रामकरण साहू 'सजल' (बांदा), सुभाष चौरसिया (महोबा), डा. राजीव रंजन मिश्र,बुद्धि सागर गौतम एवं जालिम प्रसाद (गोरखपुर), अरविंद कुमार अनोखे, अवधेश कुमार श्रीवास्तव एवं डा. ओम प्रकाश मिश्र 'मधुब्रत' (उन्नाव), नरेश चंद्र द्विवेदी (फिरोजाबाद), अनिल राही (ग्वालियर), वीणा सिन्हा (न्यू जर्सी), निधी बोथरा जैन (इस्लामपुर,प. ब.), डॉ अनिल शर्मा अनिल (धामपुर), डा. आर. के. तिवारी 'मतंग' एवं मनोरमा मिश्रा 'मनु' (अयोध्या), डा. रत्नेश्वर सिंह, डा. अणिमा श्रीवास्तव (पटना), जितेन्द्र कौशिक, राखी उपासना कौशिक (धामपुर बिजनौर) आदि प्रमुख हैं।

मूलतः ग्रामीण परिवेश में रचे-बसे डा. बिजनौरी की रचनाओं में गाँव की मिट्टी की सोंधी खुशबू, आम जनजीवन की पीड़ा, संघर्ष, संवेदना और मानवीय मूल्यों की गहरी झलक देखने को मिलती है। 'मौन हूँ मैं' केवल कविताओं का संग्रह भर नहीं है, बल्कि समय, समाज और मनुष्य के भीतर चल रहे द्वंद्व का सजीव दस्तावेज है। इसमें मौन को प्रतीक बनाकर कवि ने सामाजिक विसंगतियों, आत्मसंघर्ष, प्रेम, करुणा और आत्मबोध जैसे विषयों को अत्यंत सधे हुए शब्दों में प्रस्तुत किया है।

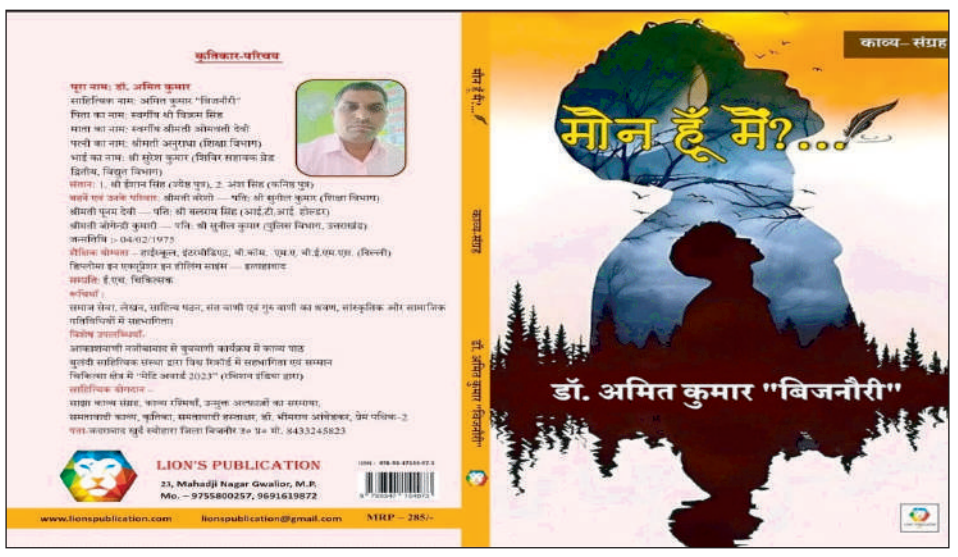

काव्य संग्रह में संकलित कविताएँ सरल भाषा में होते हुए भी गहन अर्थ लिए हुए हैं। पाठक इनमें अपने जीवन के अनुभवों की प्रतिध्वनि महसूस कर सकता है।

आलोचकों का मानना है कि डॉ. अमित कुमार बिजनौरी की यह पुस्तक साहित्य जगत में मील का पत्थर साबित होगी।

भिवानी के लोहारू के तथाकथित किसान नेता रवि आजाद के विरुद्ध दर्ज पोक्सो व एससी एसटी एक्ट के मामले में उसकी जमानत याचिका पर भिवानी की अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश मैडम सुरुचि अत्रेचा की अदालत में सुनवाई हुई

लोहारू। किसान नेता रवि आजाद के विरुद्ध दर्ज पोक्सो व एससी एसटी एक्ट के मामले में टीम रजत कल्सन ने पीड़ित पक्ष की तरफ से पैरवी की तथा अदालत को बताया कि आरोपी के विरुद्ध नाबालिक दलित छात्रा के साथ छेड़खानी व उसका अपहरण करने के प्रयास जैसे गंभीर आरोप है।

आरोपी ने अपने खिलाफ दर्ज मुकदमे में समझौते का दबाव बनाने के लिए 15 दिसंबर को लोहारू में खाप पंचायत का आयोजन किया, जिसमें पीड़ित परिवार पर दबाव बनाने की कोशिश की गई। पीड़ित परिवार पर रुपए लेकर मुकदमा दर्ज कराने के मनगढ़ंत व झूठे आरोप लगाए गए तथा जबरन पीड़ित परिवार को उक्त पंचायत में बुलाने का प्रयास किया गया।

हमने अदालत को बताया कि उक्त पंचायतियों ने खुद की पंचायत को अदालत मानते हुए आरोपी को मौके पर निर्दोष करार दे दिया, यही नहीं इस पंचायत में पीड़ित परिवार की नाम व पहचान उजागर की गई, जो पोक्सो एक्ट के तहत गंभीर अपराध है।

जमानत याचिका पर सुनवाई के दौरान जांच अधिकारी डीएसपी पेश हुए। आरोपी की तरफ से पेश वकीलों ने अदालत से अपनी बहस में कहा कि आरोपी के विरुद्ध अपहरण में छेड़खानी के आरोप झूठे हैं तथा पुलिस की जांच में झूठे पाए गए हैं, जिस पर अदालत ने जब इस बारे में जांच अधिकारी से बात की तो उन्होंने अदालत को बताया कि आरोपी के विरुद्ध पीड़िता ने मजिस्ट्रेट के सामने दर्ज बयानों में आरोपी पर गंभीर आरोप लगाए हैं तथा उस के विरुद्ध आरोपो की जांच जारी है तथा गाड़ी में बिठाकर छेड़खानी करने तथा अपहरण करने के प्रयास के बारे में अभी तक उसे क्लीन चिट नहीं दी गई है।

हमने अदालत को बताया की कुछ यूट्यूब चैनल और खाप पंचायत के नुमाइंदों ने अपने फेसबुक पेज व यूट्यूब चैनलों पर पीड़ित की पहचान उजागर करने का काम किया है उनके विरुद्ध भी सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए।

जिस पर अदालत ने जांच अधिकारी डीएसपी को निर्देश दिए कि इस मामले में जिन भी यूट्यूब चैनलों ने पीड़ित की पहचान उजागर की है उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए तथा इस बारे में डीएसपी व जांच अधिकारी को 9 जनवरी तक स्टेटस रिपोर्ट पेश करने के आदेश दिए गए हैं।

आज अदालत ने आरोपी की जमानत याचिका पर फैसला नहीं दिया तथा फैसले के लिए 9 जनवरी की तारीख मुकर्रर की है।

रजत कल्सन अधिवक्ता

विकसित भारत – जी राम जी अधिनियम 2025

क्या है यह कानून और यूपी सरकार इसे क्यों ज़रूरी बता रही है

संगिनी घोष

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विकसित भारत–जी राम जी अधिनियम 2025 को लागू करने की घोषणा की है। राज्य सरकार के अनुसार, यह कानून ग्रामीण रोजगार को मज़बूत करने, गांवों में स्थायी संपत्तियों का निर्माण करने और शासन व्यवस्था में पारदर्शिता लाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। सरकार का कहना है कि यह अधिनियम पहले से चल रही ग्रामीण रोजगार योजनाओं की कमियों को दूर करने और अल्पकालिक राहत की जगह दीर्घकालिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने के उद्देश्य से लाया गया है।

इस नए कानून की ज़रूरत को समझने के लिए इसके पुराने संदर्भ को जानना ज़रूरी है। पिछले लगभग बीस वर्षों से देश में ग्रामीण रोजगार मुख्य रूप से महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) के तहत चल रहा था, जिसे 2005 में लागू किया गया था। मनरेगा के तहत ग्रामीण परिवारों को साल में 100 दिन का रोज़गार देने की गारंटी थी और इस योजना ने कठिन समय में लाखों परिवारों को आर्थिक सहारा दिया।

हालांकि, समय के साथ मनरेगा के क्रियान्वयन में कई समस्याएँ सामने आईं, खासकर उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्यों में। मज़दूरी भुगतान में देरी, फर्जी या निष्क्रिय जॉब कार्ड, निगरानी की कमी और भ्रष्टाचार जैसी शिकायतें आम होती गईं। इसके अलावा, कई बार कराए गए कार्य अस्थायी होते थे, जिनसे गांवों को लंबे समय तक कोई ठोस लाभ नहीं मिल पाता था। राज्य सरकार का मानना है कि धीरे-धीरे यह योजना विकास के बजाय केवल मजदूरी देने तक सीमित रह गई।

इन्हीं कमियों को दूर करने के उद्देश्य से विकसित भारत–जी राम जी अधिनियम 2025 लाया गया है। इस नए कानून के तहत ग्रामीण परिवारों के लिए रोजगार की गारंटी को 100 दिनों से बढ़ाकर 125 दिन कर दिया गया है, जिससे ग्रामीण लोगों को अधिक काम के अवसर मिल सकें। कानून की एक अहम विशेषता साप्ताहिक मजदूरी भुगतान है, साथ ही भुगतान में देरी होने पर मुआवज़े का भी प्रावधान किया गया है। यह पुराने सिस्टम की सबसे बड़ी शिकायतों में से एक का सीधा समाधान माना जा रहा है।

इस अधिनियम में स्थायी परिसंपत्तियों के निर्माण पर विशेष ज़ोर दिया गया है। अब अस्थायी या बार-बार दोहराए जाने वाले कामों के बजाय जल संरक्षण, ग्रामीण सड़कों, नालियों, सामुदायिक भवनों, बाजारों और अन्य बुनियादी ढांचे के निर्माण को प्राथमिकता दी जाएगी। सरकार का मानना है कि इससे गांवों की अर्थव्यवस्था मज़बूत होगी और लोगों को लंबे समय तक लाभ मिलेगा।

पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए इस कानून में बायोमेट्रिक हाज़िरी, कार्यस्थलों की जियो-टैगिंग, डिजिटल निगरानी और मजदूरी का सीधा बैंक खातों में भुगतान अनिवार्य किया गया है। इसके अलावा, नियमित सामाजिक ऑडिट और शिकायत निवारण प्रणाली भी शामिल की गई है, ताकि श्रमिक अपनी समस्याएँ समय पर दर्ज करा सकें।

इस अधिनियम के तहत ग्राम सभा और पंचायतों को भी अधिक अधिकार दिए गए हैं। स्थानीय निकायों की भूमिका को मज़बूत किया गया है ताकि गांवों की ज़रूरतों के अनुसार योजनाओं का चयन और क्रियान्वयन हो सके।

हालांकि विपक्षी दलों ने इस कानून को लेकर सवाल उठाए हैं और पुराने ढांचे को बदलने पर आपत्ति जताई है, लेकिन उत्तर प्रदेश सरकार का कहना है कि यह फैसला पिछले अनुभवों से सीख लेकर लिया गया है। सरकार के अनुसार, यह कानून काम के अधिकार को खत्म करने के लिए नहीं, बल्कि ग्रामीण रोजगार को अधिक प्रभावी, पारदर्शी और विकास-केंद्रित बनाने के लिए है।

कुल मिलाकर, विकसित भारत–जी राम जी अधिनियम 2025 को एक ऐसे कदम के रूप में पेश किया जा रहा है, जो आत्मनिर्भर और विकसित ग्रामीण भारत के लक्ष्य को आगे बढ़ाने में मदद करेगा, जहां रोजगार सृजन के साथ-साथ बुनियादी ढांचे और सुशासन पर भी बराबर ध्यान दिया जाएगा।

श्रीमद्भागवत कथा को अपने जीवन में आत्मसात करने से ही हमारा कल्याण संभव है : श्रीहित ललित वल्लभ

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रमणरेती रोड़ स्थित फोगला आश्रम में श्रीहित उत्सव चैरिटेबल ट्रस्ट, वृन्दावन एवं श्रीमद्भागवत कथा परिवार, रायपुर (छत्तीसगढ़) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ठाकुरश्री विजय राधावल्लभ लाल व ठाकुरश्री प्रियावल्लभ लाल महाराज के द्वादश दिवसीय 212वें पाटोत्सव के अंतर्गत चल रहे 170 श्रीमद्भागवत के मूल पारायण व श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव हवन की पूर्णाहूति, श्रीमद्भागवत ग्रंथ पूजन, विप्र पूजन व भंडारे के साथ सम्पन्न हुआ।

इससे पूर्व व्यास पीठ पर आसीन श्रीहित ललित वल्लभ नागार्च ने अपनी रसमयी वाणी के द्वारा देश-विदेश से आए समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत कथा के सप्तम दिवस की कथा श्रवण कराते हुए कहा कि श्रीमद्भागवत कथा श्रवण करने की सार्थकता तभी है,जब हम सभी इस ग्रन्थ को अपने जीवन में आत्मसात कर लें।तभी हमारा कल्याण संभव है।इसीलिए सभी भक्त ये संकल्प लें ,कि इन सात दिनों में हमने श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा से जो भी श्रवण किया है,उसे अपने जीवन में धारण करेंगे।साथ ही आजीवन उसके बताए मार्ग पर चल कर प्रभु का गुणगान करेंगे।

महोत्सव के अंतर्गत ब्रजवासी पंडा सभा के अध्यक्ष पंडित श्यामसुंदर गौतम ने पंडा सभा के द्वारा भागवत आचार्य श्रीहित ललित वल्लभ नागार्च का उनके द्वारा धर्म व अध्यात्म के क्षेत्र में की गई अविस्मरणीय सेवाओ के लिए शॉल ओढ़ा कर, स्मृति चिन्ह देकर एवं ठाकुरजी का पटका प्रसादी माला आदि भेट कर अभिनंदन किया।

इस अवसर पर विश्वविख्यात भागवताचार्य व गौरी गोपाल आश्रम के संस्थापक डॉ. अनिरुद्धाचार्य महाराज, भागवत भास्कर कृष्ण चन्द्र शास्त्री (ठाकुरजी), परम हितधर्मी डॉ. चन्द्र प्रकाश शर्मा, पीपाद्वाराचार्य जगद्गुरु बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज, गौसेवी सन्त गोपेश बाबा, आचार्य विष्णु मोहन नागार्च, प्रख्यात साहित्यकार रूपी रत्नश्र डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, प्रेम मन्दिर के जन संपर्क अधिकारी अजय त्रिपाठी, सन्त जुगल दास महाराज, सन्त बिहारीदास महाराज, सन्त रामदास महाराज,भागवत आचार्य गोपाल भैया, पण्डित सुभाष गौड़ (लाला पहलवान), आचार्य अंकित कृष्ण महाराज, श्रीमती कमला नागार्च, आचार्य रसिक वल्लभ नागार्च, कीर्ति नागार्च, हितानंद नागार्च, रसानंद नागार्च, प्रेमानंद नागार्च, दिव्यानंद नागार्च, पण्डित रासबिहारी मिश्र, पण्डित जुगल किशोर शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा, पण्डित तरुण मिश्रा, पण्डित भरत शर्मा, हितवल्लभ नागार्च, महोत्सव के मुख्य यजमान श्रीमती सिंधु-मुकेश गोयल (रायपुर, छत्तीसगढ़), श्रीमती अनिता-कमल अग्रवाल, श्रीमती कौशल-अमिताभ अग्रवाल, श्रीमती मिताली-दीपक अग्रवाल, श्रीमती कृष्णा-कैलाश अग्रवाल, श्रीमती निशा-अंकित अग्रवाल आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

एक यात्रा राजपूत समाज चेतना मंडल इन्दौर की - जिसकी नेतृत्व क्षमता बहुत प्रभावी है

स्वतंत्र पत्रकार व लेखक
हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

मन-मस्तिष्क व हृदय में एकता व समरसता की भावना जब सृजित हुई होंगी। तब समाजिक गतिविधियों व सांस्कृतिक और धार्मिक संरचना को समाज हित में एक संगठन के रूप में प्रकट करना समाजिक स्तर पर बहुत बड़ी उपलब्धि भी है और सेवा का आगाज भी है। तब इन्दौर शहर में अपनी गौरवमई व समाज में अपनी उत्कृष्टता की और तेज़ी से क़दम बढ़ाया होगा। राजपूत समाज की एकता के लिए फिजूलखर्ची को रोकने हेतु छोटे कमजोर व मध्यवर्गीय जरूरतमंदों की मदद हेतु पूर्ण रूप से वैदिक परम्परा का निर्वाहन करते हुए, रीति-रिवाज से सामूहिक परिचय सम्मेलन व विवाह करने हेतु विगत 33 वर्षों से राजपूत समाज के लिए परिचय सम्मेलनों की एक अच्छी व सकारात्मक परम्परा अविरल प्रवाह से चल रही है। जिसमें वर्तमान में संगठन का यहां दायित्व राजपूत समाज चेतना मंडल के संयोजक रतन सिंह राजपूत और उनकी इस टीम में जो सदस्य हैं उसमें अध्यक्ष गजराज सिंह सोलंकी, उपाध्यक्ष राजेश सिंह तोमर, सचिव सत्येन्द्र सिंह चौहान व अन्य साथी व समाजजनों के साथ संगठन को मजबूती प्रदान करने के लिए हमेशा से यहां सभी इस पुनीत कार्य लगें हुए हैं। इस तरह के निःशुल्क परिचय सम्मेलन में क्षत्रिय राजपूत समाज को बहुत ज्यादा लाभ मिलता है। जिससे कारण समाज को नई दिशा मिलती है और नवसृजन को भी पंख लगाते हुए सभी समाज की एकजुटता को बनाए रखें हुए है। इस बारे में राजपूत चेतना मंडल इन्दौर के संयोजक ठाकुर रतन सिंह राजपूत ने बताया कि नि शुल्क परिचय सम्मेलन सन 1992 में इस संगठन ने अपना पहला परिचय सम्मेलन से शुरू किया गया था। तब यह एक बहुत बड़ा व मुश्किल कार्य लगता था। राजपूत समाज में इस तरह के आयोजन के लिए बहुत सी परेशानी थी जागरूकता का अभाव था। उस समय लोग अपने परिजनों व परिवार में बेटा बेटी के बायोडाटा देने में कतराते थे। लेकिन तब हमारे बड़े बुजुर्गो की सटिक दिशानिर्देश व समझाइश पर जीवन साथी के चुनाव हेतु जो सीख व सीधा-साधा तरीका बताया गया। कम खर्च में बातचीत व शादी आदि की जो शुरुआत की तब उस समय बहुत कठिनाई थी। लोग समझना ही नहीं चाह रहे थे। राजपूत चेतना मंडल इन्दौर के पहले आयोजन में सिर्फ 4 पन्नों का पेपर प्रकाशित किया गया था, जो आज बढ़कर 250 से अधिक पृष्ठों की परिणय दर्पण पुस्तिका के रूप में प्रकाशित होती है। यह परिणय दर्पण रिश्तों की मजबूती का बहुत महत्व है। जिसमें वर-वधू की जानकारी परिवार की जानकारी व शादी लायक युवक-युवती के लिए अच्छे-से अच्छे जीवनसाथी की तालाश वह भी नि शुल्क परिचय करना बहुत बड़ी बात है। यहां परिजनों के अपने बच्चों की शादी के रिश्ते पक्के हो जाते हैं। अब यहां परिचय सम्मेलन राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान समाज में बना रहा है। राजपूत समाज चेतना मंडल अपने परम संरक्षक सुरेश सिंह भदौरिया, जयपाल सिंह चावड़ा, मोहन सिंह सेंगर जैसे समाजसेवीयो का सहयोग राजपूत समाज को हमेशा से मिलता रहा है। तभी तो पूर्ण रूप से निशुल्क परिचय सम्मेलन होता है, इसमें 5 हजार से ज्यादा समाजजन पूरे देश से शामिल होते हैं और यहां सफल आयोजन पिछले 6 वर्षों से शहर के प्रतिष्ठित मंयक ब्लू वाटर पार्क में किया जा रहा है। जहां एकसाथ मिलाकर समाजजन मिलकर नये रिश्तों की शुरुआत करते हैं यहां जानकारी देते हुए राजपूत चेतना मंडल के युवा तरुणाई मिडिया प्रभारी विनोद सिंह चौहान ने बताया कि इस वर्ष नये साल में 11 जनवरी 2026 रविवार को यह निःशुल्क परिचय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। जिसकी पंजीयन की प्रक्रिया बहुत पहले से ही प्रारंभ हो चुकी है । अब इस आयोजन को लेकर युवा वर्ग के साथ समाजजनों में बड़ा उत्साह का माहौल बना हुआ है। पिछले 33 वर्षों में राजपूत चेतना मंडल इन्दौर ने 20 हजार से अधिक रिश्ते तय कराने में अपनी अहम भूमिका निभाई है, जिसमें वर्तमान संचालन मण्डल का नेतृत्व बहुत प्रभावी है। इसमें युवा तरुणाई भी समाज कार्यों में अपना सहयोग दे रहे है। कुलमिलाकर यहां संगठन राजपूत समाज के लिए मिल का पत्थर साबित हो रहा है।

प्रेषक - स्वतंत्र पत्रकार व लेखक
हरिहर सिंह चौहान
जबरी बाग नसिया इन्दौर मध्यप्रदेश

रासायनिक खाद ,मिट्टी का क्षरण और वैश्विक पर्यावरण संकट: मानव स्वास्थ्य ,खाद्य सुरक्षा और पारिस्थितिकी तंत्र पर एक समग्र अंतरराष्ट्रीय विश्लेषण

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर बीसवीं सदी में हरित क्रांति को मानव इतिहास की सबसे बड़ी कृषि उपलब्धियों में गिना गया,जिसने अकाल से जूझती दुनियाँ को अन्न- आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर किया। रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और उन्नत बीजों के व्यापक उपयोग ने उत्पादन को अभूतपूर्व रूप से बढ़ाया। किंतु इक्कीसवीं सदी में वही कृषि मॉडल अब एक वैश्विक पर्यावरणीय, स्वास्थ्य और पारिस्थितिक संकट का रूप ले चुका है। रासायनिक खादों का अंधाधुंध उपयोग मिट्टी की उर्वरता, भूजल की शुद्धता, खाद्य पोषण और जैव विविधता चारों स्तंभों को एक साथ कमजोर कर रहा है। यह संकट केवल किसी एक देश या क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका हर जगह इसके दुष्परिणाम स्पष्ट दिखने लगे हैं मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि मिट्टी केवल फसल उगाने का माध्यम नहीं है,बल्कि यह एक जीवंत पारिस्थितिक प्रणाली है जिसमें अरबों सूक्ष्मजीव, केंचुए, फफूंद और जीवाणु सक्रिय रहते हैं। ये तत्व मिट्टी को भुरभुरा बनाते हैं, पोषक तत्वों का चक्र चलाते हैं और पौधों को प्राकृतिक रूप से पोषण उपलब्ध कराते हैं।रासायनिक खादों विशेषकर नाइट्रोजन,फॉस्फोरस और पोटाश आधारित उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग इस संतुलन को नष्ट कर देता है।लगातार रसायनों के प्रयोग से मिट्टी की जैविक कार्बन सामग्री घटती है, जिससे उसकी जल धारण क्षमता कम हो जाती है और वह कठोर,निर्जीव तथा बंजर होने लगती है। अंतरराष्ट्रीय मृदा विज्ञान संगठनों के अनुसार, विश्व की लगभग ३३ प्रतिशत कृषि भूमि पहले ही किसी न किसी रूप में क्षरण का शिकार हो चुकी है। भारत, चीन और अमेरिका जैसे कृषि प्रधान देशों में मिट्टी की ऊपरी उपजाऊ परत तेजी से खत्म हो रही है। यह स्थिति दीर्घकाल में खाद्य उत्पादन को अस्थिर बना देती है और किसानों को और अधिक रसायनों पर निर्भर होने के लिए मजबूर करती है, एक ऐसा दुष्चक्र, जिससे बाहर निकलना अत्यंत कठिन हो जाता है।लाभकारी रासायनिक खादों का सबसे घातक प्रभाव मिट्टी में मौजूद लाभकारी सूक्ष्मजीवों पर पड़ता है। नाइट्रोजन स्थिर करने वाले जीवाणु, माइकोराइजा फफूंद और जैविक अपघटक जीव मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता के आधार होते हैं। जब रसायन सीधे पौधों को पोषण उपलब्ध करा देते हैं, तो ये सूक्ष्मजीव निष्क्रिय होने लगते हैं या मर जाते हैं। परिणामस्वरूप मिट्टी की आत्मनिर्भरता समाप्त हो जाती है और वह बाहरी इनपुट पर निर्भर हो जाती है।

साथियों बात अगर हम संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन की रिपोर्टों को समझने की करें तो यह चेतावनी देती है कि यदि यही प्रवृत्ति जारी रही,तो आने वाले दशकों में बड़ी मात्रा में कृषि भूमि जैविक रूप से मृत हो सकती है। ऐसी मिट्टी में उत्पादन बनाए रखने के लिए रसायनों की मात्रा लगातार बढ़ानी पड़ती है, जिससे लागत, प्रदूषण और जोखिम तीनों बढ़ते हैं।रासायनिक खादों का एक बड़ा हिस्सा पौधों द्वारा अवशोषित नहीं हो पाता और वर्षा या सिंचाई के साथ मिट्टी की निचली परतों में रिसकर भूजल में मिल जाता है। नाइट्रेट और फॉस्फेट जैसे तत्व भूजल को प्रदूषित कर देते हैं, जो सीधे पीने के पानी के स्रोत बनते हैं। यह समस्या अब केवल ग्रामीण कृषि क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि शहरी क्षेत्रों में भी गंभीर रूप ले चुकी है।भारत के इंदौर में जहरीला जल पीने से 15 से अधिक लोगों की मृत्यु की घटना इस संकट कीभयावहता को उजागर करती है। यह केवल एक स्थानीय दुर्घटना नहीं, बल्कि उस व्यापक समस्या का प्रतीक है जिसमें कृषि रसायन, औद्योगिक अपशिष्ट और अव्यवस्थित जल प्रबंधन मिलकर मानवजीवन के लिए घातक परिस्थितियाँ पैदा कर रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, नाइट्रेट- प्रदूषित जल से ब्लू बेबी सिंड्रोम, कैंसर और अन्य दीर्घकालिक बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

साथियों बात अगर हम वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जल संकट और कृषि रसायन को समझने की करें तो यूरोप के कई देशों,विशेषकर नीदरलैंड्स और फ्रांस में,भूजल में नाइट्रेट स्तर खतरनाक सीमा को पार कर चुका है,जिसके कारण सरकारों को उर्वरक उपयोग पर कड़े नियम लगाने पड़े हैं। अमेरिका में डेड ज़ोन की समस्या- जहाँ नदियों से बहकर गए पोषक तत्व समुद्र में ऑक्सीजन की कमी पैदा कर देते हैं,कृषि रसायनों के दुष्प्रभावका अंतरराष्ट्रीय उदाहरण है। यह दर्शाता है कि रासायनिक खाद का असर केवल खेत तक सीमित नहीं रहता, बल्कि नदियों, झीलों और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र तक फैल जाता है।

साथियों बात अगर हम रसायनों के अत्यधिक उपयोगसे खाद्य पोषण में गिरावट और जहरीला भोजन इसको समझने की करें तो,रसायनों के अत्यधिक उपयोग से फसलें भले ही आकार में बड़ी और देखने में आकर्षक लें, लेकिन उनकी पोषण गुणवत्ता लगातार गिर रही तत्वों की कमी सीधे पौधों की पोषण संरचना को प्रभावित करती है।इसके अतिरिक्त कीटनाशकों और उर्वरकों के अवशेष भोजन में बने रहते हैं, जो मानव शरीर में धीरे-धीरे जमा होकर कैंसर, मधुमेह, हार्मोन असंतुलन और तंत्रिका तंत्र से जुड़ी बीमारियों को जन्म दे सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय कैंसर अनुसंधान एजेंसी ने कई कृषि रसायनों को संभावित कार्सिनोजेन की श्रेणी में रखा है, जो इस खतरे की गंभीरता को रेखांकित करता है।रासायनिक खाद और कीटनाशकों से जुड़ा स्वास्थ्य संकट तात्कालिक नहीं, बल्कि दीर्घकालिक और व्यापक होता है। किसान, खेत मजदूर और ग्रामीण समुदाय सबसे पहले इसकी चपेट में आते हैं, लेकिन शहरी उपभोक्ता भी इससे अछूते नहीं हैं। भोजन, पानी और पर्यावरण तीनों माध्यमों से रसायन मानव शरीर में प्रवेश करते हैं।यह एक ऐसा साइलेंट पैंडेमिक" है, जो धीरे-धीरे समाज की स्वास्थ्य संरचना को कमजोर कर रहा है और स्वास्थ्य प्रणालियों पर भारी बोझ डाल रहा है।मिट्टी के स्वास्थ्य में गिरावट का सीधा असर उसमें रहने वाले जीव-जंतुओं पर पड़ता है। केंचुए, जिन्हें मिट्टी का किसान कहा जाताहै,रासायनिक खादों के कारण तेजी से कम हो रहे हैं। कीटों और सूक्ष्म जीवों की विविधता में कमी से प्राकृतिक परागण और कीट नियंत्रण की प्रक्रियाएँ बाधित होती हैं। इससे जैव विविधता का संतुलन बिगड़ता है और पारिस्थितिकी तंत्र अस्थिर हो जाता है।पक्षियों, उभयचरों और जलीय जीवों की कई प्रजातियाँ कृषि रसायनों के कारण संकटग्रस्त हो चुकी हैं। यह केवल पर्यावरणीय समस्या नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व से जुड़ा प्रश्नहै,क्योंकिपारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बिगड़ने का अंतिम प्रभाव मानव जीवन पर ही पड़ता है।

साथियों बात अगर हम जैविक खाद और टिकाऊ खेती:एकमात्र व्यवहारिक विकल्प, इसको समझने की करें तो इस वैश्विक संकट का समाधान रासायनिक खेती के विकल्पों में निहित है।जैविक खाद, हरी खाद, कंपोस्ट, वर्मी-कंपोस्ट और प्राकृतिक कृषि पद्धतियाँ मिट्टी की उर्वरता को पुनर्जीवित कर सकती हैं। ये न केवल मिट्टी के सूक्ष्मजीवों को संरक्षित करती हैं, बल्कि भूजल प्रदूषण को भी रोकती हैं। जैविक खेती से उत्पादित भोजन अधिक पोषक और सुरक्षित होता है, जिससे दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं।विश्व के कई देशों ने टिकाऊ कृषि को नीति स्तर पर अपनाना शुरू कर दिया है। यूरोपीय संघ की फार्म टू फोर्क रणनीति, भारत की प्राकृतिक खेती पहल और अफ्रीका में एग्रो-इकोलॉजी आंदोलन इस दिशा में सकारात्मक कदम हैं। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि सभ्यता के सामने एक निर्णायक मोड़ पैदा हो गया है,रासायनिक खादों का संकट केवल कृषि का मुद्दा नहीं है; यह मानव स्वास्थ्य, पर्यावरणीय सुरक्षा,खाद्यसंप्रभुता और भावी पीढ़ियों के अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न है। यदि वर्तमान रुझान जारी रहे, तो दुनियाँ को भोजन की कमी नहीं, बल्कि स्वस्थ भोजन की कमी का सामना करना पड़ेगा। अब यह स्पष्ट हो चुका है किअल्पकालिक उत्पादन लाभ के लिए दीर्घकालिक प्राकृतिक संसाधनों का बलिदान देना आत्मघाती है।जैविक खाद और टिकाऊ खेती केवल विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता बन चुकी है।यह परिवर्तन केवल किसानों से नहीं,बल्कि नीति-निर्माताओं, वैज्ञानिकों, उपभोक्ताओं और वैश्विक समुदाय से सामूहिक प्रतिबद्धता की मांग करता है।मिट्टी,जल और जीवन तीनों को बचाने का यही एकमात्र रास्ता है, और यही मानव सभ्यता के भविष्य की वास्तविक कसौटी भी।

शिक्षकः हमारे समाज को आकार देने वाले अज्ञात मूर्तिकार

● डॉ विजय गर्ग

कम से कम सिद्धांततः यह बात सर्वमान्य है कि शिक्षक राष्ट्रों के भाग्य को आकार देते हैं। इस विश्वास का प्रचार भाषणों, नीतिगत दस्तावेजों और औपचारिक समारोहों में किया जाता है। फिर भी, जब तालियां खत्म हो जाती हैं, तो वही समाज आसानी से भुलक्कड़ हो जाता है। शिक्षकों को नवाचार को प्रेरित करने का निर्देश दिया जाता है, लेकिन पुराने पाठ्यक्रमों पर सवाल उठाने से उन्हें हतोत्साहित किया जाता है। उन्हें आलोचनात्मक सोच विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, लेकिन स्थापित आख्यानों को अशांत बनाने से बचा लिया जाता है।

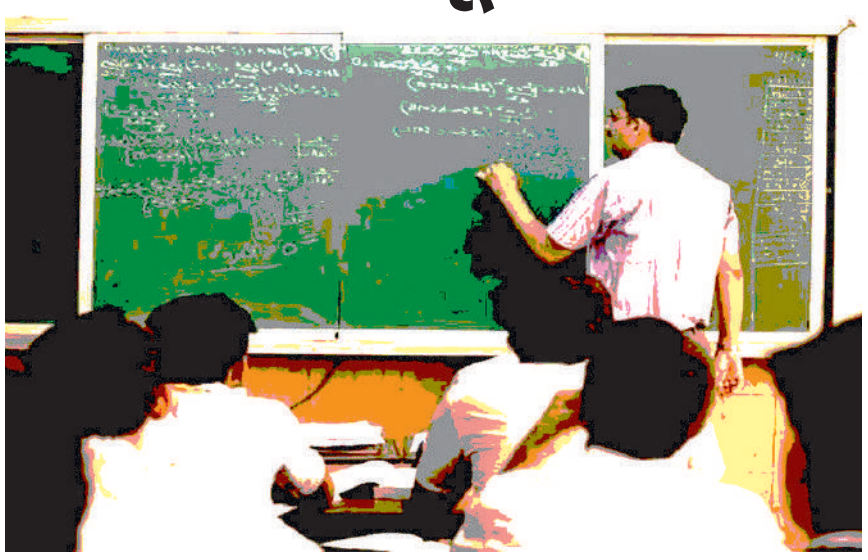

जैसे-जैसे नया साल अपने अनुष्ठानवादी आशावाद, चमकदार संकल्पों और विकास और परिवर्तन के बारे में पुनर्नवीनीकरण किए गए प्रतिज्ञानों के साथ शुरू होता है, यह उस पेशे को स्वीकार करने का एक उपयुक्त क्षण है जो हैशटैग द्वारा फैशनेबल बनने से बहुत पहले ही समाज में बदलाव ला रहा था। आखिरकार, शिक्षक समाज के मूर्तिकार हैं — हालांकि धूप वाले स्टूडियो में रोमांटिक तरह की उत्कृष्ट कृतियों को नहीं। उनकी कार्यशाला एक भीड़-भाड़ वाली कक्षा है, उनके उपकरण धैर्य और दृढ़ता हैं, और उनका कच्चा माल जिज्ञासा, भ्रम, अवज्ञा, प्रतिभा और विरासत में मिले पूर्वाग्रह का अस्थिर मिश्रण है। उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे प्रणालीगत विरोधाभासों में घुटनों तक खड़े होकर भविष्य को ढालेंगे, आदर्शवाद से लैस होंगे, लेकिन संस्थागत समर्थन से वंचित रहेंगे।

कम से कम सिद्धांततः यह बात सर्वमान्य है कि शिक्षक राष्ट्रों के भाग्य को आकार देते हैं। इस विश्वास का प्रचार भाषणों, नीतिगत दस्तावेजों और औपचारिक समारोहों में किया जाता है। फिर भी, जब तालियां खत्म हो जाती हैं, तो वही समाज आसानी से भुलक्कड़ हो जाता है। शिक्षकों को नवाचार को प्रेरित करने का निर्देश दिया जाता है, लेकिन पुराने पाठ्यक्रमों पर सवाल उठाने से उन्हें हतोत्साहित किया जाता है। उन्हें आलोचनात्मक सोच विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, लेकिन स्थापित आख्यानों को अशांत बनाने से बचा लिया जाता है। उन्हें कहा जाता है कि वे सीखने को व्यक्तिगत बनाएं, जबकि कक्षाओं में भीड़भाड़ और समय-सीमाएं सख्त होती हैं। जाहिर है, उत्कृष्टता का निर्माण करना आसान है - जब तक कि यह पूर्वनिर्धारित सांचों में अच्छी तरह से फिट हो जाए।

आधुनिक शिक्षकों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे मल्टीटास्किंग दक्षता के चमत्कार बनें। उन्हें शिक्षक, परामर्शदाता, प्रशासक, प्रौद्योगिकीविद्, प्रेरक, मूल्यांकनकर्ता और कभी-कभी संकट प्रबंधक के बीच बारी-बारी से काम करना होगा। उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे भावनात्मक बुद्धिमत्ता को पोषित करें, साथ ही चुपचाप अपने स्वयं के बर्नआउट से भी निपटें। जब कोई बच्चा लड़खड़ाता है, तो शिक्षण विधियों पर सवाल उठाया जाता है। जब कोई बच्चा उत्कृष्टता प्राप्त करता है, तो उसे पालन-पोषण की शैली, निजी ट्यूशन और प्रेरणादायक प्रभावशाली लोगों के बीच श्रेय दिया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षकों को सफलता की कहानियों में पृष्ठभूमि के पात्रों और असफलता की कहानियां में अग्रभूमि के संदिग्धों के रूप में महत्व दिया जाता है।

जवाबदेही एक दिशा में उदारतापूर्वक प्रवाहित होती है। शिक्षकों का अवलोकन, मूल्यांकन, पुनः प्रशिक्षण और लेखापरीक्षा सराहनीय नियमितता के साथ की जाती है। इस बीच, प्रणालीगत अक्षमताओं को जांच से छूट मिलती है। नीतियों का मसौदा कक्षाओं से दूर तैयार किया जाता है; सुधारों की घोषणा बिना किसी आधार के की जाती है, तथा कार्यान्वयन में अंतराल को मामूली असुविधाएं माना जाता है। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे रातोंरात अनुकूलन कर लें, तथा शब्दजाल और अलग-थलग आशावाद वाली कार्यशालाओं के दौरान मुस्कुराते रहें। यदि मूर्तिकला में दरारें पड़ जाती हैं, तो इसका दोष मूर्तिकार को दिया जाता है - कभी भी त्रुटिपूर्ण संगमरमर या अस्थिर आधार पर नहीं।

फिर भी शिक्षक जिद्दी प्रतिबद्धता के साथ बने रहते हैं। वे हर दिन न केवल पाठ योजना लेकर आते हैं, बल्कि आशा भी लेकर आते हैं। वे देखते हैं कि चुप बच्चा अदृश्य हो जाता है, बेचैन मन उद्देश्य की तलाश में रहता है, आत्मविश्वास से भरी आवाज असुरक्षा को छुपाती है। वे शैक्षणिक विषय-वस्तु से परे पढ़ाते हैं; वे लचीलेपन का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और चुपचाप विरासत में मिले पूर्वाग्रहों को चुनौती देते हैं। तत्काल संतुष्टि के प्रति जुनूनी युग में, शिक्षक धैर्य का कट्टरपंथी कार्य करते हैं।

जैसे-जैसे समाज वादों के एक और वर्ष में प्रवेश कर रहा है, यह पुनर्मूल्यांकन करने का समय आ गया है कि हम अपने सामूहिक भविष्य को सौंपे गए लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। सम्मान प्रदर्शनकारी नहीं रह सकता और अपेक्षाएं अवास्तविक नहीं रह सकतीं। शिक्षक संतत्व या सहानुभूति नहीं चाहते; वे विश्वास, स्वायत्तता और सार्थक शिक्षा को सक्षम बनाने वाली प्रणालियों की तलाश करते हैं। अंततः, किसी समाज की गुणवत्ता का पता अक्सर उसकी कक्षाओं से लगाया जा सकता है। जब कक्षाएं फल-फूलती हैं, तो समुदाय भी फल-फुलते हैं और राष्ट्रों को आने वाली पीढ़ियों के लिए गहरी, स्थायी लचीलापन प्राप्त होता है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद

संपादकीय
चिंतन-मनन

राजस्थान में टूरिस्ट टैक्सी कैरियर चालान पर रोक की मांग

दिल्ली टैक्सी टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने केंद्रीय पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत को सौंपा ज्ञापन

संजय कुमार बाठला — मुख्य संपादक परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक

दिल्ली टैक्सी टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने केंद्रीय पर्यटन मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत से मुलाकात कर राजस्थान में टूरिस्ट वाहनों पर किये जा रहे "कैरियर चालान" को बंद कराने की मांग की है।

एसोसिएशन के प्रतिनिधिमंडल ने पर्यटन मंत्री को ज्ञापन सौंपते हुए कहा कि राजस्थान परिवहन विभाग और ट्रैफिक पुलिस द्वारा टूरिस्ट टैक्सी और टेम्पो ट्रैवलर (वैन) के छत पर लगे कैरियर के संबंध में लगातार भारी चालान किये जा रहे हैं, जिससे पर्यटन कारोबार और परिवहन व्यवसाय दोनों प्रभावित हो रहे हैं।

एसोसिएशन के पदाधिकारियों के अनुसार, देशी-विदेशी पर्यटकों के लगेज के लिए टूरिस्ट वाहनों के अंदर अक्सर पर्याप्त जगह नहीं होती, इसलिए सूटकेस और बैग इत्यादि गाड़ी की छत पर लगे कैरियर पर अच्छी तरह बाँधकर ले जाए जाते हैं।

उनका कहना है कि यह वर्षों से प्रचलित व्यवस्था है, लेकिन हाल के दिनों में राजस्थान में टूरिस्ट टैक्सियों और टेम्पो ट्रैवलर (वैन) पर कैरियर होने के आधार पर बड़े-बड़े जुर्माने लगाए जा रहे हैं।

एसोसिएशन ने स्मरण कराया कि कोरोना महामारी के दौरान देशभर के ट्रांसपोर्टर्स गंभीर आर्थिक संकट से गुज़रे हैं और अभी भी पूरी तरह उबर नहीं पाए हैं। ऐसे में, लगातार हो रहे चालानों से टूरिस्ट ऑपरेटरों और ड्राइवरों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ रहा है।

प्रतिनिधियों ने कहा कि कैरियर चालान की वजह से अब कई ड्राइवर और ट्रांसपोर्टर्स राजस्थान जाने में हिचकिचा रहे हैं, जबकि इससे राज्य के पर्यटन और स्थानीय रोजगार पर नकारात्मक असर पड़ना तय है।

एसोसिएशन ने अपनी मांग रखते हुए कहा कि राजस्थान सरकार के परिवहन विभाग और ट्रैफिक पुलिस को निर्देश दिए जाएँ कि वे टूरिस्ट टैक्सी और टेम्पो ट्रैवलर (वैन) के छत पर लगे लगेज कैरियर के लिए चालान न करें, बशर्ते लगेज को सुरक्षित तरीके से बांधा गया हो और कोई सुरक्षा मानक न टूट रहा हो।

सूत्रों के अनुसार, पर्यटन मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने प्रतिनिधिमंडल की बात ध्यानपूर्वक सुनी और आश्वासन दिया कि वे इस मुद्दे पर राजस्थान के परिवहन मंत्री से चर्चा करेंगे। उन्होंने कहा कि टूरिस्ट ट्रांसपोर्ट सेक्टर की जायज़ समस्याओं का समाधान निकालने का प्रयास किया जाएगा, ताकि न तो पर्यटन गतिविधियाँ बाधित हों और न ही ट्रांसपोर्टर्स को अनावश्यक परेशानियों का सामना करना पड़े।

एसोसिएशन का मानना है कि यदि कैरियर चालान संबंधी मौजूदा स्थिति पर पुनर्विचार कर राहत दी जाती है, तो इससे देश के पर्यटन उद्योग को मजबूती मिलेगी और विशेष रूप से राजस्थान के होटल, गाइड, हैंडीक्राफ्ट तथा अन्य स्थानीय व्यवसायों के लिए रोजगार के अवसर और बेहतर हो सकेंगे।

अपशिष्ट से फसल तकः पर्यावरण अनुकूल उर्वरक के रूप में मानव मूत्र की शक्ति : डॉ. विजय गर्ग

अपशिष्ट प्रबंधन, मिट्टी की कमी और पारंपरिक कृषि के पर्यावरणीय प्रभाव से जूझ रही दुनिया में एक असंभव समाधान ध्यान आकर्षित कर रहा हैः मानव मूत्र। कभी अपशिष्ट से अधिक कुछ नहीं माने जाने वाले मूत्र का अब उर्वरक क्षमता के लिए पुनर्मूल्यांकन किया जा रहा है, जिससे निपटान की समस्या एक टिकाऊ संसाधन में बदल जाती है। मानव मूत्र क्यों मायने रखता है

मानव मूत्र पोषक तत्वों से भरपूर होता है जो पौधों को बढ़ने के लिए आवश्यक होते हैं, विशेष रूप से नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम (जिसे सामूहिक रूप से एनपीके कहा जाता है)। ये पोषक तत्व कई वाणिज्यिक उर्वरकों के मूल घटक हैं, फिर भी पारंपरिक उर्वरक उत्पादन अक्सर ऊर्जा-गहन होता है और खनन या सिंथेटिक इनपुट पर निर्भर करता है।

यहां बताया गया है कि मानव मूत्र की तुलना किस प्रकार होती है

नाइट्रोजन (एन): पत्ते की वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है।

फास्फोरस (पी): जड़ों के विकास और फूलों को समर्थन देता है।

पोटेशियम (के): समग्र पौधों के स्वास्थ्य और तनाव प्रतिरोध को मजबूत करता है।

जब उचित तरीके से उपयोग किया जाए तो मूत्र इन पोषक तत्वों को पर्यावरण के अनुकूल और कम लागत वाले तरीके से आपूर्ति कर सकता है।

पर्यावरणीय लाभ

अपशिष्ट में कमी

हर दिन लाखों लीटर मूत्र सीवेज सिस्टम से गुजरता है। इन सभी को अपशिष्ट के रूप में देखने के बजाय, मूत्र का संग्रह करने से अपशिष्ट जल उपचार संयंत्रों पर बोझ कम हो सकता है तथा ऊर्जा उपयोग भी कम हो सकता है।

कम कार्बन फुटप्रिंट

सिंथेटिक उर्वरकों का निर्माण, विशेष रूप से नाइट्रोजन आधारित उर्वरक, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। उर्वरक के रूप में मूत्र का उपयोग इन औद्योगिक प्रक्रियाओं पर निर्भरता को कम करता है।

जल संरक्षण

उन्नत सीवेज उपचार के बिना, मानव अपशिष्ट जल स्रोतों को दूषित कर सकता है। कृषि के लिए मूत्र को पुनः निर्देशित करने से नदियों और झीलों में पोषक तत्वों का प्रवाह सीमित हो जाता है।

मूत्र का उपयोग उर्वरक के रूप में कैसे किया जाता है

प्रत्यक्ष अनुप्रयोग (पतला)

ताजा मूत्र में आमतौर पर नाइट्रोजन की मात्रा अधिक होती है और इसे मिट्टी या पौधों पर लगाने से पहले लगभग 1 भाग मूत्र से 10 भाग पानी के अनुपात में पतला किया जाना चाहिए। यह अतिरिक्त पोषक तत्वों के कारण संवेदनशील पौधों की जड़ों को जलने से रोकता है।

उपयोग से पहले भंडारण

कई सप्ताह तक मूत्र को संग्रहित करने से रोगाणुओं में कमी आ सकती है तथा पोषक तत्व स्थिर हो सकते हैं। खाद्य फसलों पर इसे लागू करने से पहले यह सुरक्षा कदम महत्वपूर्ण है।

3। कम्पोस्टिंग सिस्टम में

नाइट्रोजन के स्तर को बढ़ाने, अपघटन में तेजी लाने और अंतिम खाद को समृद्ध बनाने के लिए कॉम्पोस्ट ढेरों में मूत्र मिलाया जा सकता है।

सुरक्षा और सर्वोत्तम अभ्यास

यद्यपि स्वस्थ व्यक्तियों का मूत्र आमतौर पर बाँझ होता है, लेकिन कुछ मामलों में इसमें दवाओं, हार्मोनों या रोगाणुओं की थोड़ी मात्रा भी हो सकती है। इसका सुरक्षित उपयोग करें:

लगाने से पहले पतला करें—विशेषकर युवा पौधों के लिए।

रोगाणुओं के जोखिम को न्यूनतम करने के लिए कम से कम कई सप्ताह तक स्टोर करें।

जब तक सुरक्षा सावधानियां न अपनाई जाएं, कच्ची जड़ वाली सब्जियों पर इसका प्रयोग करने से बचें।

पोषक तत्वों की आवश्यकताओं पर नज़र रखें—अधिक निषेचन योजना को नुकसान पहुंचा सकता है वास्तविक दुनिया के उदाहरण

दुनिया भर के समुदाय और शोधकर्ता मूत्र-आधारित निषेचन का प्रयोग कर रहे हैं

पारिस्थितिक गांव मूत्र-डायवर्टिंग शौचालयों का उपयोग करते हैं, जिनका उत्पादन सामुदायिक उद्यानों में किया जाता है।

शोधकर्ताओं ने चुनिंदा सब्जियों और अनाज पर पतले मूत्र के प्रति फसल की प्रतिक्रिया का परीक्षण किया।

शहरी फार्म मूत्र पुनर्चक्रण को मृदा प्रबंधन योजनाओं में एकीकृत करते हैं, जिससे लागत और रासायनिक इनपुट कम होते हैं। चुनौतियां और विचार

लाभों के बावजूद, बाधाएं भी हैं सांस्कृतिक बाधाएंः कई समाजों में मानव मूत्र में अभी भी एक ₹सुखद₹ कारक मौजूद है। बुनियादी ढांचाः मूत्र को सुरक्षित रूप से एकत्र करने, संग्रहीत करने और वितरित करने के लिए विचारशील प्रणाली डिजाइन की आवश्यकता होती है। विनियमनः कृषि और स्वास्थ्य नियम बहुत भिन्न होते हैं। कुछ स्थानों पर खाद्य फसलों के लिए मूत्र के उपयोग को प्रतिबंधित किया जा सकता है। लेकिन जागरूकता और विचारशील कार्यान्वयन के साथ इन चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है।

एक गोलाकार कृषि भविष्य

मानव अपशिष्ट को एक मूल्यवान कृषि संसाधन में बदलने का विचार गोलाकार प्रणालियों की ओर बड़े बदलाव को दर्शाता है, जहां कभी अपशिष्ट के रूप में देखे जाने वाले आउटपुट को इनपुट के रूप में पुनः एकीकृत किया जाता है। मानव मूत्र, जब जिम्मेदारी से संभाला जाता है, तो यह टिकाऊ कृषि लक्ष्यों के साथ संरेखित होता है और अपशिष्ट को कम करने तथा मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के लिए एक रचनात्मक उपकरण प्रदान करता है।

ऐसे पारिस्थितिक नवाचारों को अपनाकर, हम लचीली खाद्य प्रणालियों और एक हरित ग्रह की ओर सार्थक कदम उठाते हैं।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

हताश मन

चुभती है शूल सी दर्द भरी सर्द रातें,
किसको कहें हम अपनी सारी बातें,
जिंदगी का वो सुकून सारा है खोया,
उदास मन भीतर ही भीतर घंटों रोया ।

तिनका-तिनका हुए सुनहरे ख़्वाब सारे,
देखे थे जो मिलकर हमने संग में तुम्हारे,
तक़दीर में नहीं लिखा था अपना मिलना,
बाहर सर्द मौसम और भीतर यूँ जलना ।

सूख गई मन की 'आनंद' मधुमय धारा,
जीवन ने हमें दिया पीने को जहर खारा,
जिंदगी कहती काँटों में ही गुलाब खिलते,
बिछुड़ने वाले फिर उस तरह नहीं मिलते ।

पर संभाले किस तरह इस हताश मन को,
ये समझना ही नहीं चाहता नए जीवन को,
अकेलेपन ने रातों को किया लम्बा बहुत,
हो गई अब से जिंदगी उबाऊ और सुस्त ।

- मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई, तमिलनाडु
आपके स्नेह और प्यार का धन्यवाद !
रचना (स्वरचित व सर्वाधिकार सुरक्षित)

'सब कुछ' पाना हैं मकसद...!

खोज़ते हर कोई किसी न किसी तरह की ख़ुशी,
इस बेचैन संसार में मिल जाए सुकून और हँसी।
हममें से अधिकांशजन खोज रहें मन की शांति,
आज 'युवा तरुणाई' के मन में बहुत सारी भ्रांति।

हम आखिर क्या ढूंढ रहे हैं क्या चाह रहे हैं पाना,
दौड़ रहे हैं पैकेज के पीछे इसका हैं पता लगाना।
यहाँ इसमें छूट रहा वयोवृद्ध माता-पिता का साथ,
इस उम्र में ही तो पकड़ना है उनका हाथों में हाथ।

सोचता हूँ आंखें बंद कर 'सब कुछ' पाना मकसद,
वो करना चाह रहें हो कि दुनिया हो जाए हथप्रभ।
खुशी, सुकून, संतोष एवं मौज-मजा तो हैं परिवार,
न जाओं इन्हें छोड़कर ये तो है जीवन का आधार।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

रिश्ते में अलगाव के बाद भी सहज जिन्दगी जीने की उम्मीदें

डॉ विजय गर्ग

तलाकशुदा महिलाओं के लिए अपने न दिखाई देने वाले ज़ख्मों से उबरना आसान नहीं होता है। खासकर तब जब किसी विवाह के कष्टकारी रिश्ते के टूटने के साथ ही वे खुद भी भीतर से टूट जायें। ऐसे में आपके पास आपबीती सुनाने यानी अपना दर्द साझा करने के लिए कोई उपयुक्त व्यक्ति चाहिये। कोई ऐसा जो उस ट्रॉमा को समझ सके। जिससे आपको लगे कि वो रिश्ता टूटने के बाद भी जिंदगी को बेहतर ढंग से जीना है। इसी मकसद से जुड़ी पहल है 'ब्रेक फ्री स्टोरीज'।

उमा की शादी मात्र 21 वर्ष की आयु में कर दी गई थी। लेकिन जब उसके विवाह ने भयावह मोड़ लिया तो वह डिप्रेशन में चली गई। आठ साल के उत्पीड़न व मानसिक क्रूरता से वह इतना तंग आ गई थी कि उसने ख़ुदकुशी का प्रयास किया, लेकिन उसके पिता ने उसकी जान बचा ली। आख़िरकार उसने ज़हरीले संबंध पर विराम लगाया, अपनी शिक्षा मुकम्मल की और उसे दुबई में फार्मासिस्ट का जॉब मिल गया। अब वह स्वतंत्र प्रोफेशनल है, लेकिन अब भी अपने भावनात्मक उपचार की कोशिश में लगी हुई है। तलाकशुदा महिलाओं के लिए अपने न दिखाई देने वाले ज़ख्मों से उबरना आसान नहीं होता है और अब 36 साल की हो चुकीं उमा को अपने दुःख को प्रोसेस करने के लिए एक आदर्श जगह जगह मिली है- ब्रेक फ्री स्टोरीज, जोकि तलाकशुदा कलेक्टिव (समूह) है, जिसे मालाप्पुरम, केरल की राफ़यिा अली ने आरंभ किया है। उमा बताती हैं, 'अपनी कहानी को उन लोगों के साथ साझा करने से जो वास्तव में मेरे दर्द को समझते हैं और जो बिना फैसलाकुन टिप्पणी के सुनते हैं, एक पूर्णतः नया अनुभव था मेरे लिए। वर्षों की थैरेपी की तुलना में मुझे इससे अधिक लाभ मिला।'

ऑफ़लाइन कैंप की सकारात्मक पहल

मई 2025 में लगभग 20 महिलाएं इदुक्की ज़लि (केरल) के पहाड़ी कस्बे वागामोन में ब्रेक फ्री स्टोरीज द्वारा आयोजित पहले ऑफ़लाइन कैंप में एकत्र हुई थीं। तब तक यह समूह व्हाट्सएप व इंस्टाग्राम पर सक्रिय था। कुछ महिलाएं पहली बार अकेले यात्रा करके इस कैंप में पहुंचीं थीं। समूह में तलाकशुदा, विधवा और अपने जीवनसाथियों से अलग हुई महिलाएं थीं। वे टेंट में ठहरीं, ट्रैकिंग के लिए गईं, गेम्स खेले और ठंडेपन को तोड़ने वाले सत्रों में शामिल हुईं ताकि एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जान व समझ सकें। उन्होंने अपने गहरे व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया।

विवादों में क़ानूनी मदद भी

राफ़यिा ने बताया, 'मैंने संख्या को 20 के नीचे रखने का प्रयास किया; क्योंकि छोटे समूह में लोग आसानी से खुल जाते हैं। मदद के लिए हमारे पास एक क़ानूनी सलाहकार भी है, विशेषकर उन मामलों के लिए जिनमें महिलाएं लम्बे क़ानूनी विवाद में फंसी हुई हैं। लेकिन मैं यह भी जानती हूं कि अनेक बाधाओं की वजह से बहुत सी महिलाएं इस प्रकार के कैंप में हिस्सा नहीं ले सकतीं। उनके लिए मैं ऑनलाइन सत्रों का आयोजन करती हूं।' इसके बाद इस प्रकार के कैंप अनेक जगहों पर आयोजित किये गये और एक अंतर्राष्ट्रीय कैंप का आयोजन दुबई में भी हुआ। दुबई में संयोग से कैंप का आयोजन उस समय हुआ था, जब यह खबर सुर्खियों में थी- शारजाह में केरल की एक 32-वर्षीय महिला विपनचिका मणियान अपनी 18 माह की बेटी के साथ दहेज उत्पीड़न की वजह से मृत पायी गई थी।

दुबई शिविर में साझा किये ट्रॉमा

राफ़यिा का कहना है कि तलाक के बाद बहुत सी महिलाएं ट्रॉमा व कलंक से बचने के लिए विदेश चली जाती हैं। राफ़यिा के अनुसार, 'मेरे पास बहुत सारी कॉल दुबई से आ रही थीं। इसलिए दुबई में एक रात, दो दिन के स्टेकेशन की योजना बनायी गई, लेकिन उस रात कोई भी नहीं सोया, महिलाएं रोती रहीं, एक -दूसरे को गले लगाती रहीं और पुष्टि करती रहीं कि उनका ट्रॉमा वास्तविक था व उनकी कोई गलती नहीं थी। तब से उन्होंने एक अति सक्रिय सपोर्ट ग्रुप बना लिया है।' दरअसल, राफ़यिा तलाक के कारण अपने व्यक्तिगत दुःख से उबरने का प्रयास कर रही थीं, जिसने उन्हें ब्रेक फ्री स्टोरीज के गठन की प्रेरणा दी। वह बताती हैं, 'मैं स्वयं एक तलाकशुदा महिला हूं और अपने परिवार व दोस्तों के मज़बूत सपोर्ट सिस्टम के बावजूद मेरे लिए अपनी त्रासदी से उबर पाना अविश्वसनीय रूप से बहुत कठिन था। बाद में जब मैं ऑनलाइन कंटेंट तैयार करने लगी, तो बहुत महिलाएं मुझसे संपर्क करने लगीं। मुझे जल्द ही अहसास हो गया कि अनगिनत महिलाएं तलाक के कारण तनाव व दुःख से जूझ रही हैं और उनके पास सपोर्ट नाम की कोई चीज़ नहीं है। इस बात ने ही मुझे पहला कैंप आयोजित करने के लिए प्रेरित किया था।'

सशक्त होने का अहसास

कैंप में बहुत सी महिलाएं संकोच व संदेह के साथ आयी थीं, लेकिन जल्द ही उन्होंने आरामदायक व सहयोगी वातावरण खोज लिया। उमा ने बताया, 'यह वह जगह है जहां आप आसानी से अपने मन का बोझ उतार देती हैं। हम उन महिलाओं से घिरी हुईं थीं, जिन्होंने बिना कुछ बोले तुरंत हमारी परेशानियों को समझा। उनसे बात करके लगा कि वे हमारी अपनी हैं और मुझे सशक्त होने का अहसास हुआ। साथ ही यह अच्छा अनुभव रहा कि महिलाएं अपने खोल से बाहर निकलीं और पहली बार उन्होंने अपनी हक़ीक़त को गले लगाया।'

एक मकसद से उपजा समुदाय

ब्रेक फ्री स्टोरीज अब एक समुदाय बन गया है। हज़ारों महिलाएं इसके इंस्टाग्राम पेज को फॉलो करती हैं। हालांकि आगामी कैम्पों और वीडियोज के नोटिफिकेशंस को हज़ारों व्यूज मिलते हैं, लेकिन इस प्लेटफार्म को नकारात्मक कमेंट्स भी मिलते हैं, जैसे महिलाओं को कैम्पों की बजाय नये जीवनसाथी तलाशने पर फोकस करना चाहिए। राफ़यिा कहती हैं, 'मेरे इंस्टाग्राम पेज का कमेंट सेक्शन बहुत बुरा है, लेकिन ठीक है, जिसकी जैसी सोच। शादी बहुत सुंदर है अगर सही व्यक्ति मिल जाये, लेकिन संबंध पर विराम लगाना ज़िंदगी का अंत नहीं है और मैं केवल यही संदेश फैलाना चाहती हूं।'

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

घर का माहौल और परीक्षा की तैयारी: माता-पिता का अदृश्य योगदान

कृति आरके जैन

परीक्षा के दिन बच्चे के जीवन में वह मोड़ होते हैं, जहाँ मेहनत के साथ-साथ मानसिक स्थिरता, आत्मबल और विश्वास की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। इन दिनों बच्चे की वास्तविक ताकत उसकी किताबों से नहीं, बल्कि उसके आसपास खड़े उन हाथों से आती है जो बिना शर्त उसका साथ देते हैं। जब प्रश्नपत्र से पहले मन में उठते डर, संशय और दबाव को कोई शांत करता है, तब वही सहयोग बच्चे को भीतर से मजबूत बनाता है। परीक्षा की इस कठिन यात्रा में माँ-बाप का साथ बच्चे के लिए ऊर्जा का वह स्रोत बनता है, जो उसे टूटने नहीं देता और आगे बढ़ने की हिम्मत देता है।

विश्वास का संबल

परीक्षा के समय बच्चे के मन में सबसे पहले विश्वास की जरूरत होती है। यह विश्वास तभी पैदा होता है जब उसे यह महसूस हो कि उसके प्रयासों पर घर का भरोसा अडिग है। माँ-बाप जब बिना शर्त भरोसा जताते हैं, तब बच्चा स्वयं को सक्षम मानने लगता है। यह भाव उसे भय से बाहर निकालकर आत्मविश्वास की ओर ले जाता है। भरोसे का यह संबल बच्चे को अपने ज्ञान पर भरोसा करना सिखाता है।

मौन भावनात्मक शक्ति

हर सहयोग शब्दों में व्यक्त नहीं होता। कई बार माता-पिता की चुप मौजूदगी, उनका शांत व्यवहार और बिना सवाल किए साथ बैठना बच्चे के लिए सबसे बड़ा सहारा बन जाता है। यह मौन भावनात्मक शक्ति बच्चे के मन के बोझ को हल्का करती है। उसे यह एहसास होता है कि उसकी चिंता को समझा जा रहा है, बिना जज किए।

दिशा देने वाला मार्गदर्शन

परीक्षा की तैयारी में भटकाव सबसे बड़ी समस्या होती है। माता-पिता का संतुलित मार्गदर्शन बच्चे को इस भटकाव से बचाता है। वे पढ़ाई को क्रम में लाने, प्राथमिकता तय करने और समय को सही ढंग से बाँटने में मदद करते हैं। यह मार्गदर्शन आदेश की तरह नहीं, बल्कि सहयोग की तरह होता है, जिससे बच्चा उसे सहजता से अपनाता है।

मन की स्थिरता

परीक्षा के दौरान बच्चे का मन बार-बार अस्थिर होता है। कभी परिणाम की चिंता, कभी अधूरी तैयारी का डर उसे विचलित करता है। माता-पिता जब संयमित रहते हैं और घबराहट नहीं दिखाते, तब बच्चे का मन भी शांत रहता है। यह स्थिरता उसकी सोच को स्पष्ट करती है और निर्णय क्षमता को मजबूत बनाती है।

अपेक्षाओं की समझ

हर बच्चा अलग क्षमता और गति से आगे बढ़ता है। माता-पिता जब इस सच्चाई को स्वीकार करते हैं, तब उनकी अपेक्षाएँ बच्चे पर बोझ नहीं बनतीं। यथार्थपूर्ण अपेक्षाएँ बच्चे को दबाव में नहीं डालतीं, बल्कि उसे बेहतर करने की प्रेरणा देती हैं। यह समझ सहयोग को सकारात्मक दिशा देती है।

घर का वातावरण

परीक्षा के दिनों में घर का वातावरण बच्चे की पढ़ाई पर सीधा असर डालता है। शांत, व्यवस्थित और सहयोगी माहौल बच्चे को एकाग्र रहने में मदद करता है। जब घर में अनावश्यक तनाव या नकारात्मक चर्चा नहीं होती, तब बच्चा बिना मानसिक बाधा के अपनी तैयारी पर ध्यान केंद्रित कर पाता है।

शारीरिक संतुलन

मानसिक प्रदर्शन का सीधा संबंध शारीरिक स्थिति से होता है। माता-पिता द्वारा बच्चे के भोजन, नींद और दिनचर्या पर ध्यान देना उसकी ऊर्जा को बनाए रखता है। स्वस्थ शरीर ही लंबे समय तक ध्यान और स्मरण शक्ति को संभव बनाता है। यह संतुलन परीक्षा के दिनों में बच्चे की कार्यक्षमता को स्थिर रखता है।

आत्मसम्मान की रक्षा

परीक्षा के दबाव में बच्चे अक्सर स्वयं को दूसरों से कम आँकने लगते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास कमजोर पड़ने लगता है। ऐसे समय में माता-पिता द्वारा की गई तुलना-रहित और समझदारी भरी प्रतिक्रिया उसके आत्मसम्मान की रक्षा करती है। यह आत्मसम्मान बच्चे को मानसिक रूप से मजबूत बनाता है और उसे अपनी पहचान बनाए रखने की शक्ति देता है।

मूल्य आधारित सोच

परीक्षा के समय नैतिक निर्णय भी बच्चे के सामने आते हैं। माता-पिता द्वारा सिखाए गए मूल्य उसे सही और गलत के बीच फर्क करना सिखाते हैं। ईमानदारी और परिश्रम पर दिया गया जोर बच्चे के चरित्र को मजबूत करता है। यह सोच उसे केवल परीक्षा में ही नहीं, जीवन में भी सही रास्ता चुनने में मदद करती है।

रुचि का सम्मान

जब माता-पिता बच्चे की रुचियों को पहचानकर उसका साथ देते हैं, तब सहयोग स्वाभाविक और प्रभावी हो जाता है। रुचि के अनुरूप मिली सहायता पढ़ाई को दबाव से मुक्त कर उसे अर्थपूर्ण सीख में बदल देती है। यह सम्मान बच्चे के भीतर जिज्ञासा और सीखने की स्वाभाविक प्रेरणा को निरंतर सक्रिय रखता है।

तकनीकी संतुलन

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में तकनीक एक आवश्यक साधन बन चुकी है। माता-पिता जब इसके उपयोग पर समझदारी भरी सीमाएँ तय करते हैं और सही दिशा दिखाते हैं, तब बच्चा तकनीक को साधन की तरह अपनाता है, लत की तरह नहीं। यह संतुलित दृष्टिकोण उसे अनावश्यक भटकाव से बचाकर पढ़ाई के उद्देश्य पर केंद्रित बनाए रखता है।

परिणाम से परे साथ

माता-पिता का सच्चा सहयोग परीक्षा परिणाम के बाद स्पष्ट होता है। परिणाम जैसा भी हो, उनका संयमित और सकारात्मक रवैया बच्चे को टूटने नहीं देता। वे उसे यह समझाते हैं कि एक परिणाम उसकी संपूर्ण क्षमता का निर्णय नहीं करता, बल्कि सीख का एक चरण होता है। यह दृष्टिकोण बच्चे को आगे बढ़ने की हिम्मत देता है।

दीर्घकालिक प्रभाव

परीक्षा के दिनों में मिला माता-पिता का सहयोग बच्चे के मन में गहरी और स्थायी छाप छोड़ता है। यही अनुभव उसे आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए मानसिक रूप से तैयार करता है। समय के साथ यह साथ उसकी सोच, व्यवहार और आत्मबल का अभिन्न हिस्सा बनकर उसके व्यक्तित्व को मजबूत करता है।

सफलता से आगे जीवन की तैयारी

परीक्षा के दिनों में माँ-बाप का साथ बच्चे की सबसे बड़ी ताकत बनकर सामने आता है। यह साथ केवल अंकों या तात्कालिक सफलता तक सीमित नहीं रहता, बल्कि बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व की नींव रखता है। भावनात्मक सुरक्षा, संतुलित मार्गदर्शन और समझदारी भरा व्यवहार मिलकर उसे भीतर से मजबूत बनाते हैं। यही सशक्त साथ बच्चे को न सिर्फ परीक्षा में, बल्कि जीवन के हर मोड़ पर आत्मविश्वास, धैर्य और स्पष्ट दृष्टि के साथ आगे बढ़ने की क्षमता प्रदान करता है।

कलकल करती नदिया की लहर पसंद है,
मुझको तो तेरा हर हाल में शहर पसंद है।

मेरे मन को तुने छुआ और सिहर उठा मैं,
तेरे इस अहसास की शीत लहर पसंद है।

मेरे गीत गज़ल सब तेरा अहसान है,
दिलों के तारों से उठी हर बहर पसंद है।

नजरिया नजर ने तेरी मेरा बदल दिया है,
तेरी नज़र के तीर का हर कहर पसंद है।

यूं तो हर पल ख्याल जहन में रहता तेरा,
सबसे खास मिलने का हर पहर पसंद है।

'राजगुणपाल' दिल बड़ा नादान है तेरा,
आखिर तुझे भी ये मीठा जहर पसंद है।

राजगुणपाल बालकिया

ओडिशा में जनगणना का पहला चरण अप्रैल से शुरू होगा

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: ओडिशा में अगले साल अप्रैल से जनगणना का पहला फेज़ शुरू होगा। इसके साथ ही, जनगणना का दूसरा फेज़ फरवरी 2027 में होगा। इस बारे में जानकारी मिली है। पहले फेज़ में घर और फर्नीचर की जनगणना होगी। और दूसरे फेज़ में घर-घर जाकर जनगणना होगी। इसके लिए लाखों जनगणना अधिकारी नियुक्त किए जाएंगे। इससे पहले, डेवलपमेंट कमिश्नर ने सभी डिस्ट्रिक्ट कलेक्टरों से बातचीत की थी। डेवलपमेंट कमिश्नर की अध्यक्षता में लोक सेवा भवन में हुई स्टेट-लेवल सेंसस कोऑर्डिनेशन कमेटी की मीटिंग में सेंसस डायरेक्टर और दूसरे सीनियर अधिकारी शामिल हुए। लाखों सेंसस अधिकारियों की नियुक्ति।

राज्य में सेंसस की तैयारी छह महीने से चल रही है। भुवनेश्वर और कटक में प्री-टेस्ट पूरे हो चुके हैं। नई घोषित NAC और म्युनिसिपल सीमाओं को फाइनल कर दिया गया है। सेंसस अधिकारियों को अगले तीन महीने तक ट्रेनिंग दी जाएगी। मिली जानकारी के मुताबिक, 200 घरों पर एक सेंसस अधिकारी नियुक्त किया जाएगा। छह अधिकारियों पर एक सुपरवाइजर नियुक्त किया जाएगा। करीब एक लाख सेंसस अधिकारी नियुक्त किए जाएंगे। एक सेंसस अधिकारी को 25,000 रुपये का फाइनेंशियल इंसेंटिव दिया जाएगा। सेंसस का पहला फेज अप्रैल और मई के बीच किया जाएगा। सेंसस का दूसरा फेज फरवरी 2027 से किया जाएगा। कोई व्यक्ति चाहे तो अपनी डिटेल्स दे सकता है, वे वेबसाइट के ज़रिए भी रजिस्टर कर सकते हैं। OTP मोबाइल नंबर पर आधारित होगा। यूज़र्स एक ही नंबर का दो बार इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे या ऐप का स्क्रीनशॉट भी नहीं ले पाएंगे।

धान खरीद को लेकर मंत्री के वादे के बाद भी ठहराव दूर नहीं हुआ, अटल मिल्स एसोसिएशन अपनी बात पर अड़ा

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: अटल राइस मिलर्स एसोसिएशन का कहना है कि जब तक लिखित वादा नहीं मिलता, धान का उठाव नहीं होगा। कल आपूर्ति मंत्री से बातचीत के बाद सरकार ने कहा है कि चार सूत्री मांगों में से कुछ पूरी की जाएंगी। लेकिन अभी तक लिखित वादा नहीं मिला है। 5 तारीख से सभी जिलों में धान उठाने का काम बंद है। मिलर्स एसोसिएशन ने साफ-साफ कहा है कि जब तक वादा पूरा नहीं होता, चावल की कटाई नहीं की जाएगी। इस बीच, अनाज बेचने वालों की समस्या भी पीछे नहीं हटी है। खरीफ धान की खरीद शुरू होने के बाद से ही मंडी में अव्यवस्था है, वहीं कालाहांडी जयपटना में मिलर्स के आंदोलन की वजह से 2 दिनों से मंडी से धान नहीं उठाया गया है। राज्य मिलर्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट ने कहा कि जब तक मांगें पूरी नहीं होतीं, आंदोलन जारी रहेगा। जयपटना ब्लॉक की अलग-अलग मंडियों में हजारों क्विंटल धान पड़ा है, वहीं मिलर्स के आंदोलन की वजह से उन्होंने धान उठाना बंद कर दिया है। जिससे चारों तरफ किसानों में नाराजगी है। पहले और दूसरे टोकन आने के बाद किसान धान बेच देते थे। लेकिन अब सरकार और मिलर्स के बीच तालमेल की कमी की वजह से किसान थक रहे हैं। ऑल ओडिशा मिलर्स एसोसिएशन ने कस्टम मिलिंग रेट बढ़ाने, धान के स्टोरेज और मेंटेनेंस का खर्च देने और धान ट्रांसपोर्टेशन का खर्च पहले की तरह देने की मांग की है।

इस बीच, किसानों की समस्याओं को लेकर BJD ने एक बार फिर बरगढ़ जिले के अताबीरा में सरकार के खिलाफ हल्ला बोला है। अताबीरा में BJD की तरफ से किसानों की एक बड़ी सभा का आयोजन किया गया है। बीजू जनता दल ने कहा है कि सरकार की किसान नीति के कारण किसानों को मुश्किल हालात की ओर धकेला जा रहा है। रजिस्ट्रेशन की समस्या हो या टोकन की समस्या, किसान आगे बढ़ते रहे हैं। लेकिन, किसानों के हजारों बोरे अभी भी धान मंडी में पड़े हैं और किसानों के पास धान होने पर भी टोकन नहीं है। BJD ने आरोप लगाया है कि आवाज उठाने पर किसानों पर अत्याचार किया जा रहा है। अलग-अलग मांगों को लेकर अताबीरा तहसीलदार के जरिए मुख्यमंत्री को एक मांग पत्र भेजा गया है। BJD ने कहा है कि अगर सरकार किसानों की समस्याओं को हल करने के लिए तुरंत कदम नहीं उठाती है, तो आने वाले दिनों में बरगढ़ के अलग-अलग विधानसभा क्षेत्रों में विरोध प्रदर्शन किया जाएगा।

मतदाता सूची का मेगा रीसेट: जनता, वोट और सत्ता की जंग

उत्तर प्रदेश में हाल ही में मतदाता सूची में बड़ा संशोधन आया, जिसने राजनीति और प्रशासन दोनों में हलचल मचा दी है। 2.89 करोड़ नाम हटने के बाद लोकतंत्र की नींव पर गंभीर प्रश्न उठ खड़े हुए हैं। क्या यह कदम चुनावों को निष्पक्ष और पारदर्शी बनाने की वास्तविक कोशिश है, या सत्ता की चालाकी और रणनीति का हिस्सा मात्र? देश के सबसे बड़े राज्य में इस बदलाव ने व्यापक बहस को जन्म दिया है। शुद्धता के दावे और अन्याय के आरोपों के बीच जनता उलझन में है। ड्राफ्ट सूची में यह विशाल संशोधन दिखाता है कि मतदाता सूची केवल कागजी दस्तावेज़ नहीं, बल्कि लोकतंत्र की रीढ़ और उसकी विश्वसनीयता का प्रमाण है।

चुनाव आयोग ने 6 जनवरी 2026 को ड्राफ्ट सूची जारी की, जिसमें कुल 15.44 करोड़ मतदाताओं में से 2.89 करोड़ नाम हटा दिए गए। अब कुल वैध नाम केवल 12.55 करोड़ बचे हैं। हटाए गए नामों में 46.23 लाख मृतक, 2.17 करोड़ स्थानांतरित और 25.47 लाख डुप्लिकेट नाम शामिल हैं। यह कुल मतदाताओं का 18.7 प्रतिशत है, जो भारत में किसी भी राज्य में सबसे बड़ा संशोधन माना जा रहा है। एसआईआर की समयसीमा और ड्राफ्ट प्रकाशन कई बार बढ़ाया गया, क्योंकि सूची में बड़े पैमाने पर असंगतियां मिलीं। दावा-आपत्ति की अवधि 6 फरवरी तक है, जिससे सभी प्रभावित लोग फॉर्म भरकर नाम जोड़ सकते हैं। इस विशाल हटाव ने सवाल खड़े किए हैं कि क्या यह लोकतंत्र को मजबूत करने का कदम है, या लक्षित राजनीतिक कार्रवाई है।

लोकतंत्र की शुद्धता के समर्थक इसे ऐतिहासिक सुधार कहते हैं। उनके अनुसार, मृतक और डुप्लिकेट नाम चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इससे वोटिंग सिस्टम में फर्जीवाड़ा रोका जा सकता है। एसआईआर प्रक्रिया के अनुसार, 81.3 प्रतिशत मतदाताओं ने गणना फॉर्म जमा किए, जबकि बाकी नहीं कर सके। इस तरह की सफाई अन्य राज्यों में भी हुई, लेकिन उत्तर प्रदेश में कटौती सर्वाधिक रही। समर्थकों का कहना है कि इससे वोट बैंक की राजनीति कमजोर होगी और असली मतदाताओं की आवाज़ को ताकत मिलेगी।

विपक्षी दल इसे राजनीतिक साजिश मान रहे हैं। उनका तर्क है कि गरीब और अल्पसंख्यक समुदाय के वोटों को प्रभावित किया जा रहा है। कई नेता और उनके परिवार के नाम हटाए जाने का दावा कर रहे हैं। उनका कहना है कि केवल निवास बदलने के कारण वैध मतदाताओं को बाहर किया गया। विरोधियों का आरोप है कि यह लोकतंत्र पर हमला है और संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन हो सकता है। शहरी क्षेत्रों और प्रवासी आबादी में अधिक नाम हटाए गए हैं, जिससे यह आशंका बढ़ रही है कि यह उद्देश्यपूर्ण कार्रवाई हो सकती है।

तथ्यों की पड़ताल करें तो आयोग ने हटाव के स्पष्ट कारण बताए हैं—मृत्यु, स्थानांतरण और डुप्लिकेट नाम। लखनऊ और गाजियाबाद जैसे शहरी केंद्रों में सबसे ज्यादा नाम हटाए गए। घर-घर जाकर फॉर्म भरवाए गए और 91 प्रतिशत से अधिक मैपिंगकी गई। शेष को नोटिस भेजे जा रहे हैं। बावजूद इसके, इतनी बड़ी संख्या ने संदेह पैदा कर दिया है। क्या सभी फॉर्म न जमा करने वाले असली मतदाता नहीं हैं? आयोग का कहना है कि दावा-आपत्ति प्रक्रिया में सुधार संभव है और यह निष्पक्षता दिखाती है। विपक्ष का कहना है कि दस्तावेज जुटाने में गरीब और अनपढ़ मतदाताओं को दिक्कत होगी, जिससे लोकतंत्र की वैधता पर सवाल उठते हैं।

इस संशोधन का आगामी चुनावों पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है। उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा सीटें निर्णायक मानी जाती हैं। अगर वैध मतदाता भी हट गए, तो वोट प्रतिशत और चुनाव परिणाम प्रभावित हो सकते हैं। समर्थक इसे फर्जीवाड़ा रोकने का कदम मानते हैं, जबकि विपक्ष इसे वोट दबाने की रणनीति कह रहा है। एसआईआर की अवधि बढ़ने से सत्यापन बेहतर हुआ, लेकिन गरीब और अल्पसंख्यक समुदाय इससे सबसे अधिक प्रभावित हो सकते हैं। यह सवाल उठता है कि क्या प्रक्रिया पर्याप्त पारदर्शी है या नहीं।

समाज पर नजर डालें तो प्रवासी मजदूर, शहरी गरीब और छोटे शहरों के मतदाता सबसे प्रभावित हुए हैं। ग्रामीण क्षेत्र भी इससे अछूते नहीं रहे। विपक्ष इसे मतदाता दमन मान रहा है। वहीं आयोग का कहना है कि मृतक नाम हटाना अनिवार्य था और यह रूटीन प्रक्रिया है। अन्य राज्यों में भी ऐसा सुधार होना चाहिए।

मतदाता सूची की शुद्धता ही चुनाव की नींव है। अगर फर्जी नाम मौजूद रहें, तो लोकतंत्र कमजोर होगा। वहीं वैध नाम हटने से अन्याय होगा। जनता को जागरूक होना आवश्यक है। आगे की राह में आयोग के लिए पूर्ण पारदर्शिता अनिवार्य हो गई है। दावा-आपत्ति की अवधि में लाखों मतदाता अपने अधिकार को सुरक्षित कर सकते हैं, और यदि कोई वैध मतदाता सूची से बाहर रह गया, तो लोकतंत्र की नींव हिल सकती है। अन्य राज्यों के अनुभव और उदाहरण हमें यह सिखाते हैं कि मतदाता सूची सिर्फ एक प्रशासनिक दस्तावेज़ नहीं, बल्कि हर नागरिक की राजनीतिक पहचान का प्रतीक है। इसलिए इसकी नियमित समीक्षा और सुधार न्यायपूर्ण, निष्पक्ष और समयबद्ध तरीके से होना चाहिए।

यह संशोधन दोधारी तलवार की तरह है—2.89 करोड़ नामों के हटने ने सार्वजनिक बहस और राजनीतिक विवाद को हवा दी है। यदि हटाए गए नाम केवल फर्जी थे, तो यह लोकतंत्र की शुद्धता की दिशा में ऐतिहासिक कदम होगा। लेकिन यदि वैध मतदाता प्रभावित हुए, तो यह अधिकार और विश्वास दोनों को क्षति पहुंचा सकता है। विपक्ष को ठोस प्रमाण प्रस्तुत करने होंगे और आयोग को अपनी निष्पक्षता साबित करनी होगी। लोकतंत्र तब मजबूत रहेगा जब हर वैध वोट गिना जाएगा और किसी की आवाज़ दबाई नहीं जाएगी। यह प्रकरण याद दिलाता है कि वोट हमारा अधिकार है और सुरक्षित रहना चाहिए। समय ही बताएगा कि यह कदम लोकतंत्र की शुद्धता था या राजनीतिक खेल।

उत्तर प्रदेश का यह उदाहरण हमें एक बड़ा और सशक्त सबक देता है। बड़े बदलाव सोच-समझकर और पूरी सावधानी के साथ होने चाहिए, क्योंकि हर गलती सीधे लोकतंत्र की नींव को हिला सकती है। जनता के लिए यह जिम्मेदारी बन गई है कि वह अपने नाम, अपने अधिकार और मतदाता रिकॉर्ड की खुद जांच करे। हर मतदाता जागरूक रहे, ताकि किसी की आवाज दबाई न जा सके और हर वैध वोट सुरक्षित रहे। चुनाव प्रक्रिया की पवित्रता पर ध्यान देना अब केवल प्रशासन का कर्तव्य नहीं, बल्कि हर नागरिक की अनिवार्य भूमिका बन चुकी है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

कुमावत समाज तेलंगाना प्रदेश अध्यक्ष बने तिलायचा सोनाराम कुमावत

जगदीश सीरवी

कुमावत समाज तेलगांना के अध्यक्ष बने सोनाराम तिलायचा को सर्वे सहमति से पुनः अध्यक्ष बनाया गया कुमावत समाज की आम सभा में सभा के सभापति सुखराज घोड़ावड़ को बनाया गया जिसमें निवर्तमान अध्यक्ष तिलायचा सोनाराम कुमावत का सर्वे समिति से निर्वविरोध अध्यक्ष बनाया गया जिसमे समस्त एरिया की विभिन्न शाखाओं के पदाधिकारियों ने भाग लिया कुमावत समाज ज्ञानबाग कालोनी बेगम बाजार के अध्यक्ष रुपाराम भोबरिया, कुमावत समाज किसरा के अध्यक्ष पप्पुलाल बाकरेचा, कुमावत समाज गच्चीबावली के अध्यक्ष लुम्बाराम जालोरा, श्री कृष्णा कुमावत समाज के अध्यक्ष ओमप्रकाश भोबरिया, कुमावत समाज काचवानी सिंगाराम के अध्यक्ष भीयाराम मगंलोड़ा कुमावत सेवा समिति चेंगीचेरला के अध्यक्ष बाबुलाल खरनालिया, कुमावत समाज बोराबंडा के अध्यक्ष राजूराम बाकरेचा, कुमावत समाज बिरमगुड़ा के उपाध्यक्ष महेन्द्रकुमार मालीवाड़, कुमावत समाज बोलारम के अध्यक्ष रमेशकुमार मोटावत, कुमावत समाज बालाजीनगर के सचिव चेतन पटेल, कुमावत सेवा संघ मलकाराम के अध्यक्ष गोविन्दराम बाकरेचा, कुमावत समाज कालीमन्दिर के अध्यक्ष पोकरराम गोयल, कुमावत समाज संगा रेड्डी के अध्यक्ष कानाराम दुबलदिया, कुमावत समाज देवेन्द्रनगर कुकड़पल्ली के उपाध्यक्ष बाबुलाल घोड़ावड़ (डाला), कुमावत समाज अलवाल के उपाध्यक्ष श्यामलाल चांदोरा एवं उपस्थित पदाधिकारीगण से समाज के बंधुओं ने अपने अपने विचार व्यक्त किये।

एवंम "आप और हम के अध्यक्ष धर्मीचन्द कुमावत ने बताया कि तिलायचा सोनाराम कुमावत का कार्यकाल बहुत ही सहरानीय रहा और पधारे हुए सभी सदस्यों का धन्यावाद ज्ञापन दिया। और सोहनलाल मानणिया ने बताया ऐकता के लिए संगठन को और मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया। और धर्माराम डैय्या ने बताया कि आने वाली पिढी के लिए शिक्षा पर ध्यान देना जरूरी है। अतः अध्यक्ष तिलायचा सोनाराम कुमावत ने अपने उद्बोधन में कुमावत समाज तेलंगाना के पधारे हुए सभी स्वजातीय बंधुओं

का आभार प्रकट किया एवंम सभी को धन्यवाद ज्ञापन दिया उपस्थिति सदस्यगण : ओमप्रकाश हांगर, बशीलाल रेणवाल, सुनिल मोरवाड़िया , राकेश हिन्दड़, तेजाराम मेरोता, नारायणलाल घोड़ावड़, अशोक पटेल, अशोक मावर, प्रकाश होतवाल, अणदाराम मनावत, मोहनलाल मावर, राजूराम बाकरेचा, मोतीलाल बाकरेचा बुद्धाराम होतवाल, कन्हैयालाल घोड़ावड़, श्रवणलाल मालीवाड़, श्रवणलाल दुबलदिया, प्रकाश चांदोरा, कालुराम मावर, सोहनलाल मोटावत, सोहनलाल मानणिया, भंवरलाल आलोदिया, रामचन्द्र रेणवाल, विनोद अलोदिया, रामकिशोर भड़लीवाल, मोतीलाल भोमावत, कालुराम ईटाड़ा, जगदीश रोहिवाल, पारस करोलिया, रमेश खेडावत, छेलाराम दुबलदिया, शिम्भूराम मोटावत, माणिकचन्द मेड़तिया, कन्हैयालाल चांदोरा, मदनलाल अडाणिया, श्यामलाल मोटावत, हनुमान ईटाड़ा, देवाराम रेणवाल, धर्माराम रेड़, पुखाराम अडाणिया, रमेश अडाणिया, केसाराम दुबलदिया, ओमाराम गोढवाल, ओमकार दुबलदिया, वासुदेव दुबलदिया, सुरेश बोड़ावड़ सुरेश दुबलदिया, कानाराम सांगर, मांगीलाल बांवलेचा, हनुमान पिपावत, नेमीचन्द्र मावर, चेनाराम रेणवाल ,सी आर कुमावत एवम अन्य उपस्थित थे।

वेनेज़ुएला, तेल और ट्रंप: किस ओर मुड़ रही है विश्व व्यवस्था

राजेश जैन

वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी की अमेरिकी विशेष बलों द्वारा गिरफ्तारी और उन्हें न्यूयॉर्क ले जाकर अदालत में पेश किया जाना केवल कानूनी कार्रवाई नहीं है। यह घटना अंतरराष्ट्रीय राजनीति के मंच पर एक नए और असहज दौर की आहट है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का यह बयान कि "अमेरिका वेनेजुएला को तब तक चलाएगा, जब तक सुरक्षित और समझदार सत्ता परिवर्तन न हो जाए", संप्रभुता बनाम शक्ति के उस पुराने सवाल को फिर सामने रख देता है, जिसके उत्तर पर आज की विश्व व्यवस्था टिकी है। सवाल केवल इतना नहीं कि मादुरो दोषी हैं या निर्दोष; बड़ा सवाल यह है कि क्या 21वीं सदी में भी अंतरराष्ट्रीय कानून ताकत के आगे उतना ही कमजोर साबित हो रहा है, जितना शीतयुद्ध के दौर में होता आया था।

ट्रंप प्रशासन मादुरो पर नार्को–टेररिज्म, ड्रग–तस्करी और हथियारों के अवैध लेन–देन के आरोप लगा रहा है। इन आरोपों की सच्चाई अदालत में तय होगी पर जिस अंदाज में एक संप्रभु राष्ट्र के राष्ट्राध्यक्ष को उठाकर अमेरिकी न्यायपालिका के समक्ष लाया गया, उसने वैश्विक राजनीति के मूल सिद्धांत पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। क्या अब "सीमाओं के भीतर की संप्रभुता" से अधिक महत्व "सीमाओं के पार की शक्ति" को मिल रहा है? यह भी उतना ही सच है कि नार्को–टेररिज्म जैसे शब्द केवल कानूनी परिभाषाएं नहीं होते, वे राजनीतिक नैरेटिव गढ़ने के औजार बन जाते हैं। पहले किसी शासन को वैश्विक खतरा घोषित किया जाता है, फिर लोकतंत्र और मानवाधिकारों की चिंता जताई जाती है और अंततः हस्तक्षेप को नैतिक जामा पहना दिया जाता है।

इस प्रकरण को समझने के लिए वेनेजुएला के तेल–भंडार को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। दुनिया के सबसे बड़े तेल भंडार का मालिकाना हक किसी भी महाशक्ति के लिए रणनीतिक मसला बन जाना स्वाभाविक है। लगभग 300 अरब बैरल कच्चे तेल के भंडार के साथ वेनेजुएला ऊर्जा–राजनीति का केन्द्रीय पात्र है। इराक और लीबिया से लेकर ईरान तक के उदाहरण बताते हैं कि जहां संसाधन अधिक होते हैं, वहां लोकतंत्र और मानवाधिकार की चिंता अक्सर अधिक मुखर हो जाती है। ट्रंप का यह कथन कि "तेल हम अपने पास रखेंगे", केवल राजनैतिक भाषा–भंगिमा नहीं, बल्कि उस सोच की बानगी है जिसमें ऊर्जा–सुरक्षा और वैश्विक वर्चस्व गहरी तरह गुंथे हुए हैं।

वेनेजुएला के भीतर की वास्तविकताएं भी सरल नहीं हैं। आर्थिक संकट, महंगाई, पलायन, भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन ने देश की सामाजिक संरचना को झकझोर दिया है। लाखों नागरिक देश छोड़ चुके हैं। मादुरो लंबे समय से आरोप लगाते रहे हैं कि अमेरिका "ड्रग्स के खिलाफ युद्ध" को बहाने की तरह इस्तेमाल कर रहा है और लक्ष्य अंततः वेनेजुएला के तेल–संसाधनों पर नियंत्रण है। यह तर्क कितना सच है, यह इतिहास तय करेगा, लेकिन यह प्रश्न बना रहेगा कि क्या किसी देश की आंतरिक राजनीतिक या आर्थिक विफलताओं का समाधान बाहरी सैन्य हस्तक्षेप या "कानूनी गिरफ्तारी" के जरिए खोजा जाना चाहिए।

भारत और दुनिया की प्रतिक्रिया

इस पूरे घटनाक्रम में भारत की प्रतिक्रिया भी स्वाभाविक रूप से चर्चा में है। भारत ने कड़े शब्दों का प्रयोग नहीं किया, न ही किसी पक्ष का खुला समर्थन किया। उसने शांति, संवाद और स्थिरता की अपील की। आलोचकों के अनुसार यह प्रतिक्रिया अत्यधिक सतर्क है, जबकि समर्थकों की दृष्टि में यह परिपक्व कूटनीति का उदाहरण है। वस्तुतः भारत आज बहुध्रुवीय विश्व में खड़ा है, जहां एक ओर अमेरिका रणनीतिक साझेदार है तो दूसरी ओर रूस, ईरान और लैटिन अमेरिका के देश ऊर्जा और व्यापार के महत्वपूर्ण सहयोगी हैं। यूक्रेन, गाजा और अब वेनेजुएला—इन तीनों प्रसंगों में भारत का संयत रवैया एक व्यापक रणनीतिक निरंतरता का हिस्सा प्रतीत होता है।

भारत के लिए चुनौती यह है कि वह अंतरराष्ट्रीय कानून और संप्रभुता के सिद्धांतों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और राष्ट्रीय हितों के बीच संतुलन कैसे बनाए। ग्लोबल साउथ का स्वर बनने की आकांक्षा उसी समय सार्थक होगी जब भारत कानून–आधारित विश्व व्यवस्था के पक्ष में स्पष्ट और सुसंगत खड़ा दिखाई दे। साथ ही यह भी यथार्थ है कि आज की विदेश नीति केवल आदर्शवादी घोषणाओं के सहारे नहीं चलती; उसे ऊर्जा–सुरक्षा, सामरिक सहयोग और आर्थिक हितों के ठोस धरातल पर आगे बढ़ना होता है।

भारत के लिए यह आत्ममंथन का क्षण भी है। उसे तय करना होगा कि वह वैश्विक नैतिकता, राष्ट्रीय हित और कूटनीतिक संतुलन के त्रिकोण में किस बिंदु पर खड़ा रहना चाहता है। कभी–कभी रणनीतिक चुप्पी भी अपने आप में संदेश होती है और साफ–साफ बोलना भी अपनी कीमत मांगता है। परीक्षाएं केवल छोटे देशों की नहीं हो रहीं, बड़ी शक्तियों और उभरते नेतृत्वों की भी हो रही हैं।

चीन और रूस की तीखी प्रतिक्रिया ने वेनेजुएला प्रकरण को केवल अमेरिका बनाम मादुरो के सवाल से आगे निकालकर बड़े भू–राजनीतिक टकराव का रूप दे दिया है। लैटिन अमेरिका लंबे समय से अमेरिका की पारंपरिक प्रभाव–क्षेत्र माना जाता रहा है। अब चीन की आर्थिक पैठ और रूस की सक्रियता ने इस समीकरण को बदल दिया है। परिणामस्वरूप वेनेजुएला जैसे मामले नए शीतयुद्ध की आहट देते नजर आते हैं, जहां टकराव केवल विचारधाराओं का नहीं, बल्कि संसाधनों, बाजारों और प्रभाव–क्षेत्रों का है।

आगे क्या होगा

आगे का रास्ता अनिश्चितताओं से भरा है। मादुरो के विरुद्ध कानूनी प्रक्रिया चलेगी, घरेलू राजनीति और अधिक ध्रुवीकृत होगी और अंतरराष्ट्रीय समुदाय अपने–अपने हितों के अनुसार अपनी स्थिति तय करेगा। सबसे अधिक कीमत आम नागरिक चुकाएंगे—अस्थिरता, बेरोजगारी, पलायन और असुरक्षा के रूप में। यही हर सत्ता–खेल की सबसे बड़ी मानवीय विडंबना है।

इस घटना ने एक बुनियादी प्रश्न को फिर से सामने ला खड़ा किया है—क्या कोई भी शक्तिशाली राष्ट्र दूसरे देश के निर्वाचित नेतृत्व को इस तरह पकड़कर अपनी अदालत के कटघरे में खड़ा कर सकता है? यदि इसका मौन समर्थन जारी रहा, तो अंतरराष्ट्रीय कानून की मूल अवधारणा ही खोखली हो जाएगी। यह केवल वेनेजुएला का मामला नहीं है, बल्कि यह तय करेगा कि दुनिया नियमों से चलेगी या केवल ताकत तय करेगी कि नियम क्या हों।

अंततः वेनेजुएला का प्रकरण यह स्पष्ट करता है कि विश्व व्यवस्था संक्रमण के दौर में है। नियम बने हुए हैं, पर उनकी व्याख्या ताकतवर के हाथ में है। लोकतंत्र और मानवाधिकार की भाषा अब भी बोली जा रही है, पर उसके पीछे हितों का गणित पहले से कहीं अधिक स्पष्ट दिखाई देता है। आने वाले समय में फैसला अदालत में होगा, पर इतिहास यह दर्ज जरूर करेगा कि इस मोड़ पर दुनिया किस दिशा में मुड़ी।

वार्ड नंबर 4 में क्यूआर कोड आधारित डोर-टू-डोर कचरा संग्रह प्रणाली का महापौर एवं आयुक्त द्वारा उद्घाटन

अमृतसर, 07 जनवरी (साहिल बेरी)

शहर में 100 प्रतिशत डोर-टू-डोर कचरा संग्रह सुनिश्चित करने तथा स्वच्छता व्यवस्था को और सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, महापौर श्री जतिंदर सिंह भाटिया एवं आयुक्त, नगर निगम अमृतसर, श्री बिक्रमजीत सिंह शेरगिल ने आज वार्ड नंबर 4 के आनंद एवेन्यू क्षेत्र में घरों की दीवारों पर क्यूआर कोड लगाने की योजना का उद्घाटन किया।

उद्घाटन समारोह में वार्ड पार्षद श्री मंदीप सिंह आहूजा, नगर निगम के वरिष्ठ अधिकारी, कार्यदायी कंपनी के प्रतिनिधि एवं स्थानीय निवासी उपस्थित रहे। क्षेत्र के निवासियों ने नगर निगम अमृतसर की इस अभिनव पहल की सराहना करते हुए महापौर एवं आयुक्त का आभार व्यक्त किया।

मीडिया को संबोधित करते हुए महापौर श्री जतिंदर सिंह भाटिया ने कहा कि उनके कार्यभार संभालने से पूर्व शहर की स्थिति अत्यंत गंभीर थी, क्योंकि भगतानवाला डंप साइट पर लाखों मीट्रिक टन पुराना कचरा जमा था। इस समस्या के समाधान हेतु एक व्यापक योजना तैयार की गई तथा डोर-टू-डोर कचरा संग्रह एवं डंप साइट से कचरा उठाने के लिए आवश्यक अनुमान तैयार किए गए।

उन्होंने बताया कि एम/एस आरआरआर कंपनी को कचरा उठाने एवं परिवहन का ठेका दिया गया है। कंपनी द्वारा नए कचरा उठाने वाले वाहन तैनात किए जा चुके हैं तथा भविष्य में और अधिक वाहनों को फ्लीट में शामिल किया जाएगा।

क्यूआर कोड प्रणाली के बारे में जानकारी देते हुए महापौर ने कहा कि प्रत्येक घर के पंजीकरण के बाद घरों की बाहरी दीवारों पर क्यूआर कोड लगाए जाएंगे। जब कचरा संग्रह वाहन किसी घर से कचरा उठाएगा, तो कंपनी का कर्मचारी क्यूआर कोड को स्कैन करेगा, जिससे संबंधित परिवार को एक स्वचालित संदेश प्राप्त होगा कि कचरा उठाया गया है या नहीं। निवासी "हाँ" या "नहीं" का विकल्प चुनकर अपनी प्रतिक्रिया दे सकते हैं।

यदि कचरा नहीं उठाया गया हो, तो शिकायत स्वतः नगर निगम कार्यालय में स्थापित कंपनी के पोर्टल पर दर्ज हो जाएगी और दोबारा वाहन भेजकर कचरा उठाया जाएगा। निवासी स्वयं भी क्यूआर कोड स्कैन कर शिकायत दर्ज करा सकते हैं। इस पारदर्शी एवं तकनीक आधारित व्यवस्था से 100 प्रतिशत कचरा संग्रह सुनिश्चित होगा।

इस अवसर पर आयुक्त श्री बिक्रमजीत सिंह शेरगिल ने कहा कि डोर-टू-डोर कचरा संग्रह करना कंपनी की जिम्मेदारी है। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी घर को कचरा संग्रह के लिए कंपनी के कर्मचारियों को नकद भुगतान नहीं करना चाहिए, क्योंकि सभी भुगतान केवल ऑनलाइन माध्यम से ही किए जाएंगे। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि यदि किसी कारणवश कचरा उठाने में अस्थायी अंतर हो, तब भी सड़कों एवं गलियों में कचरा न फेंकें, क्योंकि शहर को स्वच्छ, हरित एवं कचरा मुक्त रखना नागरिकों एवं नगर निगम दोनों की सामूहिक जिम्मेदारी है।

आयुक्त ने आगे बताया कि वार्ड नंबर 4 को नोडल वार्ड के रूप में चुना गया है तथा क्यूआर कोड लगाने का कार्य आनंद एवेन्यू से प्रारंभ किया गया है। पहले चरण में पूरे वार्ड को कवर किया जाएगा, जिसके बाद यह प्रणाली शहर के सभी 84 वार्डों में लागू की जाएगी। उन्होंने विश्वास जताया कि शीघ्र ही शहर में शत-प्रतिशत कचरा संग्रह सुनिश्चित किया जाएगा तथा स्वच्छता से संबंधित सभी जन शिकायतों का समाधान इस प्रणाली के माध्यम से किया जाएगा।

इस अवसर पर अतिरिक्त आयुक्त श्री सुरिंदर सिंह, स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. योगेश अरोड़ा, सीएसओ श्री मलकियत सिंह तथा कार्यदायी कंपनी के अधिकारी भी उपस्थित रहे।

मेयर एवं कमिश्नर द्वारा अत्याधुनिक वैक्यूम आधारित लिटर पिकिंग एवं डस्ट ब्लोइंग मशीन का उद्घाटन

अमृतसर, 07 जनवरी (साहिल बेरी)

अमृतसर शहर को स्वच्छ, सुंदर एवं कचरा-मुक्त बनाने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए आज मेयर श्री जतिंदर सिंह भाटिया एवं नगर निगम अमृतसर के कमिश्नर श्री बिक्रमजीत सिंह शेरगिल द्वारा कंपनी बाग में अत्याधुनिक वैक्यूम आधारित लिटर पिकिंग एवं ड्रिफ्ट आधारित डस्ट ब्लोइंग मशीन का उद्घाटन किया गया।

यह आधुनिक मशीन सड़कों के किनारों से कूड़ा-कचरा, सूखे पत्ते, प्लास्टिक की थैलियां एवं अन्य छोटे कचरे को वैक्यूम तकनीक के माध्यम स `吸` कर साफ करने में सक्षम होगी। इससे सड़कों की सफाई अधिक तेज, प्रभावी एवं पर्यावरण अनुकूल बनेगी।

इस अवसर पर मेयर श्री जतिंदर सिंह भाटिया ने कहा कि नगर निगम अमृतसर शहर को स्वच्छ, हरा-भरा एवं कचरा-मुक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि हाल ही में नगर निगम द्वारा आरआरआर कंपनी को कचरा संग्रहण एवं उसके परिवहन का ठेका दिया गया है, जिसके अंतर्गत नए कचरा संग्रहण वाहन सेवा में लगाए गए हैं तथा भविष्य में उनकी संख्या और बढ़ाई जाएगी।

उन्होंने कहा कि यद्यपि सफाई कर्मचारी एवं कचरा संग्रहण वाहन प्रतिदिन सड़कों से कचरा उठाते हैं, फिर भी कुछ लोग सड़कों के किनारे कचरा फेंक देते हैं। इस समस्या के समाधान हेतु दो अत्याधुनिक वैक्यूम आधारित लिटर पिकिंग मशीनें शुरू की गई हैं, जो सड़कों के किनारों को पूरी तरह साफ करने में सहायक होंगी। प्रारंभिक चरण में ये मशीनें व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्य करेंगी तथा आगामी चरण में और मशीनें भी शहर में तैनात की जाएंगी। उन्होंने कहा कि अत्याधुनिक मशीनरी के माध्यम से अमृतसर को वास्तविक अर्थों में स्मार्ट सिटी बनाया जाएगा।

इस अवसर पर कमिश्नर श्री बिक्रमजीत सिंह शेरगिल ने कहा कि स्वच्छ वातावरण प्रत्येक नागरिक का अधिकार है और नगर निगम शहर को कचरा-मुक्त बनाने के लिए पूरी निष्ठा से कार्य कर रहा है। उन्होंने शहरवासियों से अपील की कि वे सड़कों पर कचरा न फेंकें, क्योंकि इससे शहर की सुंदरता खराब होती है और पर्यटकों व समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इस अवसर पर अतिरिक्त आयुक्त श्री सुरिंदर सिंह, चिकित्सा अधिकारी स्वास्थ्य डॉ. योगेश अरोड़ा, सीएसओ श्री मलकीयत सिंह तथा आरआरआर कंपनी के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

सिंहभूम में एक हाथी ने एक परिवार के तीन समेत चार लोगों को मारा

सुप्रीम कोर्ट सारंडा को अभयारण्य बनाने पर गंभीर ,पर वे कौन हैं सफेदपोश जिनके कारण वनों का संरक्षण नही ?

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, सुप्रीम कोर्ट झारखंड के प. सिंहभूम जिले के जंगली क्षेत्र जिस सारंडा को बचाने हेतु अभयारण्य बनाने पर एडी चोटी एक कर कम कर रहा है वहीं लगातार अवैध तरीके से घटते वन क्षेत्र के कारण वन्यजीव हिंसक बनते जा रहे हैं । जिसका परिणाम घटना सामने आई है। जिले के गोईलकेरा प्रखंड के सोवां गांव में हंसता-खेलता एक परिवार सोमवार रात कुछ ही देर में उजड़ गया। यहां एक हाथी ने कुचलकर 6 लोगों को मार डाला। बताया जा रहा है कि कुंदरा बहंदा अपनी पत्नी और तीन बेटी और एक बेटा के साथ झोपड़ी में सो रहा था।तभी हाथी ने हमला कर कुंदरा और उसकी बेटी कोदमा, सामु को मार डाला। जबकि, उसकी पत्नी ने दूधमुंही बच्ची संग भाग कर जान बचाई। वहीं, एक बेटी गंभीर रूप से घायल है।

झुंड से बिछड़े दंतैल हाथी पिछले पांच दिनों में दस लोगों की जान ले चुका है, लेकिन वन विभाग उसे जंगल में खदेड़ने में अबतक कोई ठोस कदम नहीं उठा पाया है। इससे ग्रामीणों में वन विभाग के खिलाफ आक्रोश है।

हाथी को उग्र होता देख उसे खदेड़ने के लिए वन विभाग ने प. बंगाल और गुजरात से टीम बुलायी है। टीम दंतैल हाथी को जंगल में खदेड़ने के लिए जुटी हुई है। वहीं, पिछले पांच दिनों से लगातार हाथी के हमले में लोगों की हो रही मौत से लोगों में वन विभाग के प्रति गुस्सा भी देखा जा रहा है।

एक हाथी द्वारा चाईबासा, टोंटो और गोईलकेरा के इलाके में कई लोगों को मौत के घाट उतारे जाने के बाद वन विभाग हाथी को घने जंगलों में ले जाने दिशा में कार्य कर रहा है। इस कार्य के लिए जिले के सभी वन प्रमंडलों के क्यूआरटी को लगाया गया है। इसके साथ-साथ गुजरात से वन तारा की टीम से भी संपर्क करकर उन्हें सहयोग के लिए बुलाया गया है। यह जानकारी आरसीसीएफ स्मिता पंकज ने दी।उन्होंने बताया कि जो भी मौतें हुई हैं, उन सभी को मुआवजा दिया जाएगा। आरसीसीएफ ने मंगलवार को वन विभाग के अधिकारियों के साथ स्थिति का जायजा लिया। अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श के बाद बातचीत के क्रम में उन्होंने बताया कि कोल्हान वन प्रमंडल क्षेत्र में एक अकेला हाथी घूम रहा है, जो बीते रात तीन लोगों को मार चुका है, जो काफी दुखद घटना है। मौके पर वन संरक्षक सबा आलम अंसारी, डीएफओ कोल्हान कुलदीप मीणा, डीएफओ पोड़ाहाट नीतीश कुमार, प्रशिक्षु डीएफओ सारंडा अनुराधा मिश्रा उपस्थित थीं।एक माह में 14 की गयी जान ।जिले में गत एक माह हाथी के हमले से 14 लोगों की जान जा चुकी है। वहीं, कई ऐसे भी मृतक हैं, जिनका आंकड़ा वन विभाग के पास भी नहीं है।

1. 5 दिसम्बर 2025: आनंदपुर के रुंधी में 55 वर्षीय सैम लुगुन की मौत

2.6 दिसम्बर 2025: कुड़ना में 65 वर्षीय कुंवारी बारला की मौत

3.19 दिसम्बरः मनोहरपुर के गिडुंग में लक्ष्मण बिरगम की मौत

4. 20 दिसम्बर 2025: जराईकेला के तैंतई गांव में चंदन जोजो की मौत

5. 3 जनवरी 2026: गोइलकेरा के रुकूंबुरू में रेंगाकायम नामक व्यक्ति की मौत

6. 4 जनवरी 2026: गोइलकेरा की कितापि गांव में चंपा कुई नामक महिला की मौत

7. 5 जनवरी 2026: गोइलकेरा के केन्दोकोचा गांव में 56 वर्षीय जोंगा कुई की मौत

8. 6 जनवरी 2026: गोइलकेरा के सोवां गांव में कुंदरा बहांद, उसके पुत्र कोदमा बहांद व 8 माह की पुत्री सामू की मौत

9. 6 जनवरी 2026: टोटो प्रखंड के कुलसुता गांव में जग मोहन सवैयां।इन हाथियों के शिकार बने हैं । सच तो यह है कि सारंडा जंगल की सुरक्षा ठीक ढंग से नहीं हो पा रही है अन्यथा ये हाथी इस कदर नहीं भटकते , विवश होकर लोगों की जान नहीं लेते । अगर सारंडा के अंदर हजारों एकड़ अफीम की खेती हो रही थी तो उसे करवाने वाला कौन था ? उसका अन्तर्राष्ट्रीय बाजार तक लेजाकर बेचने वाला कौन था ? क्या वन विभाग इन फसलों से अनजान अथवा विपणन कारियों से वाकिफ नहीं था ? हाथी क्यों गांव के तरफ - क्या आज वनों की उजाड़ नहीं हो रही है ? अनेक प्रश्न आज उठता है जब हाथी लोगों के जीवन लेने पर उतारू हो जाते है।

टीचर्स ऑफ बिहार: बिहार के शिक्षकों एवं छात्रों के लिए सशक्त शैक्षणिक मंच

परिवहन विशेष न्यूज

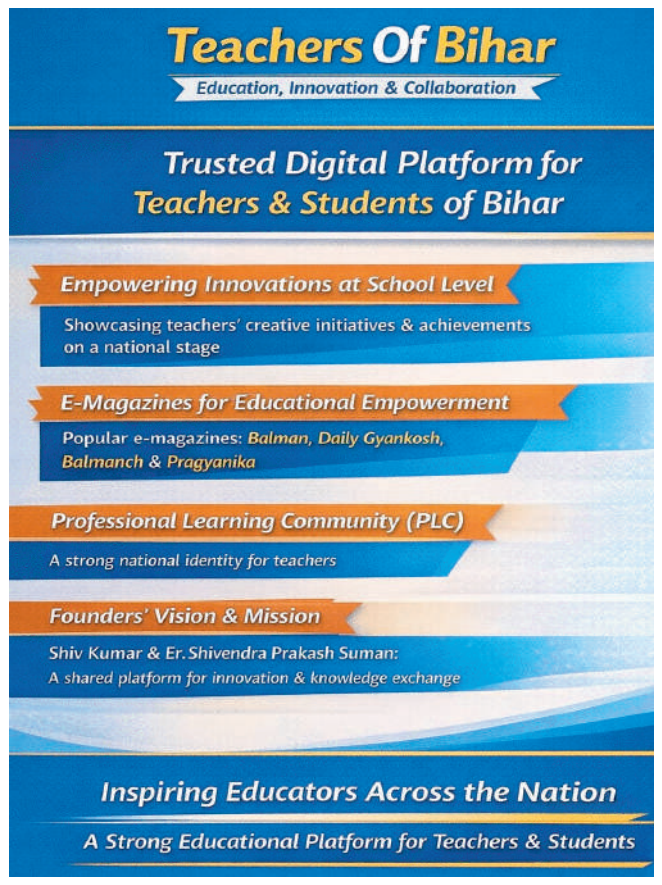

पटना। टीचर्स ऑफ बिहार आज बिहार के शिक्षकों एवं छात्रों के लिए एक उपयोगी, प्रभावी और सशक्त शैक्षणिक मंच के रूप में अपनी अलग पहचान बना चुका है। यह मंच विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से शिक्षकों द्वारा विद्यालय स्तर पर किए जा रहे नवाचारों, शैक्षणिक गतिविधियों और रचनात्मक प्रयासों को न केवल आगे बढ़ा रहा है, बल्कि उनकी पहचान को राज्य से निकलकर राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने का कार्य भी कर रहा है।

टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा शिक्षकों एवं छात्रों के शैक्षणिक विकास को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर विभिन्न प्रकार की ई-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जा रहा है। इन ई-पत्रिकाओं के माध्यम से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा रहा है। मंच की प्रमुख ई-पत्रिकाओं में बालमन, दैनिक ज्ञानकोश, बालमंच, पद्यपंकज, गद्यगुंजन एवं प्रज्ञानिका शामिल हैं, जो शिक्षकों के साथ-साथ छात्रों के लिए भी अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो रही हैं।

एक प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के रूप में टीचर्स ऑफ बिहार ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सशक्त पहचान स्थापित की है। यह मंच शिक्षकों को आपसी संवाद, अनुभवों के आदान-प्रदान एवं सतत व्यावसायिक विकास का अवसर प्रदान कर रहा है।

टीचर्स ऑफ बिहार के संस्थापक शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने बताया कि इस मंच का उद्देश्य शिक्षकों और छात्रों को एक साझा डिजिटल प्लेटफार्म उपलब्ध कराना है, जहां नवाचार, ज्ञान और अनुभवों का आदान-प्रदान हो सके।

वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने संयुक्त रूप से कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर शिक्षकों की सकारात्मक पहलों को प्रोत्साहित कर रहा है और शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता सुधार की दिशा में सार्थक प्रयास कर रहा है।

इवेंट लीडर केशव कुमार ने बताया कि मंच के माध्यम से आयोजित विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रम, वेबिनार एवं ऑनलाइन गतिविधियां शिक्षकों और छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हो रही हैं।

कुल मिलाकर यह टीचर्स ऑफ बिहार बिहार ही नहीं, बल्कि देशभर में शिक्षकों एवं छात्रों के लिए एक प्रेरणादायी और मार्गदर्शक शैक्षणिक मंच के रूप में उभर रहा है।

झारखंड की वैश्विक उपस्थिति को लेकर मुख्यमंत्री ऑक्सफोर्ड , वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम होते हुए दावोस जायेंगे

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, अपने राज्य की वैश्विक स्तर पर मजबूती देने की दिशा में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एक ऐतिहासिक पहल करने जा रहे हैं। ब्रिटेन प्रवास के दौरान वे ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के प्रतिष्ठित Blavatnik School of Government में विशेष व्याख्यान देंगे और प्रश्नोत्तर सत्र में भाग लेंगे। यह उपलब्धि इसलिए भी खास है, क्योंकि वे इस संस्थान को संबोधित करने वाले भारत के पहले मुख्यमंत्री होंगे। पब्लिक पॉलिसी और गवर्नेंस के क्षेत्र में ब्लावाटिनिक स्कूल दुनिया के अग्रणी संस्थानों में गिना जाता है।

इस दौरे के दौरान Jharkhand Global Presence को नई दिशा देते हुए ज्ञान साझा करने, नवाचार आधारित सहयोग, शिक्षा और कौशल विकास साझेदारी पर व्यापक चर्चा होगी। साथ ही झारखंड और यूनाइटेड किंगडम के बीच दीर्घकालिक सहयोग के नए अवसरों को भी तलाशा जाएगा। ऑक्सफोर्ड में मुख्यमंत्री का संबोधन राज्य की विकास नीति, सामाजिक न्याय मॉडल और प्रशासनिक नवाचारों को वैश्विक शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं के सामने प्रस्तुत करेगा।

इसी कड़ी में जनवरी 2026 में झारखंड सरकार पहली बार World Economic Forum (WEF) की वार्षिक बैठक में आधिकारिक रूप से भाग लेगी। दावोस में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में राज्य का प्रतिनिधिमंडल वैश्विक नेताओं, निवेशकों और नीति विशेषज्ञों से संवाद करेगा। यह सहभागिता निवेश, उद्योग और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिहाज से ऐतिहासिक मानी जा रही है। झारखंड वैश्विक उपस्थिति को मजबूत करने के लिए दावोस सहभागिता से जुड़ी जानकारी हेतु आधिकारिक वेबसाइट jharkhandatdavos.co.in भी लॉन्च की गई है। इसके अलावा, सभी अपडेट राज्य सरकार के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल्स—एक्स, फेसबुक और इंस्टाग्राम—पर साझा किए जाएंगे।

झारखंड राज्य गठन के 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर यह वैश्विक उपस्थिति राज्य के लिए एक नए युग की शुरुआत का संकेत देती है और अंतरराष्ट्रीय मंच पर इसकी पहचान को और सशक्त बनाती है।

आशा है नव साल की, सुखद बने पहचान।।

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, एसटी-एससी केस में कांग्रेस के स्वास्थ्य मंत्री सह जामताड़ा विधायक डॉ इरफान अंसारी की मंगलवार को अदालत में पेशी हुई. पेशी अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, तृतीय राजेश सिन्हा के न्यायालय में पेशी हुई. केस में चार्जफ्रेम होना था. अब केस में गवाही होना है. अगली तिथि 5 फरवरी को निर्धारित की गई. मंत्री डॉ अंसारी की पेशी एसटी-एसी केस 06/2023 में हुई. मामला दो मार्च 2023 में दर्ज हुई थी.

मंत्री डॉ अंसारी के केस में पैरवी कर रहे अधिवक्ता राजा खान ने बताया कि जामताड़ा जिले के नारायणपुर थाना क्षेत्र में हुए जमीन विवाद में मंत्री डॉ इरफान अंसारी पर एसटी-एससी केस दर्ज हुई थी.. क्षेत्र की सुशीला देवी नामक महिला ने किसी अन्य से हुए जमीन विवाद में मंत्री डॉ अंसारी पर जाति सूचक संबोधन का आरोप लगायी थी.

कोर्ट में पेशी के दौरान पहुंचे स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने कहा कि मनरेगा में बदलाव कांग्रेस बर्दाश्त नहीं करेगी. जिस प्रकार भाजपा ने किसानों, मजदूरों और उनके अस्मिता के साथ खिलवाड़ कर रही है. भाजपा के कारण किसान और मजदूर सड़क पर आ गये है. उन्होंने कहा कि नई योजना आप दे नहीं सकते है और पुरानी योजना नाम काट रहे है. नाम बदलने के पीछे बड़ी साजिश है. आप 60-40 कर दे रहे है.

झारखंड, बंगाल गरीब राज्य है. कर्नाटक में कांग्रेस की सरकार है. वहां आप 60-40 कर रहे है. जिस गरीब को कांग्रेस पार्टी ने खड़ा किया, वैसे लोगों की हत्या की जा रही है. देश में कोई भी वर्ग सुरक्षित नहीं है. आदिवासी-किसान पर जुल्म हुआ. मणिपुर में हजारों महिलाओं के साथ अत्याचार हुआ. दुव्यर्वहार हुआ, इज्जत लूट लिया गया. लेकिन बोलने वाला कोई नहीं है. मंत्री ने कहा कि एनआरसी, सीए, तीन तलाक, वक्फ बोर्ड में संशोधन कर हमारे अधिकारों का हनन किया जा रहा है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023